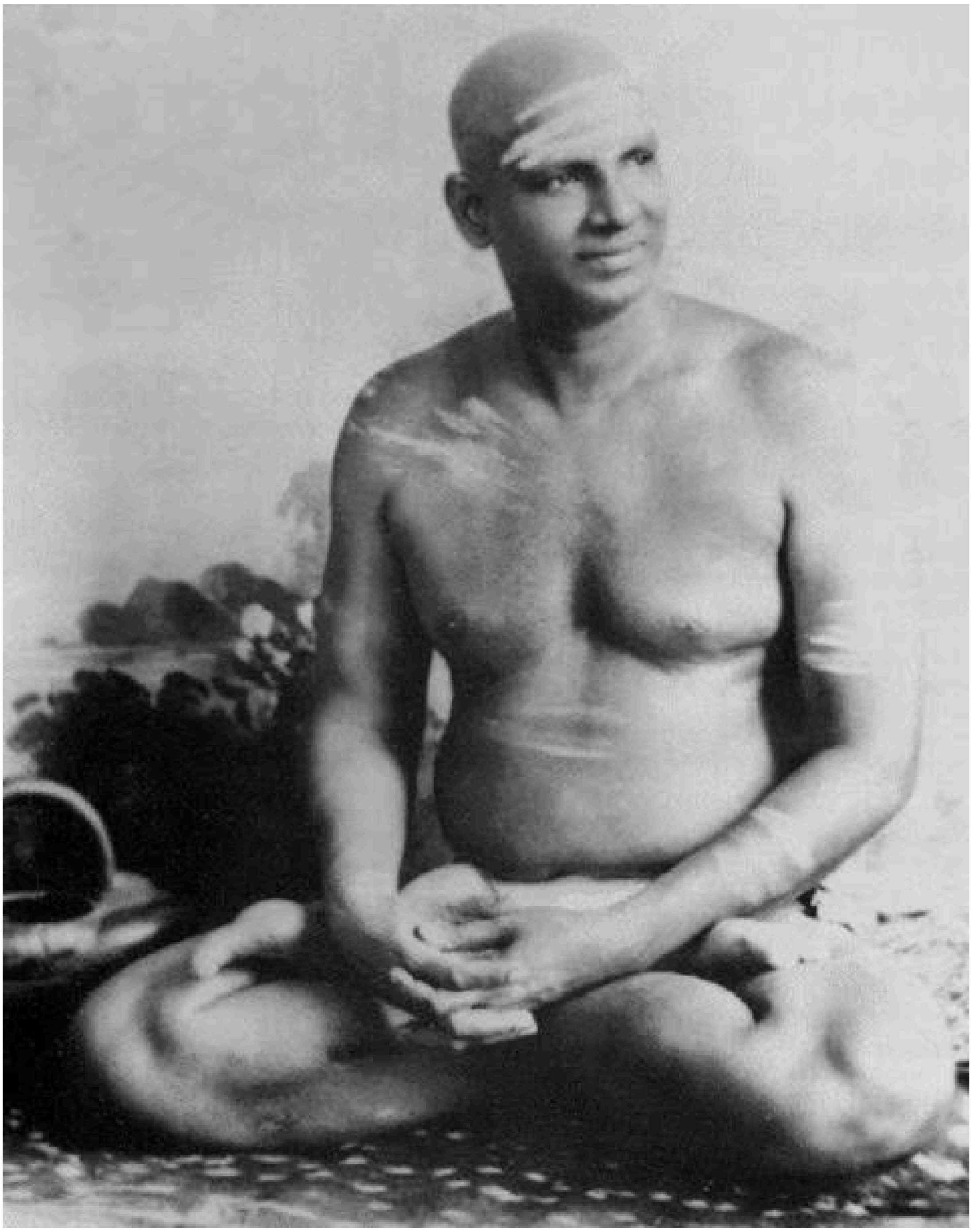
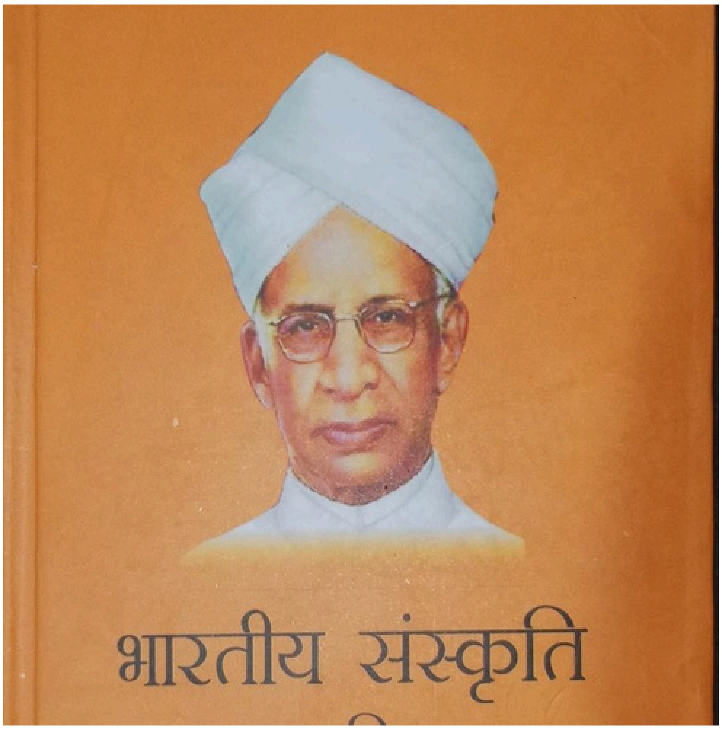



भारतीय संस्कृति

अनिुाद
श्रीरामनाथ 'सुमन'

रु. 190

ISBN: 9788170282167
संस्करण :2022 डॉ. एस. गोपाल

BHARTIYA SANSKRITI KUCHH VICHAR(Indian Culture)
by Dr. S. Radhakrishan
(Hindi edition of The PresentCrisisof Faith)

मुद्रक शििि िक्तत वरंटंस,स ददल्ली

राजपाल एण्ड सन्ज़

1590, मदरसा रोड ,क़श्मीरी गेटे दद्,ल्ली -110006
फोन : 011-23869812, 23865483, 23867791

website: www.rajpalpublishing.com
e-mail: sales@rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

भारतीय संस्कृतत कुछ विचार

डॉ० राधाकृष्णन् ्

राजपाल

आमुख

मानि-मन में सभ्य और विकशसत के साथ ही आददम, पुरातन एिं पाशिु भी उपक्स्थत रहता है। हमारे अन्दर जो जड़ता और बुराई है, उसके विरुद्ध हमें संघर् सजारी रखना चादहए। हमारे समस्त शत्रु हमारे अन्दर ही हैं। जो िृवृिया ाँहमें चररत्रभ्रष्टता के शलए बहकाती हैं, जो आग हमारे अन्दर जलती है, िह सब अज्ञान एिं त्रुदुट के उस अन्तःक्षेत्र सेही उठती हैं, क्जसमें हम रहते ेहैं। मानि की मदहमा इस िात में नहीं है कक िह कभी गगरे नहीं, बक्ल्क इस बात में है कक हर िार िह गगरनेपर उठ खड़ा हो।

आत्मविजय लालसा से िाक्न्त तक पहुुाँचने का ही माग सहै। पाप करने एिं दुुःख भोगने के जीिन की अपेक्षा एक महिर जीिन है। ककसी मनुष्य की साधुतुा की मात्रा का परीक्षण इस बात से होता है कक िह ककस सीमा तक अपनी रकृतत की दुिलसताओं पर रभुत् पाने में समथ सहुुआ है। धम सजीिन से बाहर ले जानेका माग स नहींहै, अवपतु जीिन की ओर ले जानेिाला माग सहै।

सभी धमों में जीिन पर बल देनेिाले एिं जीिन का तनर्ेध करने िाले मनोिगों का परस्पर-संघर् सहै। इन दो मनोिगों की अन्तःकिया ने िारंिार भारतीय गचन्तन-धारा को नूतन रूप ददया है और अविश्रान्त आध्याक्त्मक अन्र्िर्ण में भारत को अग्रसर ककया है।

-राधाकृष्णन् ्

विषय - क्रम

1. तिमसान धम-ससंकट

यह कहना कक मानि जातत आज इततहास के एक महिम संकट के बीच से गुज़र रही है, एक सामान्य सत्य है। हमारी यह संकटापन्न क्स्थतत मानिात्मा के साथ विज्ञान और रौद्योगगकी की आश्चयजसनक गतत का समञ्जन न होनेके कारण उत्पन्न हुई है। इस तथ्य के होतेहुए भी कक महान् ्िैज्ञातनक आविष्कारों में हमें रकृतत की दासता से मुतत कर ददया है, हम एक रकार के मनोरोग से, एक रकार के सांस्कृततक विघटन से पीडड़त ददखाई पड़ते ेहैं। विज्ञान ने हमें पीसती हुई गरीी के पंजेसे कुछ अंततक छुड़ा ददया है, और ाारीररक िेदना के उत्पीड़नों का िमन कर ददया है। कफर भी हम एक रकार के आन्तररक एकाकीपन से पीडड़त हैं। समस्त विकास िेदना से आलोडड़त होता है, सम्पूण ससंमिण दु:खाक्न्तका का क्षेते्र है। परन्तु यदद हमें जीवित रहना है तो आज क्जस संमिण को कियाक्न्ति करना है, िह एक ऐसी नैततक एिं आध्याक्त्मक ााक्न्त है क्जसकी गोद में सम्पूण स विश् आ जाता है।

हमनेमानि जातत के इततहास में दूसूरी ााक्न्तयााँ भी देखी हैं; जब कक हमने आग जलाने की विगध का आविष्कार ककया, जब हमने पदहये का अनिेर्ण ककया, जब हमनिेाष्प का रयोग ककया, जब हमने विद्युत् ्का आविष्कार ककया। ककन्तु आणविक ऊजा सके विकास के कारण हुई ितमसान ााक्न्त की तुलना में ये सब अपेक्षाकृत महत्त्िहीन हो गई हैं। आणविक ऊजा सके आविष्कार नेन केिल मानिीय रगतत की महती सम्भािनाओंको उपक्स्थत कर ददया है अवपतु अव्यिदहत एिं सम्पूण सविध्िंस के खतरे को भी सामने ला ददया है। यह पितसों को दहला सकती है; सुरंगें खोद सकती है; बन्दरगाहों का तनमाणस कर सकती है, खाद्योत्पादन में िृद्ूगध कर सकती है; संसार के सम्पन्न एिं भूखे लोगों के बीच की खाई को पाट सकती है और कुछ ऐसेरमुख कारणों को भी दूरू कर सकती है क्जनको लेकेर अब तक युद्ध होते ेरहे हैं, या कफर यह विश् की मानि जाततयों को मृतूयु और विनाि दे सकती है। आधुतुनक विज्ञान ने मनुष्य की बुराई करने तथा बुराई रोकने दोनों रकार की िक्क्तयों को बढा ददया है। मानिता के सामने आज तनयतत की चुनौती उपक्स्थत है। हम इस चुनौती का सामना कर सकते हैंऔर एक ऐसी अन्तराष्सरीय व्यिस्था का तनमाणस कर सकते हैं क्जसमें सािदेसशिक सिा द्िारा रचाररत कानून के ाासन में समस्त सम्बद्ध राज्यों को विकास की स्ितन्त्रता राप्त हो, या कफर यह हो सकता है कक जो महती िक्क्त हमारे हाथ में है िह ािस्त्रसक्ज्जत दलों के द्िन्द्ि में हम सबको ही विनष्ट कर दे।

युद्ध का मूल कारण अगधकृत क्षेते्रों का लोभ नहीं, एक-दूसूरे के रतत भय एिं घृणा है। जब तक ये बने रहेंगे, े नौसन्तरण की ज़रा-सी भूल से, राडार-रणाली पर एक गलत छाया ददखाई पड़ने के कारण, एक तलान्त िैमातनक एक बीमार अफसर या ककसी दूसूरी घटना के कारण, युद्ध तछड़ जा सकता है। राष्रों के एक पररिार के रूप में रहकर, ााक्न्त एिं स्ितन्त्रता के बीच, एक-दूसूरे के साथ सहयोग करने के मानिता के लक्ष्य तथा इस तिमसान रणाली के बीच-क्जसने हमें विश् युद्ध ददए हैं, याक्न्त्रक समाज की ओर सािभसौम रगतत दी है और युयुत्सु भौततकिाद ददया है-एक संघर् सहै। भविष्य अन्तराष्सरीय सम्बन्धों के रतत हमारी िृवियों में तीव्र पररितनस

की मागाँ कर रहा है। यद्यवप हम समझते ेहैं कक अन्तराष्सरीय झगड़ों के तनबटारे के शलए सैतनक समाधान के विचार का त्याग करना जिश्यक है और मानि जातत के कल्याण के तनशमि हमें अपनी राष्ट्रीय तनष्ठाओंपर अंकुि रखने ेकी जिश्यकता है, कफर भी हमारे राजनीततक नेता िही पुरानी दुरुशभसक्न्धयों एिं धमककयों, सौदेबाज़ी और छल-छद्‌म को जारी रखे हुए हैं, मानो धनुर्-बाण, तोप-तलिार के जीण सअस्त्र–स्त्र अब भी विजयी होंगे।

सिा की जो राजनीतत अन्तरिासकीय सम्बन्धों की पारम्पररक रणाली का ध्रुि- शसद्धान्त रही है, अब भी चल रही है, यद्यवप उसने नाना रकार के छद्मिेि बना शलए हैं। आणविक युग में सिा की राजनीतत का ताककसक पररणाम जागततक आगधपत्य नहीं, िरन् ्जागततक नर-संहार होगा। यदद समर न भी हो तो स्ियं आणविक परीक्षण ही मानि-कल्याण के विनिाक हैं। हमारे कुकृत्य ही मानि के सम्पूण सभविष्य को नष्ट कर देंगे। हमको यह स्िीकार करना ही होगा कक हम सैतनक पथ के अक्न्तम बबन्दु ुपर आ पहुँचे हैं। जब काक्ल्नि ने सिोतस को जलाया था तब कास्टेलो ने कहा था- "ककसी आदमी को जलाना धम सका रक्षण नहीं, बक्ल्क मनुष्य की हत्या है।" हम अपनेचतुददसक् के ित्रुओं से अपनी सुरक्षा के शलए िस्त्रों का तनमाणस कर रहे हैं ककन्तु ित्रु तो हमारे ही अन्दर है।

राष्िाद अब भी एक बड़ी ताकत है। उच्छेदक आयामों िाले ेविश्ियुद्ध के बाद राष्र-संघं (लीग ऑफ नेिंस) का जन्म हुआ। जब तोपें पुनः दहाड़ने लगीं ंतो संघ समाप्त हो गया। जब द्वितीय विश्ि युद्ध के पश्चात् ् विजय हुई तो संयुतत राष्र के चाटसर (िासन पत्र) पर हस्ताक्षर हुए। अभी तक िह जीवित सत्य नहींबन पाया है। संयुतत राष्र की बैठकों में भी राष्ट्रीय रततस्पधाएसाँचलती हैं। यद्यवप िह अपने शसद्धान्त-समूह एिं मूल्य-व्यिस्था द्िारा, समस्त मानिता की िक्ततयों एिं दहतों के अनुकूल, एक स्ितन्त्र एिं िाक्न्तमय विश्ि-[illegible] उसके काय समें संघर्षील सिा-समूहों द्िारा बाधा पड़ती है। सददयों से कोदट-कोदट मानिों का पथ-दिनस इस नारे से होता रहा है- 'हमारा दि, सही हो या गलत।[1] जो लोग राष्रसंघ संस्थान का तनरीक्षण करते ेहैं और राष्ट्रीय भिा-रिणता और िस्त्रीकरण को दौड़ पर ध्यान देते ेहैं िे गम्भीर रूप से तनरिा हो जाते ेहैंऔर अनुभि करते ेहैं कक हमारी सभ्यता गत सके कगार पर खड़ी है। िे कहते ेहैं कक इस विचार में कुछ भी असाधारणता नहीं है, कक कला एिं विज्ञान, सादहत्य एिं दिनस-सम्बन्धी अपनी सम्पूण सआश्चयजसनक उपलक्धधयों के साथ भी, हमारी सभ्यता उसी रकार विलुप्त हो जायगी क्जस रकार कक अतीत में और भी ककतनी ही सभ्यताए ंाँनष्ट हो गई हैं। एतमाइरोशसस के संयमिादी (स्टोइक) शसद्धान्त में कहा गया है कक संसार अक्नन से नष्ट हो जायगा, स्लेटे पुंछकर साफ-सुथरी हो जाएगी और एक निीन आरम्भ होगा।' अनेक रमुख धमिसास्त्री हमें विश्ि के समाक्प्त- सम्बन्धी धमिसास्त्रीय ििरणों की याद ददलाते ेरहते ेहैं और कहतेहैंकक यह भगिद्-इच्छा के ही अन्तगतस है कक मानि-जातत समाप्त हो जाए।

---

[1] 308 ई० पू० एथेंस में जीनो द्िारा स्थावपत एक सम्प्रदाय के दितसनक।

दुभुानसयिि जो लोग िैज्ञातनकमना हैं िे भी मानिीय घटनाओंकी अतनियतसा की बात करते ेहैं। हमें विश्िसि कराया जाता है कक आगथकस एिं राजनीततक िक्ततयों का दबिा संसार को ऐसी तबाही की ओर ले जा रहा है जैसी कक यूनानी दु:खाक्न्तका में तनममस तनयतत द्िारा सम्पन्न होती है। इततहास की धारा कारणों एिं पररणामों की एक ऐसी श्रृंखला है क्जसमें मानि अनुन्मोचनीय रूप से जकड़ा हुआ है। मानि सम्पूणतस: इततहास की दया पर तनभरस है। मानि की आिाओं, भयों और अपेक्षाओं का भविष्य पर कोई रभाि नहीं। कहा जाता है कक हम अपने से अगधक बलिती िक्ततयों की पकड़ में हैं। हमें बताया गया है कक बड़े-बड़ेमामलों में घटनाओंके भीतर उनके मन में, उससे कहीं ंअगधक होता है क्जतना उनके अशभनेताओंके मन में होता है। सामूदहक िातौन्माद (दहस्टीररया) कोदट-कोदट मानिों के जीिन को विनष्ट कर देता है। रकृततिाद की धारा मानि-राणणयों को साहस और पहल की ओर रेररत नहींकरती।

पौराणणक तनयततिाद (गथयौलाक्जकल डडटरशमतनज्म) व्यक्तत से उसकी अपनी महिा, ििैर्ता, छीन लेता है। ईश्िर ब्रह्माण्डीय गततविगध को अपनी योजना द्िारा ही उसके गन्तव्य तक पहुँचाता है। पुस्तक के अक्न्तम पृष्ठ पदहले सेही उसके रथम पृष्ठों में तनदहत हैं।

परन्तु जहा ाँसिनसिा के पैगस्बर मौजूद हैं, िहाँ आिा के रितता भी हैं, यद्यवप िे तनरािा के गत सपर ही आिा का महल बनाते ेहैं। िे कहते ेहैं कक हम अपनेअन्त:करण की खोज करके उसमें से इस अणुयुग में अपनी नैततक क्ज़म्मेदाररयों का पता लगा लें। कवियों, दाितसनकों और पैगम्बरों में मानिीय एकता और सनातन िाक्न्त की बाध्यकारी दृक्ष्ट शमलती है। राजनीततक नेताओंने भी इसे ेरमाणणत ककया है। टॉम पेन ने घोवर्त ककया है- "विश्ि ही मेरा दिे है।"

आधुतनक मानि की दुविधा यह है कक यद्यवप िह जीिन से तनराि है, ककन्तु मरना नहीं ंचाहता। जीवित रहने की यह मूलिृवि हमें आिा देती है। क्जस ित्रु से हमें लड़ना है, िह पूँजीिाद अथिा साम्यिाद नहींहै, िह हमारी अपनी ही बुराई है, हमारी आध्याक्त्मक अन्धता, सिा के रतत हमारी आसक्तत और रभुत्ि के शलए हमारी िासना है। 1945 ई० में एक तनरािािादी नृतृत्त्विज्ञानी ने कहा था कक बन्दर के हाथ में अणुबम जैसा अस्त्र देना सभ्यता के विनाि की गारण्टी करना है।

हम जानते ेहैं कक हमें अन्तराष्सरीय सम्बन्धों की एक नई बानगी के शलए रयत्न करना चादहए, ककन्तु जीिन के पारम्पररक मागों के दबाि और खींचतान के कारण हम यन्त्रशिगथल हो जातेह।ैं यदद भविष्य की रक्षा करनी है तो हमें अपनेको गूढ विश्िासों की इस तनद्रा से धकेलकर तनकालना होगा। राचीन परम्पराओं तथा निागत समाजि–शिष्य में सघर् सहै। समस्त जीिन ही पुरातन और नूतन के बीच सनातन द्िन्द्ि है। नायक बनी हुई िस्तुओं का नहीं, िरन् ्बनती हुई िस्तुओं का योद्धा है। क्जस राक्षस को मारना है िह तथातथ्य का राक्षस है। ित्रु ुसिा के स्थान पर है; िहींजाशलम है जो अपनी िक्तत और सिा का अपने दहत में उपयोग करता है।

राकृततक आत्महत्या के अनेक माग सहैंककन्तु मानि के जीवित बच रहने का एक ही रास्ता है। यह है तनष्ठा का, श्रद्धा का, धम सका माग सजो हमें आनििाली िस्तुओं के शलए िक्तमती आिा से रेररत करता है। माननीय विर्यों में कोई तनतान्त कारणत् नहींहुआ करता।

संघर् सहै चेतन अशभराय एिं अचेतन मनोिेग के बीच। मनुष्य भलाई-बुराई का, ज्ञान एिं मूढता का शमश्रण है। हमें स्ियं अपने से, दुबुलसता से, अपनी रकृतत में तनदहत भ्रष्टता से अपनी रक्षा करनी है। यह विश्ि पततत मानि का घर है, जहा ाँविेक का राज्य होना चादहए ककन्तु राज्य है िस्तुतः अविेके का। 'क्जस जानिर पर म ैंसिार था, उसके अततररतत और कोई जानिर मेरे साथ नहींथा।"[2] अपनेरयत्न से ही हम अपनेअन्दर के द्िन्द्ि को शमटा सकते हैं और अपनेजीिन से घृणापूण ससंिेगों को नष्ट कर सकते हैं तथा रेम और भाईचारे की भािना बढा सकते हैं। हमें उन राक्षसों से एकान्त में लड़ना ही होगा जो हमारी रगतत का विरोध करते ेहैं-खुद अपने ही बनाए हुए राक्षसों से। एक ऐसी नैततक ऊजा सकी निीन उपलक्धध की तीव्र आिश्यकता है जो समाज को एक नये ढाचोँमें ढालनेमें सहायक हो।

जो अनुिासन हमें बदलनेमें सहायता करता है, िही धम सहै। तछछला तकसनिाद कह सकता है कक विचार को ग्रहण कर हम संसार को उसकी बुराइयों से मुतत कर सकते हैं, सामान्य जीिन के अन्यायों एिं दुःखान्त दृश्यों को दूरू कर सकते हैं। ककन्तु माननीय सम्मान के नाम पर होनेिाली नैततक एिं आध्याक्त्मक िाक्न्त ही, मानि को आगथकस उत्पादन, रौद्योगगकीय संघटन, जाततगत भेदभाि तथा राष्रीय अहंभाि की मूततयसों के ऊपर रस्थावपत कर सकती है।

धम सजीिन के शलए अनािश्यक, असंगत नहीं ंहै। िह एक ऐसी पीढी को पथ-ददिस एिं ंसहायता दे सकता है जो सन्तोर् राप्त करने में अपनी असफलता पर परेिान है और इस समय रकाि के शलए भटक रही है। ईश्िर में जीिन्त तनष्ठा ही मानि को नैराश्य की इस पक्षाघातकाररणी भािना से उबरनेऔर अपेक्षाकृत कम अपूण स समाज का तनमाणस करने में समथ सहो सकती है।

ककन्तु लोगों के मन पर धम सका रभाि घटता जा रहा है। कुछ समय पूि स'टाइम' नाम की पबत्रका ने 18 से 29 िर् सकी आयु के 2000 हज़ार तरुण माननों के बीच एक सिेक्षण ककया था। इनमें से 19 रततित का कथन था कक 'िे बाइबबल में विश्िास रखतेहैं': 77 रततित ने स्िीकार ककया कक उन्होंनेउसे कभी नहींपढा। जो कुछ अमेररका के शलए सत्य है, िही, न्यूनागधक मात्रा में, दूसूरे राष्रों के लोगों के शलए भी सत्य है।

सािदेसशिक बनतेजा रहे विज्ञान एिं रौद्योगगकी के रभाि-तलेधम समसीहाई भौततकिाद में बदलता जा रहा है। जो लोग इस बात को नहींमानते,े िे भी ककसी धम सकी आिश्यकता का अनुभि नहींकरते। विराट अज्ञात, जो ईश्िर के रहस्य को तछपाए हुए थे, अब ज्ञात होता जा रहा है। ज्यों-ज्यों रकृतत पर से हमारी तनभरसता कम होती

---

[2] 308 ई० पू० एथेंस में जीनो द्िारा स्थावपत एक सम्प्रदाय के दाितसनक।

जाती है, धमतसनष्ठा की आिश्यकता कम होती जाती है। कफर अभ्रान्त धम सएिं शसद्धान्त मनुष्य के मक्स्तष्क की बेडड़या ाँबन जाते ेहैं और धाशमकस िोध को गतत में बाधक होते ेहैं।

नीन समाज-व्यिस्था विशभन्न सामाक्जक आिश्यकताओं पर जोर देती है। धमो का कहना चाहे जो हो, उन्होंनेकल्पना ककए जा सकनेिाले सब रकार के अपराधों को क्षमा रदान की है, बक्ल्क इन्हें स्ियं भी ककया-कराया है। धाशमकस जीिन और नैततक अन्याय दोनों साथ-साथ नहींचल सकते।

धम सकी अपिजकस, असदहष्णु ुरकृतत की पररणतत उत्पीड़न एिं नाक्स्तक-उच्छेदन और धाशमकस युद्धों में होती है। यह विशभन्न धमों के अनुयातययों के बीच विद्िेष, घृणा तथा अनुदारता को खुला खेलने ेके शलए छोड़ देती है। जो सि-सअलंघ्य है उसकी अिधारणा के माग समें िैशभन्न्य होनेके कारण एक-दूसूरे की हत्या करने की आिश्यकता नहींहै।

धाशमकस विश्िास के हास के मुख्य कारण तनम्नशलणखत बातों में खोजे ेजा सकतेहैं-विज्ञान द्िारा बढाई हुई संियिृवि, सामाक्जक समस्याओंको लेकर धाशमकस िृवि की होनेिाली तनंदा, तथा धम सकी अपिजकस, असदहष्णु ुरकृतत, जो आने िाले ेविश्ि-ऐतय की विरोगधनी है। या तो धम सअपनेको दृढतर नींि पर खड़ा करे या कफर आज की गम्भीरतम एिं ंमहिम मानिीय आिश्यकता के सामनेअपनी अपयाप्सतता स्िीकार करे। हम भीतत एिं आिंका की मनोरचनाओं अथिा नैराश्य एिं अनक्स्तत् की दातसनक विचारधाराओं से संतुष्ट नहींहो सकते। धमों को अपनेअिििेके, रततकियािादी सामाक्जक रकृतत तथा रान्तीयता से मुतत होनेकी आिश्यकता है।

बहुत-से लोगों के शलए ऐसे विश्िास को ग्रहण कर लेना सम्भि नहींहोता जो तकसम्मत न हो। स्ितन्त्र अनुसन्धान की िृवि के बीच ही िैज्ञातनक विचार रगतत करते ेहैं। और स्ितन्त्र अनुसन्धान की यह िृवि आगधदैविक मतिादी धमों की नींि को दहला देती है। इसने कोदट-कोदट ऐसेराणणयों के शलए धम सको अराकृततक-अस्िाभाविक बना ददया है क्जनके पुरखों के शलए िह एक समय स्िाभाविक था। तनक्ष्िय धम-स तनष्ठा का स्थान अब आलोचनापरक पूछताछ ने ले शलया है।

विज्ञान के रभाि से रत्यक्षिाद का एक शसद्धान्त चल तनकला है जो दिनस और धम सको तनरथकस कहकर हटा देता है। ताककसक रत्यक्षिाद का मत है कक एक रमेय या रस्थापना केिल तभी साथकस है जब िह रमाणणत की जा सके। यह रश्न कक तया ईश्िर की क्स्थतत है, पयिेसक्षण द्िारा रमाणणत नहींककया जा सकता। रमाणीकरण का शसद्धान्त ही स्ियंशसद्गध सेबहुत दूरू है। तनस्सन्देह िह आत्मविरोधी है तयोंकक कोई ऐसा साधन नहींहै क्जससे ेउसे ेस्ियं भी पयिेसक्षण द्िारा रभावित ककया जा सके।

जब मनुष्यों को विमि सद्िारा, गहन गचन्तन द्िारा अपनेअक्स्तत् की चेतना का बोध होता है तब हमें दिनस की उपलक्धध होती है। हममें से रत्येक के पास एक सत् ्या असत् ्दिनस होता है। जहा ाँभी मूल्य के स्तर

अथिा समीक्षा के मानदण्ड का रयोग हो, समणझए कक िहींदिनस है। ि लोग भी जो दिनस को फालतू या तनरथकस समझते ंहैं, िैसा दितसनक रंग के फलस्िरूप ही करते ंहैं।

जब लोग संसार की दितसनक व्याख्या करने का रयत्न करते ंहैं तो ि भौततकिाद की ओर आकवर्तस होते ं हैं। बरॅण्ड रसेल ने हमें बताया है कक रारक्म्भक ददनों में स्िगीय रोफेसर जी० ई० मूर ने एक तनबन्ध शलखा था क्जसकी िुरुआत इस रकार हुई थी : 'आरम्भ में पदाथ सही था, पदाथ से िैतान का जन्म हुआ और िैतान ने ईश्िर को जन्म ददया।' ब्रह्माण्ड के इततहास की रूपरेखा बतानेके बाद तनबन्ध इस रूप में समाप्त हुआ था 'और ईश्िर मर गया; उसके बाद िैतान मरा और पदाथ सकफर िेर् रह गया।' 'अिात सही राजा है, क्जसने क्ज़यस (ग्रीक पुराण का इन्द्र) को तनकाल बाहर ककया।'

ब्रह्माण्ड की रकिया के िैज्ञातनक अध्ययन से हमारे आगे ंजगत् ्के हृदय का एक रहस्य उद्घादटत होता है। रायल सोसाइटी के आरक्म्भक ददनों में उससे ंसम्बद्ध लोगों का विश्िास था कक 'गगन-मण्डल ईश्िर की मदहमा की घोर्णा करता है।' जान िील ने उस 'तनयमानुकूल एिं धाशमकस आनन्द' के विर्य में शलखा, 'जो हमारे इस दृश्यमान जगत् ्के आश्चयजसनक एिं अद्भुत ढाचेँ ंका दिनस कर राप्त होता है।' आइज़क न्यूटन के शलए अन्तररक्ष एक ईश्िरीय चमत्कार था।

महान् ्स्रष्टा की इस 'चमत्कारपूण सरचना' नेओल्डेनबग सको विस्मय-विमूढ कर ददया था। महान् ् रकृततिादी जॉन रे ने अपनी पुस्तक का नाम रखा-'सृकूष्ट-काय समें व्यतत ईश्िर की रज्ञा ।'

धमतसनष्ठा तकस-बुद्गध सेसम्बद्ध होनी चादहए। तकसबुद्गध और धम समें कोई संघर् सनहींहो सकता। मूढाग्रह के रततकूल धमतसनष्ठा (फेथ) बुद्गध-विरुद्ध नहीं ंहो सकती, और न तो तकस-बुद्गध ही धमतसनष्ठा से सिथसा रदहत हो सकती है। विज्ञान, दिनस और धम ससत्य को रकाशित करने का यत्न करते ंहैं जो अक्न्तम रूप में एक एिं सिग्रसाही है। हम एक ही भूशम को आच्छाददत करनेिाले विशभन्न सत्यों को नहीं पा सकते। धम सजीिन के रतत मानि की सम्पूण सचेतनिृवि का द्योतक है तयोंकक िह बौद्गधक चैतैन्य तथा ज्ञान से ही राप्त एिं रकाशित होता है। धमतसनष्ठा की आधार-सामग्री का उस स्िभाविक ज्ञान से सामञ्जस्य होना ही चादहए जो मनुष्य अपने एिं संसार के विर्य में रखता है। धाशमकस दृक्ष्ट का संसार एिं ंमनुष्य के उस गचत्र से सामञ्जस्य होना ही चादहए जो आज आधुतुनक विज्ञान हमारे सामने रस्तुत करता है। उपतनर्द् का िचन है-'अहं िृकूषस्य रेररिा' - म ंैही िृकूष को गतत देनेिाला हूाँ।

क्जतनी भी महती िैज्ञातनक उपलक्धधया ंाँहैं ि सब मानि की जीिन्त रेरणा- आत्मा-के काय सहैं। ब्रह्माण्ड-रहस्य भी मानि का अन्तजीि ही है। मुतत मानि-व्यक्तत का उसके शलए एक सामाक्जक पक्ष भी है ककन्तु जब तक िह मानि राणी बना रहता है तब तक उसके हृदय में एक ऐसी तनदोर्ता बनी रहती है क्जसकी कोई व्याख्या नहींकी जा सकती। हमारे अन्दर जो आत्मपरक (सधजेक्तटि) है िही हमें व्यक्ततगत स्िातन्त्र्य एिं उिरदातयत्ि के योनय बनाता है। हमें अपनेको मुतत करनेके शलए अपनी इस अक्न्तम िक्तत को कफर से

दृढतापूिकस ग्रहण करना चादहए। हम सब सम्पूणतसः आिश्यकता के गुलाम नहींहैं। कांट का अनुमितीत मुक्तत का शसद्धान्त एक ऐसी पूणतसः स्तिंत्र आत्मा को स्िीकार करता है जो ज्ञेय मन द्िारा रक्षेवपत दिैत् ्सम्बद्ध रत्यक्ष के बाहर ककसी क्षेत्र में क्स्थत है। यदद हम इसे ेअनुभि करते ेहैं कक हम केिल पदाथ सनहींहैं, जीिात्मा भी हैं तो रत्येक ददन हमें एक नया अिसर देता है-एक नया जीिन, यहााँतक कक एक नई व्यिस्था या नया समाज भी लाता ददखाई पड़ता है।

ईश्िर केिल संसारातीत ही नहींहै िरन् ्उसमें व्याप्त भी है। कबीर ने अपनेएक भजन में ईश्िर को यह कहते ेहुए बताया है :

> ओ मेरे सेिक, तू मुझे ेकहा ाँखोजता कफरता है ?
> म ैंतो तेरे पास हूाँ।
> म ैंन तो मक्न्दर में हूाँ, न मक्स्जद में,
> न तो म ैंपूजा और नमाज़ में हूाँ
> यदद तू सच्चा खोजी है,
> तो मुझे तुरन्त देख सकता है।

कबीर यह भी कह सकते ेहैं कक 'ईश्िर सम्पूण सश्िासि के श्िासि हैं।'

हमें मूढाग्रही विश्िासिों एिं कुरीततयों से लड़ने के शलए अपनी तकसना का उपयोग करना ही चादहए। हम केिल एक ऐसेन्यायी ईश्िर में विश्िासि रख सकते ेहैं जो संतं और पापी दोनों के रतत िैसै ेही तनष्पक्ष है, जैसे ेसूय स ठण्ड से कापाँतेहुए और गमी सेपसीना बहाते ेहुए, दोनों रकार के लोगों पर समान भाि से रकाशित रहता है। ईश्िर उपेक्षा से िुद्ध नहीं होता, अथिा राथनसा से रसन्न नहींहोता। उसके रि के चि दया, अथिा िोध से बागधत हुए बबना चलते ेहैं। ईश्िर का उपहास नहींककया जा सकता। िह कमाध्सयक्ष है-कम सका स्िामी तथा तनरीक्षण-कता।स यदद हम अपने पापों के शलए अनुताप करते ेहैं और अपनेआचरण में तदनुकूल पररितनस करते ेहैं तो ईश्िर उसका ध्यान रखता है और सुधरने में हमारी सहायता करता है। -

स्िग-सनरक कोई भौगोशलक क्षेत्र नहींहैं। जो आत्मा अपनेदुषुकमों के शलए अनुताप से दनध है, िही नरक में है; जो आत्मा अच्छे ढंग से जीिन बबताने के कारण सन्तुष्ट है, िह स्िग समें है। पुण्य-जीिन का पुरस्कार साधु ु जीिन स्ियं ही है। सद्गुण स्ियं ही अपना पुरस्कार है।

यदद िास्तविकता की व्याख्या के रूप में ईश्िर की बौद्गधक पररकल्पना को आनुभविक सत्य में पररणत करना है तो हमारी बौद्गधक चेतना को आध्याक्त्मक अनुभूतत में विकशसत करना पड़ेगा। धम सअक्न्तम सत्य से, क्जसेईश्िर कहा जाता है, शमलन का एक माग सहै। इस अक्न्तम सत्य में विश्िासि अनुगमन-तकस की रकिया की

समाक्प्त मात्र नहींहै िरन् ्अनुभिागश्रत तनष्ठा का एक काय सहै। धम सजड़ जिीन से आलोककत चैतन्य का उद्भि चाहता है, इस आलोककत चैतन्य को विशभन्न धम सविशभन्न नामों से पुकारते हैं।

जो लोग श्रद्धालुओं में सक्म्मशलत नहींहुए थे, उनसे ेबात करतेहुए संत पाल, इन िधदों के साथ ठीक ही कहता है कक 'यदद िे संयोगिात् ्उसकी भिाना रखते ेहों तो िे रभु को पाने की चेष्टा करें, और उसे ेराप्त कर लें, यद्यवप िह हममें से रत्येक से दूरू नहींहै।' संत पाल कहते ेहैं;

'तू जीण समानि को, जो छलनापूण सिासना से भ्रष्ट हो गया है, हटा दे।
और अपने मन की चेतना में नूतन हो जा।
और निीन मानि को उन िस्त्रों से ढक,
जो ईश्िरानुकूल साधुता और सच्ची पवित्रता में तनशमतस हुआ है।
इस निीनीकरण का पररणाम है नूतन मानि का जन्म।
यह निजन्म अपने को बाह्य करुणा में रकाशित करता है।
सम्पूण सकटुता एिं िोि, रोर् एिं कोलाहल
तथा समस्त विर्द्िेर् सदहत कुिचन को दूरू कर दे।
और तू एक-दूसूरे के शलए ढयालु, मृदुहुदय हो जा,
एक-दूसूरे के शलए क्षमिील बन,
जैसे ेईश्िर ने ईसामसीह के शलए तुझे क्षमा कर ददया है।"

मानि-मन में सभ्य और विकशसत के साथ ही आददम, पुरातन एिं पिशु भी उपक्स्थत रहता है। हमारे अन्दर जो जड़ता और बुराई है, उसके विरुद्ध संघर् सहमें जारी रखना चादहए। हमारे समस्त ित्रु हमारे अन्दर ही हैं। जो िृवृिया ाँहमें चररत्रभ्रष्टता के शलए बहकाती हैं, जो आग हमारे अन्दर जलती है, िह सब अज्ञान एिं त्रुदट के उस अन्तःक्षेत्र सेही उठती है, क्जसमें हम रहते ेहैं। मानि की मदहमा इस बात में नहीं है कक िह कभी गगरे नहीं, बक्ल्क इस बात में है कक हर बार िह गगरने पर उठ खड़ा हो। रोफेसर ए० एन० व्हाइडहेड ने कहा है: 'धम सविश्िास की िह िक्तत है जो आन्तररक भागों को स्िच्छ करता है। इसी कारण सच्चाई, िधक सच्चाई ही राथशमक धाशमकस सद्गुण है। धम समनुष्य के अन्तजिीन की कला एिं ्उपपवि है।"[3] आत्मविजय लालसा से िाक्न्त तक पहुाँचने का ही माग सहै। पाप करनेएिं दु्ःख भोगने के जिीन की अपेक्षा एक महिर जिीन है। ककसी मनुष्य की साधुता की मात्रा का परीक्षण इस बात सेहोता है कक िह ककस सीमा तक अपनी रकृतत की दुबुलसताओं पर रभुत्ि पाने में समथ सहुआ है। धम सजिीन से बाहर ले जानेका माग सनहींहै, अवपतु जिीन की ओर ले जानेिाला माग सहै। आत्मा और जिीन के क्षेत्र एक-दूसूरे के अन्दर िरि करते ेहैं। यह सामान्य धारणा कक दहन्दू ूधम ससामाक्जक मूल्यों का तनर्ेध करता है और संसार को अस्िीकार करनेिाले • आध्याक्त्मक अर्न्िेर्ण के शलए भौततक एिं सांस्कृततक आिश्यकताओं की बशल दे देता है, सही नहीं है। यह सत्य है कक जब हमें सत्य का दिनस होता है, तब

[3] 'ऐन एन्थालोजी ' (1953), पृ० 472।

हम अनुभि करते ेहैंकक हम इस नाम-रूपात्मक, बाह्य, दृश्य, परर्दी जगत् ्में अजनिी हैं। तब हमें यहााँघरेलू िाक्न्त नहींशमलती। जगत् ्के चल-चलिा या नैरन्तर रिह के पीछे जो सामञ्जस्य है, उससे ेरभावित होकर हम यहााँकाय सकरते ेहैं। यह भी कहा जाता है कक परमात्मा की एक मात्र िास्तविकता तथा उसका अनुभि करने की परमाश्यकता के सामने मानीय संघर् समें तनदहत समस्त बौद्धधक एिं नैततक यल अन्ततोगत्िा असत् ्और तत्रिदहत हैं। ककन्तु भारतीय विचारकों ने हमें शसखाया है कक रततिद्ध या सीशमत यत्न के बबना इक्न्द्रयातीत शसद्धध या अनुभूतत राप्त भी नहींहो सकती। यह कहना पूणतसः सही नहीं ेहै कक िंकर के मत में सामाक्जक आचार के साथ ब्रह्म के यौगगक ज्ञान की रततकूलता है। यदद िंकर कहते ेहैं कक किेल ब्रह्म ही सत्य है तथा ब्रह्म के बाहर कुछ भी नहींहै तो इसका तात्पय सयही है कक रतीयमान जगत् ्िहींतक असत् ्है जहा ाँतक हम उसे ेब्रह्म
की एक अशभव्यक्तत के रूप में ग्रहण करने में असमथ सहोते ेहैं। उन आखोंा में, जो 'एकमेिा द्वितीयम्'् की ओर खुली हुई हैं, तनत्य पररितनसिील िस्तु जगत् ्भी है क्जसमें रचनात्मक रूप से कम सकरना सम्भि है, और ऐसा करते ेहुए भी द्िैत के सृजनात्मक ऐतय में एक का साक्षात् ्या अनुभि हो सकता है। आत्मज्ञान इस रूप में है कक ज्ञानी आत्मा काय सभी कर सके।

सभी धमों में जीिन पर बल देनेिाले एिं जीिन का तनर्ेध करनेिाले मनोिेगों का परस्पर-संघर् सहै। इन दो मनोिेगों की अन्तःकिया ने बारम्बार भारतीय गचन्तन-धारा को नूतन रूप ददया है और अपनेअविश्रान्त आध्याक्त्मक अन्र्िेण ने भारत को अग्रसर ककया है।

यद्यवप कुछ दहन्दू ूपरम एतय पर इस सीमा तक ज़ोर देते ेहैं कक िैविध्य को, अनेकता को माया मानकर अस्िीकार कर देते ेहैं तथा सम्पूण सकम,स सम्पूण सकामना तथा जो कुछ भी पागथिस है, उन सबका त्याग एिं तनर्ेध करते ेहैं, परन्तु अगधकांदहन्दू ूसृक्ष्ट की अनेकता में एकता को ही सत्य मानते ेहैं—िह सत्य, जो राणणयों से भक्तत एिं रेम की मागाँ करता है। सभी धम सरेम एिं करुणा के आचरण की मागाँ करते ेहैं। अथिेसद का िचन है : 'समान-हृदयता, समान-मानशसकता, अरततकूलता का म ैंतुम लोगों के शलए सृजन करता हूाँ, तुम एक-दूसरे से उसी रकार रीतत रकट करो जैसै ेगौ अपनेनिजात ित्स के शलए करती है।'[4] 'जैसे ेएक मा ाँअपनेएकमात्र पुत्र का, अपना जीिन खतरे में डालकर भी रक्षण करती है, उसी रकार मनुष्य को समस्त चेतन राणणयों के शलए असीशमत रूप में करुणा सेअपने हृदय को विकशसत करना चादहए।' आत्मत्याग ही सच्चा त्याग है (जैसा कक द्युतेरा-ईसाया के भक्तत-संगीत में व्यतत हुआ है)। किेल यही ईश्िर को स्िीकाय सहै और यही इतना िक्तमान है कक दूसूरे में भी िही भाि पैदैा करता है। दहलेल कहता है : 'जो तेरे शलए घृणाजनक है उसे ेअपने सागथयों के शलए मत कर।'

मेरा खयाल है कक तालमद (यहूदी संदहता) में कहीं ंइस बात को लेकर वििाद है कक जगत् ्की सृक्ष्ट होनी चादहए थी या नहीं। अन्त में तनणयस यह हुआ कक यदद जगत् ्अक्स्तत्ि में न आया होता, तो लोगों के शलए िह

---

[4] आत्मा ज्ञातव्य इत्येतन्मोक्षाथं ंन च चोददतम् ्।
कमरसृिृहेतुत्िंआत्मज्ञानस्य लक्ष्यते। - िास्त्रदीवपका ।

ज़्यादा अच्छा होता; ककन्तु जब िह अक्स्तत्‌ में आ ही गया है तो मनुष्य को सत्काय समें अपना समय लगाना चादहए। संत पाल कहते ेहैं: 'म ैंईश्‌िर की समस्त दया के नाम पर तुमसे अपील करता हूाँ कक अपनेिरीरों को इस रकार िुद्ध एिं पररष्कृत करके कक िह ईश्‌िर को स्‌िीकाय सहो, बशल के रूप में समवपतस कर दो बस, यही है तुम्हारा सम्रदाय, यही है तुम्हारा आध्याक्त्मक जीिन।"[5] एपोक्स्टल (दिेदूत्‌) कहते ेहैं: 'बुराई से पराक्जत न हो बक्ल्क भलाई से बुराई को पराक्जत कर।'

यद्यवप सभी धाशमकस शिक्षकों ने हमसे यही कहा है कक करुणा हमें जीनेका अथ सरदान करती है, कम समें पथ-रदिनस करती है, साहस के रदिनस का कारण-रूप बनती है तथा मानिीय दुःख दूर करने में हमारी सहायता करती है, कफर भी उस महान्‌ ्करुणासागर रभु-ईश्‌िर-के नाम पर संसार में जघन्य अपराध ककए गए हैं। रेमेश्‌िर में विश्‌िास रखना ही पयाप्सत नहींहै; हमें तनक्श्चत रूप से रेम करना ही चादहए। जो िर्‌ा सनीचे ेके मैदानों को उपजाऊ बनाती है, िह िायुमण्डल के उच्च स्तरों पर ही तनशमतस होती है। सन्तगण ऐसे आचाय सहैं जो अशभरंक्जत दपणस की ऐसी आकृततया ाँनहीं हैं जो अपनी पवित्रता में सुदूर और आसमानी हों। उनमें कुछ ऐसी चीज़ है क्जसे ेहम जगत्‌ ्में सित्रस रसाररत करना चाहेंगे। उनमें अिश्य कुछ ऐसा है परन्तु िह तया है, यह हम नहींकह सकते। यह उनके रतत और अक्स्थ में है; यह उनकी िाणी के श्‌िास में है; उनके व्यक्ततत्‌ के रकाि एिं ंछाया में है-एक ऐसा रहस्य, क्जसेक्जया जा सकता है परन्तु िधदों में रकट नहीं ककया जा सकता।

राजनीततक िा आगथकस कायसाधकता के पििितनिील बालुका-कणों पर नहीं, नैततक यम-तनयम की दृढ च्टान पर ही ऐसे सभ्य समाज का तनमाणस ककया जा सकता है क्जसमें व्यक्ततगत स्‌ितन्‍त्र्य, सामाक्जक न्याय और राजनीततक समानता हो। िाक्न्त के शलए सत्य, स्‌ितन्‍त्रता और साधुता आिश्यक हैं। इंजील-लेखक (इिंजेशलस्ट) हमें बताता है कक कैसे िैतान उन्हें अत्यगधक ऊाँचे पितस पर ले जाता है और जगत्‌ ्के समस्त राज्यों को तथा उनके ऐश्‌ियि सको ददखलाता है। कफर कहता है: "यदद तू नीचे झुकुकर मेरी पूजा करे तो म ैंतुझे ये सब स्‌िुए ाँदूाँगा।" तब जीसस ने उससे कहा : "िैतान, तू यहााँ से चला जा, तयोंकक ऐसा शलखा है-'तू अपनेरभु, अपने ईश्‌िर की पूजा करेगा और केिल उसी रभु की सेिा करेगा।"[6]

नये समाज में हमें एक नूतन सािदेसशिक धम सकी आिश्यकता है। इससे हमारा तात्पय सएक ही साचेंाँमें ढलेधम ससे नहीं ंहै िरन्‌ ्जागरूकता एिं रेम के, रज्ञा एिंकरुणा के, सत्य एिं स्नेह के धम ससे है। धमों से, उनकी रादेशिकता दूर हो जानी चादहए और उन्हें ऐसा रूप ददया जाना चादहए कक उनसे ेउनकी सािदेसशिकता रकट हो। इसका अथ सआध्याक्त्मक अतनश्चय या संददनधता नहीं ंहै।

सदहष्णुता में रत्येक मनुष्य की गररमा से सम्बद्ध एक राथशमक अगधकार तनदहत है। विश्‌िास का अगधकार, मुतत, श्रृंखला-रदहत जीिन जीने की भातााँत ही, भ्रातृ–रेम की धारणा में मूलभूत रूप से तनदहत है। हम लोगों ने अपनेदेि में विशभन्न धमों का िाक्न्तपूण ससह-अक्स्तत्‌ देखा है। यह केिल तनक्ष्रिय सहअक्स्तत्‌ नहीं ं

---

[5] रोमांस , 12-21

[6] मैथ्यू : 4, 8-10 ल्यूक :4,5-81

है िरन् ्एक सकिय साहचय सहै; विशभन्न धमों में जो कुछ िसिोम है, उसका एक घतनष्ठ अन्तःसम्बन्ध है। सह-अक्स्तत्् रिथम पग है; लक्ष्य है भ्रातृभ्ाि-भाईचारा। हमने इन आदिों का सच्चाई के साथ पालन नहींककया है और राय: आपदा झेली है। कफर भी आदि सआखोंों के सामनेरहा है तथा राम मोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, रीन्द्र नाथ ठाकुर एिं गांधीजी जैसे ेमहान् ्नेताओंद्िारा उसकी पुक्ष्ट होती रही है।

सदहष्णुता का दृक्ष्टकोण इस विश्िासि पर आगश्रत है कक ताककसक श्रेणणयों के समस्त इक्न्द्रयातीत रयोग, इक्न्द्रयातीत को ससीम में खींचं लानेके समस्त रयल, गलत हैं। रकृतत एिं इततहास ईश्िर की उपक्स्थतत की घोर्णा करते ेहैं ककन्तु उसके समस्त स्िभ्ाि को रकट नहीं करते। एक-दूसूरे को ठीक तरह से न समझ सकने के कारण धम सपरस्पर कटते ेगए हैं, दूरू होते ेगए हैं। हम लोग धम सकी कततपय परम्पराओं के बीच पैदा या शिक्षक्षत होते ेहैं परन्तुपरम्परा के रतत तनष्ठािान होनेका यह अथ सनहींहै कक हम उसके अन्दर बन्दी बनकर रह जाए।ाँ हम अपनी आयु, पररक्स्थतत एिं संस्कार द्िारा तनणीत परमात्मा के विशभन्न रतीकात्मक रतततनगधत्् ग्रहण करते ेहैं। रत्येक रतीकात्मक विन्यास के मूल में िही है जो रूप के परे है। हमें रूप अथिा आकृतत की आिश्यकता तो है ककन्तु उसे ेआध्याक्त्मक सिा समझनेका भ्रम नहीं होना चादहए। आध्याक्त्मक सिा एक है, जब कक रूप अनेक हैं। जहा ाँतक रूप का सम्बन्ध है, रत्येक धम सतनराला है। हम यह मान सकते हैं कक हमारा विशिष्ट रूप-तनमाणस सत्य का उगचत रूपांकन है ककन्तु इसके साथ ही हमें दूसूरे रूपों के औगचत्य से इन्कार नहींकरना चादहए। हमें मुतत मानस एिं आत्मा के रतत उन तनष्ठाओं का विकास करना चादहए जो जातत, िग,स रजातत अथिा राष्र की संकुगचत तनष्ठाओंको पार कर जाए।ाँ इन मूल्यों की कीमत पर हम जो भी रगतत करते ेहैं, िह नैततक रूप से गलत है।

सब धमों के ऋवर्गण कहते ेहैं कक जगत् ्की विविध जाततया ाँएक सितसनष्ठ तात्पय सएिं सितसनष्ठ तनयतत िाले समाज का तनमाणस करती हैं। कहा जाता है कक समस्त जगत् ्ही एक महात्मा का वपतृदिृ है-घर है। आत्मा की सािभसौशमकता का यह समाचरण हमसे मागाँ करता है कक हम अपनिेत्रुओंको बुराई भरे िैतान के रूप में नहीं, रिन् ्उद्विननताओं से मागभ्रसष्ट तथा पररितनस एिं सुधार में समथ समानि के रूप में ग्रहण करें। इततहास बताता है कक शमत्र ित्रुहो जाते ेहैं तथा ित्रुशमत्र बन जाते ेहैं। तीन िताक्धदयों तक हमनेकैथोशलक एिं रोटेस्टेण्ट ईसाई सम्प्रदायों को परस्पर भयानक युद्धों में शलप्त देखा है, कफर भी िििप स्टीफेन नील अपने ग्रन्य 'ऐंनलीकतनज़्म" में कहते ेहैं- "हमारे िसिोम धमिसाक्स्त्रयों ने शसद्ध कर ददया है कक कैसे ेरोटेस्टेंटिाद तथा कैथोशलकिाद ईश्िरीय सत्य के दो आिश्यक अंग हैं।"[7]

> अन्तराष्सरीय झगड़ों के समाधान में हमें दहंसा पर मेल-शमलाप को, रततदहंसा पर क्षमा को, सीधी कारसिाई पर समझौते ेको रधानता देनी चादहए। यदद यह रुख, जो एक सिव्सयापी ईश्िर में विश्िासि के अनुकूल एकमात्र रुख है, हमारे मनों और हमारे हृदयों पर छा जाता है तो हम अपनेसंकट से छूट सकते हैं और सािभसौम समाज की मानिीय आिा के तनकट पहुुाँच सकते हैं। विशभन्न धम-समतों के सदस्यों के रूप में अपनी तनष्ठाओंको रखते ेहुए

---

[7] पेंगुइन द्िारा रकाशित (1958)।

भी लोग धम-सभ्रातृतृ के शलए काय सकर सकते हैं; विशभन्न राष्ट्रीय समाजों के सदस्य अपने ितमसान संघर् सके नीचे े या उसे ेअततिम करके भी भाईचारे का अर्न्र्णि कर और पा सकते हैं। ईश्रि में श्रद्धा हम सबको िाक्न्त के शलए सहयोग या सामञ्जस्यकारी भिाना से काम करने को उत्सादहत तया रेररत करे।

2. धम सका भारतीय दृक्ष्टकोण

यह विश्ासि करने का कोई कारण नहींहै कक पिू सएिं पक्श्चम के बीच मौशलक अन्तर है। मानि-राणी सित्रस मानि है और एक ही गहनतम मूल्य को स्ीकिार करता है। जो अन्तर हैं, िे अिश्य महत्त्पूिण सहैं परन्तु िे बाह्य, अस्थायी सामाक्जक अिस्थाओं को लेकर हैं और उनके साथ ही पररिततस होते ेरहते ेहैं।

पिू सऔर पक्श्चम भी सापेक्षक्षक िधद हैं। िे भौगोशलक अशभव्यक्ततयााँहैं, कोई सांस्कृततक िग सनहीं। चीन, जापान तथा भारत जैसे ेदिों के बीच अन्तर उतने ही महत्त्पूिण सहैं जैसे ेयूरोपीय अथिा अमरीकी दिों के बीच हैं। विशभन्न रदिों में आपेक्षक्षक पाथतसय के कारण विशिष्ट सांस्कृततक रततमानों का विकास हुआ-इन रततमानों के साथ अलग-अलग विश्ासि एिं ंआचार-अभ्यास संयुतत हो गए। ऐसेयुग आए हैं, जब चीन एिं भारत सांस्कृततक मामलों में शसरमौर थे;े दूसूरों की बारी तब आई जब पाश्चात्य राष्रों का आगधपत्य हुआ। वपछली चार िताक्धदयों से िैज्ञातनक रगतत की सहायता पाकर पक्श्चमी राष्रों नेराच्य भूभाग पर अपना आगधपत्य स्थावपत कर रखा है।

विश्ि अि अन्त:संचंरण के एक दजे पर पहुाँच गया है। सभी समाज तेज़ी के साथ उद्योग-रधान होते ेजा रहे हैं और मूल्यों के नये पुंज बनते ेजा रहे हैं। हमें एक नई सभ्यता के व्यथापूण सजन्मकाय समें सक्म्मशलत होने को कहा गया है। यदद हमें िाक्न्त सेएक साथ रहना है तो हमें अन्तराष्सरीय सहयोग एिं समझदारी का विकास करना ही चादहए।

उन व्यािहाररक कायों का तनश्चय करना राजनीततक नेताओंका काम है क्जनके द्िारा हमें इस समय उपलधध िक्तत (विद्युत्) ् एिं संचरण के स्रोतों का संसार के लोगों के बीच घतनष्ठ सहयोग एिं मैत्री के शलए उपयोग करना है। सांस्कृततक स्तर पर अिबोधन हुए बबना कोई भी राजनीततक अिबोध स्थायी नहींबनाया जा सकता।

अपनेआभ्यन्तर महत्त्ि के अततररतत भी ऐसी अिबोधना (समझ, अंडरस्टैंडडंग) मानिीय अनुभि को समृद्ध बनाती है। इततहास के दिनसिाक्स्त्रयों द्िारा ऐसे सरल साधारणीकरण ककए जाते ेहैंजो अत्यगधक गुमराह करने िाले होते ेहैं। हेगेल अपनी पुस्तक 'इततहास-दिनस पर िततृताएाँ' ('लेतचस सऑन कफलासफी ऑफ दहस्री') में कहता है कक "फारस रकिा का दिे है; ग्रीस (यूनान) िोभा का दिे है; भारत स्िप्न का दिे है; रोम साम्राज्य का दिे है।"

यदद हम वपछले ेपााँच हज़ार िर्षों के इततहास पर दृक्ष्टपात करते ेहैं तो चरम पररक्स्थततयों, शिखरों और खाइयों के िैर्म्य या विपरीतता को देखकर आश्चय सहोता है। दिे उठता है, लड़खड़ाता है, गगरता, अपने-आपमें ही शसकुड़कर रह जाता है, अपने को टुकड़े-टुकड़े गचन्दी-गचन्दी कर लेता है और कफर अपने खोई महिा को राप्त करने के शलए उठ खड़ा होता है। िह अहंकार, उदासीनता, लज्जा, अनासक्तत, उिेजना और दुसुसाहस की विविध गतिविधियों के बीच से गुज़रता है। कफर भी इन सबके बीच एक ऐसा विचार बराबर बना रहता है-विचार, क्जसका अनुभि करने, क्जसेशसद्ध करनेको िह रयत्निील है। यह है एक रकार का सन्तुलन, मानिीय स्िभाि की एक पररपूणतसा, क्जसे ेजीिन के सभी रूपों से सम्बद्ध घटनाए ाँएिं ंविपवियााँदहला-दहला देती हैं परन्तु तोड़ नहींपातीं। यह दिे सतह पर तो गततमान है ककन्तु अतल में, गहराई में क्स्थर है। भारत तनतान्त समृद्ध, िैविध्ययुतत एिं जदटल सन्तुलन है। यह दिे ककसी रभुत्ििाली रजातत या धाशमकस शसद्धान्त या आगथकस पररक्स्थततयों में सीमांककत नहीं ंहै। हममें रजाततयों (रसेस) का अद्भुत शमश्रण हुआ है ककन्तु क्जस महती परम्परा ने उसके समस्त तनिाशसयों को रभावित ककया है, िह है मानिीय हाथों का काय।स

यहांसंक्षेप में आत्मविद्या-विर्यक उन पिू सकल्पनाओं पर विचार कर लेना उपयोगी होगा जो ककसी भी सभ्यता की रचनात्मक िक्ततयााँहैं। आत्मविद्या कोई गूढ अशभतिि नहीं ंहै, रत्येक विचारिान व्यक्तत के जीिन में इसका एक महत्त्िपूण सस्थान है।

दिनस एक व्यापक िधद है क्जसकी पररगध में तकसास्त्र, नीततिास्त्र, सौन्दयिसास्त्र, समाज-दिनस एिं अध्यात्म-विद्या सब आ जाते ेहैं। इनमें सेअक्न्तम (अध्यात्म विद्या) पदाथ सकी परमा (अक्न्तम) रकृतत से सम्बक्न्धत है। आध्याक्त्मक िास्तविकता का अनुसन्धान बहुतेरी ऐसी चीज़ों का स्रोत रहा है जो गचन्तन के इततहास में बड़ी गहन एिं महत्त्पूिण सरही हैं। अध्यात्म-विद्या में दो मुख्य क्षेत्र सक्म्मशलत हैं: एक जीिविकास-विज्ञान या ताक्त्त्िकी (ऑनटोलोजी जो जीािथिसाची यूनानी िधद से बना है) अथात्स ्सिा जो स्ियं अपनी ही िक्तत और अगधकार सेक्स्थत है और ककसी अन्य िस्तु पर आगश्रत नहींहै; दूसूरा ज्ञान-मीमांसा (इवपस्टेमॉलोजी, जो ज्ञानायिसाची यूनानी िधद से बना है)। मनुष्य का मक्स्तष्क तनक्श्चत रूप से तया जान सकता है ? सम्मतत और ज्ञान में अन्तर कैसे ेहोता है ? सत् ्तया है ? तया जाना जा सकता है ?-ये हैं िे समस्याए ँक्जन पर अध्यात्म-विद्या विचार करती है।

धम-ससमस्या के सम्बन्ध में भारतीय दृक्ष्टकोण को ब्रह्मसूत्र के रयन चार सूत्रों के सन्दभ समें देखा जा सकता है। ये चार सूत्र उपतनर्द् के, जो िेदांग हैं, मुख्य अशभराय को रकट करते ेहैं। चारों सूत्र तनम्न समस्याओं पर रकिा डालतेहैं: (1) अक्न्तम या परम सिा के ज्ञान की आिश्यकता, (2) उसके अिधारण की तकसम्मत रकिया, (3) परम सिा का अनुभि, और (4) परम सिा की रकृतत के रतीयमान परस्पर-विरोधी विन्यास ।

रथम सूत्र का विर्य है-ब्रह्म-क्जज्ञासा। िह ब्रह्म को जानने की मनुष्य को कामना को रकट करती है। संसार से असन्तोर् है। इततहास, कफर चाहे िह खगोलीय हो, भौशमक हो, रातमानिीय या मानिीय हो, जन्म-मृतूयु या सृकूष्ट एिं विनिा का एक ऐसा तनरुद्देश्य अशभिम जान पड़ता है क्जससे ेव्यक्ततगत मानिीय अक्स्तत्ि का कोई अथ सनहींतनकाला जा सकता। जीि की समस्त श्रृंखला में, जो कात के किया-कलाप में मानि के साथकस सक्म्मलन की मागँ करती है, हमें कोई शसद्धान्त नहीं ददखाई पड़ता। संसार अथहसीन, असार तथा अपदाय-ससा लगता है। यह अतनत्य है तथा असुख है। पिु रोग एिं ह्रास के शिकार तो होते ेहैं ककन्तु उनका अपनी आपदा पर कोई चारा नहीं। संत आगस्टाइन उस सनातन आकुलता की बात करते ेहैं जो व्यक्तत के सांसाररक जीिन का लक्षण है। मृतूयु की चेतना ही गचन्ता का कारण है। कन्यूिस शलखता है :

> महान पितस चूर-चूर हो जाएगा
> सुदृढ िहतीर तनक्श्चत रूप से टूट जाएगी
> और रज्ञाान मानि ककसलय की भाताँत सूख जाएगा।

यदद मनुष्य अपने को संसार और उसकी हलचलों में खो देता है तो उसकी गचन्ता अल्पकाशलक, क्षणभंगुर भय का कारण हो सकती है। ककन्तु मनुष्य एक विचारिन राणी है। जब िह अपनेअक्स्तत्ि के आिश्ति एिं सीशमत रूप का विचार करता है तो िह भय से डर जाता है जो हाइडेगर के िधदों में 'स्ियं मानि से भी अगधक आद्यकाशलक है। जब भय अपनेविर्य में चेतनायुतत होता है तो दारुण ताप बन जाता है। संसार के मरणिीिी रूप के गचन्तन के साथ आत्मा का दु:ख भी शमल जाता है।

अतनत्यता तथा हमारी सम्पूण सउपलक्धधयों की पररसमाक्प्त की चेतना हमें यह पूछने को ाििि करती है कक इस विशि्-रकिया के पीछे या उसके परे भी कुछ और है ? यदद उसके पार कुछ न होता, तो हम विशि्-रकिया से ही सन्तोर्-लाभ कर पाते। दुखी व्यक्तत उपतनर्द् के िधदों में पुकार उठता है :

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योततगमसय
मृत्योमास अमृतं गमय
मुझे असत् ्से सत् ्की ओर ले चल।
मुझे अन्धकार से रकिा की ओर ले चल ।
मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चल।

यह असीम अथिा िाशि्ति की उपक्स्थतत ही है जो हमें ससीम या ाेशि्ति से असन्तुष्ट करती है। यह हमें उस ईशि्रि–ाणी का स्मरण ददलाता है क्जसेपैस्ैकल समझता था कक उसने सुना है :

'यदद तुम मुझे ेजान न गए होते ेतो मुझेपाने का रयत्न न करते।' रोमन्स में दी हुई अपराध-स्िीकृतत से तुलना कीक्जए :

'हमें क्जस रकार राथनसा करनी चादहए उसे ेहम नहींजानते, े ककन्तु स्ियं परमात्मा ऐसे गहरे उच्छ्िास के साथ हमारा भार उठा लेता है क्जसैधदों में रकट नहीं कर सकते।'

हमारे अन्दर जो द्िन्द्ि एिं विग्रह है उसी का पररणाम दुःख है। मनुष्य दो दुतुनयाओं में रहने िाला जीि है : आध्याक्त्मक एिं राकृततक। िह सद्-असदात्मक है।

अक्स्तत्ि िस्तुतः काल का एक अशभिम है। यह छुरे की धार पर क्स्थत है। यह धार सत् ्से असत् ्को अलग करती है। मानि-राणी असत् ्में उलझा हुआ है। न हम थे, न हम होंगे। सत् ्की रकृतत तया है ? उस असत् ् का तया रहस्य है जो हमारे अक्स्तत्ि को, जैसा कक हम उसे ेजानते ेहैं, आच्छाददत एिं सीशमत ककए हुए है ? सत् ् को अपनी अशभव्यक्तत के शलए असत् ्की ाेश्यकता पड़ती है। अपने'कन्फेिंस' (आत्मस्िीकृततयााँ) के रथम अध्याय में संत आगस्टाइन पूछते हैं कक ईशि्र के शलए उसकी (हमारी) आकांक्षा का अथ सतया है ? तया इसका यह अथ सहै कक उसनेईशि्र को पा शलया है या नहींपा सका है? यदद उसनेईशि्र को नहींपाया है तो िह ईशि्र के विर्य में कुछ जान नहींसकता तयोंकक ईशि्र ही उसे ेअपनेरतत यह उत्कण्ठा, यह तीव्र कामना देता है। यदद उसने ईशि्र को पा शलया है और उसे ेपूरी तरह जान गया है तो िह उत्कण्ठा रखने ेमें असमथ सहोगा तयोंकक िह पूण सहो जाएगा, अतः संघर् सकरने एिं दुःख उठानेकी बात ही न रह जाएगी।

आन्तररक, अदृश्य संघर् सके विर्य में काल सबाय सअपने'इवपक्स्टल टु दद रोमन्स' में एक महत्त्पूिण सपद शलखता है :

"आदमी दु:ख भोगतेहैंतयोंकक अपने संग अदृश्य जगत् ्शलए हुए चलते ेहैं। िे देखते ेहैं कक इस अदिनसीय, आन्तररक जगत् ्के साथ एक ठोस, विदिी, अन्य बदहजगसत् ्भी है जो बुरी तरह दृश्य है, स्थानच्युत है और क्जसके कण एक-दूसूरे से ठेलमठेल कर रहे हैं, कफर भी अत्यन्त िक्ततमान हैं और आश्चयजसनक रूप से आिामक और विद्रोही हैं।"

जीिन इसी दृश्य एिं अदृश्य के बीच एक सनातन नाटक है।

तनरथकसता की समस्या केिल धाशमकस श्रद्धा सेहल नहींकी जा सकती। श्रद्धा को आध्याक्त्मक ज्ञान से ऊजक्स्स्ति करना होगा। हमें आध्याक्त्मक पूिकसल्पनाओं पर विचार करना होगा और उस धाशमकस पूिशससद्दध या आददस्रोत का तनजी रूप से अनुभि करना होगा क्जससे ेसमस्त जीवित श्रद्धा का आरम्भ होता है। हमें बौद्दधक रयत्न तथा आध्याक्त्मक बोध, आत्मविद्या एिं धम सकी आिश्यकता है। केिल ज्ञानागश्रत श्रद्धा ही जीिन एिं गचन्तन में सामंजस्य उत्पन्न कर सकती है।

िास्त्रों में जो विचार ददया है उसे ेतकस-बुद्दध से स्पष्ट करना होगा। तकस-बुद्दध एिं धम सकी दुतुनयाए ाँ विशभन्न धुरुरयों पर नहींघूमतीं। भारतीय गचन्तनधारा इस विश्िास में दृढ है कक धाशमकस रस्थापनाए ाँतकस-बुद्दध में बद्धमूल होनी चादहए।

द्वितीय सूत्र बताता है कक ईश्िर में ही संसार तनदहत है; िही िह आदद स्रोत है क्जससे ेसंसांर जन्म ग्रहण करता है; िही है क्जससे ेउसकी रक्षा होती है और िही है जो उसको समाप्त कर देता है-जन्मादस्य यतः। यह कैसे े होता है कक कुछ न होनेकी अपेक्षा कोई िस्तु होती है ? बबना ककसी तकस या स्पष्टीकरण के सत् ्या िह तो है ही। िह अपने ककसी एक, या सिरूसपों में भी, समाप्त नहींहो जाता यद्यवप अपनेसब रूपों में से रत्येक में िह है। जगत् ्अपनी व्यिस्था तथा अशभराय-रमाण के कारण अचेतेन पदाथ से ेउद्भूत नहींहो सकता। भौततकिाद एक ऐसा शसद्धान्त है ! जो जगत् ्के सम्पूण सतथ्यों को पदाथ सएिं गतत के अथ समें व्याख्येय मानता है। िह स्नायु-रणाली के िारीररक एिं रासायतनक पररितनसों से सम्पूण सिारीररक या भौततक अशभिमों की व्याख्या करता है।

यद्यवप काल सबाथ सजैसे ेथोड़े-से ईसाई धमिसास्त्री हैं, जो धाशमकस तनष्ठा के मामलेमें तकस-बुद्दध के अनगधकार-िेि का विरोध करतेहैं, कफर भी कैथोशलकों की तथा कई रोटेस्टेण्ट सम्रदायों की मुख्य रिृवि धम-स विश्िास के बचाि में तकस-बुद्दध का रयोग करने की है। अपनी पुस्तक 'माई लाइफ ऐण्ड थॉट' के उपसंहार में डॉ० श्िेत्जिर शलखते ेहैं : "ख्रीष्टीय मत गचन्तना का स्थान नहीं ंले सकता, ककन्तु उसे ेउसकी नींि पर खड़ा करना होगा।... म ैंजानता हूाँ कक यह गचन्तन का ही पररणाम है कक म ैंधम सएिं ख्रीष्टीय मत में अपनी तनष्ठा बनाए रख सका।"

 ब्रह्मसूत्र (1-1-2) ने तैविरीय उपतनर्द् का आधार शलया है, जो विश्-अशभिम में पदाथ,स जिी, मन, रज्ञा
और आत्मा में भेद करती है। संसार में, लीबतनज़ के िधदों में, 'कुछ भी बंजर, कुछ भी अनुत्पादक-बाझाँ-कुछ भी मृत नहीं ंहै। िहााँकोई तीव्र भेद-रेखा नहींहै। सिा के एक स्तर से दूसूरे स्तर तक श्रेणी-व्यिस्था इतनी सूक्ष्म और अगोचर है कक ऐसी रेखा खींचना असम्भि है, जो रत्येक की सीमा का स्पष्ट अंकन कर दे। रकृतत में जो कुछ है, सब परस्पर सक्म्मशलत है, एक-दूसूरे के साथ गुाँधा हुआ है। सब जिी एक-दूसूरे से एक ऐसी श्रृंखंला में बधाँ हुए हैं क्जसके कुछ भाग आगे ेजातेहुए ददखाई पड़ते ेहैं जब कक दूसूरे भाग हमारी दृक्ष्ट में ही नहीं आते।

हम इस ब्रह्माण्डीय अशभिम को तब तक समझ नहीं ंसकते,े जब तक कक हम उस ब्रह्म या परमात्म-सिा की कल्पना न कर लें, जो इस अशभिम को रेररत और जीवित रखती है। जब हम इस जागततक अशभिम के पीछे एक रहस्य का होना स्िीकार करते ेहैं, तब मनोराज्य के पीछे के चलचलिा को भी मान लेतेहैं।

क्षणभंगुरतिााद आधुतनक युग का ही गोचर-विर्य नहींहै। यह गचन्तन का एक आधाररक रकार है जो दिनस के इततहास में तब दृक्ष्टगोचर होता है जब हम मानि की ियक्ततक सिा तथा राकृततक पदाथों की सिा के अन्तर पर ज़ोर देते ेहैं। आत्मसिा एिं िस्तु-सिा में अन्तर है। मनुष्य केिल है ही नहीं, िह जानता है कक िह है। उसकी सिा उसके शलए खुली हुई है। ज्ञान पदाथ-सजगत् ्तक सीशमत है, ककन्तु आत्मा की पकड़ अन्दर से होती है। पदाथ-ससम्बन्धी ज्ञान तो है परन्तु आत्मापरक धारणा भी है।

आध्याक्त्मक गचन्तन, जो अनुभि पर आधार रखता है, मानता है कक रकृतत की पकड़ आिश्यकता के रत्यय से होती है, जब कक आत्मा का, पुरुर् का अिधारण मोक्ष या स्िातन्त्र्य के रत्यय से होता है। इस अिधारण के बबना मनुष्य की रकृतत के विर्य में हमारी समझ अपूण सएिं विकृत रह जाएगी। यद्यवप मनुष्य और रकृतत दोनों, ईश्रि की ही सृकूष्ट हैं ककन्तु मानि-सिा ईश्रि के रततबबम्ब-रूप'[8] में तनशमतस होती है, इसशलए िह रकृतत-सिा से बहुुत शभन्न होती है। मनुष्य कोई स्िंयचेता पदाथ सनहींहै, यद्यवप िह िाह्य िस्तु से शभन्न होते ेहुए भी पदाथ सतो है ही-एक िस्तुतनष्ठ पररकल्पना, तनजत्बिोधात्मक 'म'ैं नहीं। हम मनुष्य को यह मानकर कक िह रकृतत का एक असाधारण रूप से जदटल पदाथ सहै, िैज्ञातनक दृक्ष्ट से नहींसमझ सकते। िस्तुपरक या विर्यगिश्रत िणनस मनुष्य को तनजत्िदहत कर देता है और उसे ेऐसे खण्डों के पंचमेल पुंज-सा बना डालता है, क्जसका विविध विज्ञान अध्ययन करते ेहैं। िह जिै मानि है, सामाक्जक मानि है, राजनीततक मानि है और व्यक्ततगत, तनजी मानि भी है जो िेदना एिं आनन्द का अनुभि करता है; उिरदातयत्िका बोझ उठाता है; भला-बुरा करता है और जब आत्मपरक (सधजेतेट) न होकर िस्तुपरक (आबजेतेट) बन जाता है तो स्ियं अपने से अपने अलगिा का। अनुभि भी करता है।[9]

---

8 जेनेशसस 1-26।

9 ButIhavethatwithin which passeth show,
Thesebutthetrappings and the suits of woe.
-हैमलेट ,1-2

तकस-बुद्र्ध के रतत दाितसनक की तनष्ठा का यह तात्पय सनहींहै कक परमसिा या ब्रह्म की रतीतत तकस-बुद्र्ध के विर्य रूप में ही हो सकती है। पूि सऔर पक्श्चम दोनों के अनेक दाितसनक इस पररणाम पर पहुुँचे हैं कक (परम) सिा अगधराज्ञ है और िह अपनी परमा रकृतत में इक्न्द्रयज्ञानलभ्य नहींहै तथा धाशमकस अन्तदृक्सष्ट भी परमसिा की िास्तविक अशभव्यक्तत है।

तीसरे सूत्र 'िास्त्रयोतनत्िात्'् का अशभराय यह हो सकता है कक ब्रह्म ही िास्त्र का स्रोत है अथिा यह कक हमें िास्त्र से ब्रह्म-ज्ञान होता है। समस्त दिनस का आरम्भ अनुभि से होता है और अन्त भी अनुभि में ही होता है। धम सकेिल रस्थापनाओं की स्िीकृतत-मात्र नहींहै। यह बुद्र्ध का व्यायाम मात्र भी नहीं ंहै। यह सम्पूण समानि का रततिचन है; सम्पूण समानि की संिेदना है। यह पूण सतनष्ठा मागाँता है, यद्यवप सदा ही उसे िेह राप्त नहीं ं होती। सिा (ब्रह्म) कोई धारणा या रातकल्पना नहीं है। इसे ेअनुभूत तथ्य होना चादहए। परमसिा की अपरोक्षानुभूतत या लोकोिर ज्ञान सम्भि है। यह सिा की एक झलक-मात्र नहींहै िरन् ्उसके साथ नैरन्तर सम्पकस है। जैसा कक बोहमे ेकहता है : यह 'िह दि है जो केिल दृश्य नहींअवपतु गृह है।' आध्याक्त्मक अनुभि में हम काल-बोध को पार कर िाश्ित या तनत्य में चलेजाते ेहैं। इसका तात्पय सयह नहींहै कक सीशमत अहं या जीिात्मा का अन्त हो जाता है; यह जागततक एिं इक्न्द्रयातीत चेतना में समाकर राप्त मोक्ष है।

िास्त्र ऐसेऋवर्यों के अनुभि के वििरण हैं क्जन्हें सिा (ब्रह्म) की समस्या की पकड़ रही है। स्िीकृतत का उनका दािा ईश्िर-सम्बन्धी ककसी रततष्ठापना-समूह के ताकककसक औगचत्य पर अथिा ईश्िर के कम-सकलाप-विर्यक वििरणों की ऐततहाशसक संगतत पर आगश्रत नहीं है। ऐसेतथ्य िैज्ञातनक अथिा ऐततहाशसक अन्िेर्णों द्िारा अक्स्थर ककए जा सकते हैं। अनुभि ककसी भी ऐसे मनुष्य द्िारा राप्त ककया जा सकता है जो एक विशिष्ट अनुिासन में रहने और रयत्न करने के शलए उद्यत है।

क्जनको अनुभि है, िे आत्मजगत् ्के अग्रणी लोगों में हैं। िे अन्तदृक्सष्ट के द्िारा चलते ेहैं, विश्िास द्िारा नहीं। िास्तविक धम सपरमात्मा या ब्रह्म के साथ रत्यक्ष सम्बन्ध रखने ेकी चेतना पर आगश्रत है। यह अनुभि सब रूपों, रततबबम्बों और सम्बोधों को पार कर जाता है। केन्द्रीय स्िभ में, जो रज्ञा और संकंल्प दोनों का मूल है, सक्म्मलन या ऐतय की उपलक्ब्धध हो जाती है। क्जतने भी धाशमकस िचन हैं, िे उपलब्धध अनुभि के अथ सको ठीक रूप से रकट करने के अथहसीन रयत्न मात्र हैं।

बुद्ध को गुह्यपतत या रहस्यों का स्िामी कहा गया है। िह 'बोगध' अथिा रज्ञान पर ज़ोर देते ेहैं। अपने सब रूपों में बौद्ध-दिनस अभ्यन्तर-रेररत अन्तदृक्सष्ट पर ज़ोर देता है। ज़ेन अनुिासन हमसे ेरत्ययी गचन्तन की जदटलताओंको काटने ेके शलए कहता है क्जससे ेहम जीिन के आमूलचूल रूपान्तर को राप्त कर सकें।

चतुथ ससूत्र सिा (ब्रह्म) की रकृतत के विर्य में विविध वििरणों में, जो िास्त्र में शमलते हैं, सामंजस्य लानेका रयत्न है। विज्ञान रहस्य की श्रद्धापूण सस्िीकृतत की ओर ले जाता है। धम सहमें बताता है कक हम अक्न्तम रहस्य (ब्रह्म) का तनजी अनुभि राप्त कर सकते हैं। धम-सदिनस कल्पनािील दाितसनकों की ताकककसक रस्थापनाओं

की अपेक्षा धाशमकस मनुष्यों द्वारा उपलधध अनुभि-सामग्री पर ही अपना मुख्य आधार रखता है। हम अनुभि से कुछ ऐसी िस्तु उत्पन्न करने की चेष्टा करते ेहैं जो उसकी स्मृतत को सुरक्षक्षत रखे। व्हाइटहेड हमें बताते ेहैं- 'िधद उसे ेनहीं ंिहन कर सकते अथिा बड़ी ही सूक्ष्म मात्रा में िहन कर सकते हैं। हमें असीम के साथ संचार-सम्पकस रखने ेकी सुगध है और हम जानते ेहैं कक हम चाहे जो भी ससीम रूप दें, उसे ेरकट नहींकर सकते।' संत आगस्टाइन कहते ेहैं: "हमारा विश्िास है कक हम आन्तररक रहस्यों को जानते ेहैंककन्तु हम अब भी बाह्य रांगण में हैं।" हमारे बयान सब केिल आशिक सत्य हैं, पूण ससत्य नहीं। िास्त्रीय ितव्य में जो कुछ सक्न्नदहत है िह गचन्तन की श्रृंखंलािद्ध रणाली में रदशितस है।

परम सिा के दो रूप हैं: तनगुणस एिं सगुण। जब हम गोचर सामग्री से परम सिा की ओर जाते ेहैं तो उस सिा की कल्पना ब्रह्माण्ड के स्रष्टा, िासक एिं जागततक पथदिकस के रूप में की जाती है। जब हम उस परम (ब्रह्म) का अनुभि करते ेहैं तो िह परम सिा संसार के परे, उसकी समस्त श्रेणणयों के ऊपर उठी हुई तथा तनर्ेधात्मक िधदों में िणणतस की जाती है। समस्या के समाधान से सम्बन्ध रखनेिाली बातचीत में बड़ा उत्साह, जोि तथा विचक्षणता खच सकी गई है परन्तु मौन अथिा अचनसा ही उसका सबसे पयाप्सत रत्युिर होगा। उस तनरपेक्ष या परम (ब्रह्म) की रकृतत मौन की टीका द्वारा ही अशभव्यतत होती है।'[10] िंकर के अनुसार ब्रह्म की कल्पना द्विविध है।'[11]

महोपतनर्द् में ब्रह्म िून्य, तुच्छ, अव्यतत, अदृश्य, अगचन्त्य और तनगुणस बताया गया है।'[12] बुद्ध कहते ेहैं : 'सचमुच एक ऐसा राज्य है जहा ाँन ठोस है, न द्रि है, न ताप है; न गतत है, न यह जगत् ्है, न दूसरा कोई जगत् ्है; न सूय सहै, न चन्द्र है। इसे ेम ैंन उद्भि और न लय कहता हूाँ; न क्स्थर खड़ा रहता हूाँ, न जन्मता या मरता रहता हूाँ। यह सबका अन्त है।"[13] सन्त आगस्टाइन ने, जो नि-प्लेटोिाद में डूबे हुए थे, तनिविसेर् (एधसोल्यूट) या परम सिा की पररभार्ा तनर्ेधात्मक िधदों में दी है : "ईश्िर को अिण्य सभी नहीं ंकहा जा सकता, तयोंकक ऐसा कहना भी उसके विर्य में एक दािा करना है। िास्तविक सिा अरततबद्ध, इक्न्द्रयातीत है और रतीक- रदहत ककसी भार्ा द्वारा ही पकड़ में आ सकती है।[14]

---

10 मौनव्याख्यारकीततितसपरब्रह्म-तत्त्िम्।् दक्षक्षणमूतत सस्तोत्र

11 द्विरूपंदह ब्रह्मािगम्यते,

नाम-रूप-विकार-भेदोपागधविशिष्टम्,् तद्विपरीतंसिोपागधिक्जतसम्।्

12 एर् हिो िून्य एर् हिो तुच्छ एर् हिोाव्यततोऽदृश्यगचन्त्योतनगुणस श्च ।

13 उदान, 80 (उडिड)स।

14 अपने तनबन्ध 'दद ररलीजस शसम्बल इन डाइडालस' (1958) पृ॰ 14-15, 20 पर रोफेसर पाल ततल्ली (Paul Tillich) कहते हैं: "दिी आत्माएाँ (दिेता) और परमात्मा उनके रततततनगधत् हैं क्जनका अक्न्तम रूप से धाशमकस कृत्य में हिाला ददया जाता है। िे रततततनगधत् इसशलए हैं कक अरततिद्ध, इक्न्द्रयातीत िािात्मा की रत्येक सम्भि रततस्थापना को पार कर जाते ेहैं- यहााँतक कक परमात्मा की रततस्थापना को भी। जहााँ तक ऐसी ककसी सिा का अक्स्तत् मान शलया जाता है, िहााँ तक उसका भी धाशमकस कृत्य में लय हो जाता है। इस लय में, इस तनिाणस में, धाशमकस कृत्य में तनदहत इस नाक्स्तकता में धाशमकस कृत्य का गहनतम पक्ष व्यतत है। 'तािीन मिे' में िेली नेकहा है कक यहााँकोई ईश्िर नहींहै। ककन्तु उसी ने एक दटप्पणी भी जोड़ दी

भारत का लोक-धम सराथनसा, भक्तत एिं उत्सग सद्िारा एक मूत सईश्िर की पूजा है।

संघदटत धम ससामान्य मानि को ईश्िर के अक्स्तत्ि के रतत ऐसी श्रद्धा से अनुराणणत करनेकी चेष्टो करते ेहैं जैसा कक उस सम्रदाय या धम-सिंिेर्् में, अथिा उसके स्थापन-कता समें व्यतत होता है। िे एक ऐसा अनुिासन-यम-तनयम-भी तनददसष्ट करते ेहैं क्जससे ेकोई भी परमात्मा को राप्त कर सकता है। भारतीय गचन्तक हमें याद ददलाता है कक ईश्िर समस्त धाशमकस रणाशलयों या सम्रदायों के ऊपर है। िह अनन्त और सीमा के परे है, यद्यवप धमिसास्त्री उसे ेसीमा में बाधाँनेकी चेष्टा करते ेह।ैं

क्जस ढंग पर हम परमात्मा का िणनस करते ेहैं, उसका तनश्चय हमारी आयु, हमारी परम्परा तथा तनजी लालन-पालन से होता है। काल संस्काररत करता है और जो कुछ आयु से धिल है, हमारे शलए िही पुनीत हो जाता है। इस रकार भारत के लोगों के दिेी-दिेता परमात्मा सेसम्बद्ध हो गए, परन्तु बल तनरन्तर आन्तररक दृक्ष्ट तथा श्रेय पर ही ददया जाता रहा है।

सिा या परमात्मा को समझने में तकस-बुद्गध की क्षमता का महत्त्िपूण सीमाकरण अनुभि की रकृतत के बुद्गधपरक अिर्ोण के रततकूल नहींहै। जब एफ० एच० ब्रैडले ेने उपहास के स्िर में कहा था कक 'अध्यात्म-विद्या, जो कुछ हम सहज िृवि सेविश्िासि करते ेहैं उसेही कुतकों से पाने की चेष्टो है' तो ऐसा कहकर उन्होंने यही सुझाया कक हमारे गहनतम विश्िासि को तकस-बुद्गध रमाणणत करती है। यही एकमात्र माग सहै क्जससे ेहम अपनेविश्िासिों के शलए तनक्श्चत आधार राप्त कर सकते हैं। इलहाम या श्रुतुत-रकिा यद्यवप अनुभिों को स्ियं ही रमाणणत करते ेहैं ककन्तु िे आत्मगत कामना-पूतत समात्र हो सकते हैं अथात्स ्व्यक्तत द्िारा ही उन उद्देश्यों का रक्षेपण हो सकता है। जहााँ तक दिेताओंका सम्बन्ध है, क्जन्हें चढ़िा ेचढाए जातेहैं, उनके विर्य में कुछ मीमांसकों का कहना है कक िे िधदों की रकृतत-मात्र हैं और िधदों के द्िारा ही पहचानेजाते ेहैं, या कफर से मानस-सृकृष्टया ाँहैं।'[15] परस्पर-विरुद्ध अनुभिों के साथ रिल आत्मपरक विश्िासि भी लगे हुए हैं। अपनेतनरीक्षण में हाधस ठीक है कक ककसी मनुष्य का यह कहना कक ईश्िर ने उसे ेककसी स्िप्न में कहा है, 'इससे ज़्यादा और कुछ अथ सनहीं ंरखता कक उसने यह स्िप्न देखा कक ईश्िर उससेकह रहे हैं।"[16] ककसी अनुभि की रामाणणकता का तनणयस बौद्गधक विचारधाराओं द्िारा ही ककया जा सकता है।

समस्त संसार में ऐसेबहुत से लोग हैं जो बड़ी गहराई और भािोद्रेक के साथ उन दिेिुस भूत-रेतों में विश्िासि करते ेहैं क्जनका उनकी कल्पना के बाहर कभी अक्स्तत्ि नहींरहा। तकस-बुद्गध के उपयोग से ही हम ऐसे विश्िासिों का ततरस्कार कर सकते ेहैं। रोफेसर एच० द उल्फ 'ऐसेदिेिुस दिेताओंकी पूजा' के विर्य में शलखतेहैं-

---

इस तनर्ेध से केिल यह समझना चादहए कक िह केिल सजनसकतास दिेता को रभावित करता है। जगत् ्के सदहत तनत्य तथा व्यापक आत्मा की पररकल्पना अकाय् बनी रहती है।""

[15] िधदामका एि दिेता िधदबोध्या िा मनःकक्ल्पतरूपा िा दिेताः स्िीकियाःस।-मीमांसा, 21-22

[16] लेर्विेचन (एिरीमैन संस्करण) पृ.ृ 200।

'उनमें अक्स्तत्पिरक तनष्ठा का अभिा नहींरहा है। उनके कक्ल्पत आदिेों के पालन में हज़ारों ने उपिास ककए हैं; अपनेको जला डाला है; चोदटयों सेकूद पड़ेहैं; लज्जा का बोझ उठाया है; अन्धश्रद्धा के साथ युद्ध ककए हैं और अपनेबच्चों की बशल दे दी है। तब तया हम उस बुद्गध के उपयोग की तनंदा करेगे िक्जससे महत् िलोक-समूहों ने यह सीखा है कक ऐसेदेिता क्स्थत नहींहैं और इसके फलस्िरूप उनके अत्याचार से उनको मुक्तत शमल चुकी है।"[17]
भले ही परमात्मा की पकड़ के साधन के रूप में तकस-बुद्गध पयाप्सत न हो, ककन्तु ऐसी पकड़ या कल्पना के दिो िके समीक्षक- रूप में यह तनश्चय ही उपयोगी है।

तकस-बुद्गध के रयोग द्िारा भारतीय धाशमकस गचन्तन ने धम सको सुधार-विरोध से मुतत कर रखा है और श्रद्धा को मूढ विश्िासों से ऊपर पहुुँचा ददया है। यदद हम स्ियं वपाच-पूजा करते िहों और दूसरों की इसके शलए तनन्दा करें तो यह िैतान द्िारा पाप को णझड़कनेके समान होगा। पौराणणक विश्िास एिं मूढाग्रह एक बन्द और क्स्थर धम सकी विर्य-सामग्री हैं। सिा का सहज अन्तदसिनस ही, जो विर्यगत एिं रूपग्राही उपकरणों को लाघुँ जाता है, उनमें जीिन और अथ सउत्पन्न करता है।

ककसी पुरातन उपतनर्द् में कहा गया है कक हम श्रिण, मनन एिं तनददध्यासन द्िारा परम सिा में अन्तदृक्सष्ट राप्त कर सकतेहैं। पहला हमें िास्त्रिाणी देता है; दूसरा एक बौद्गधक पकड़ देता है और तीसरा िह पथ ददखाता है क्जस पर चलकर हम श्रिण एिं मनन ककए हुए सत्य को अपनेअन्दर उपलधध या ग्रहण करते िहै।ं इन तीनों बातों पर रथम तीन ब्रह्मसूत्रों में विचार ककया गया है, और चौथे िसूत्र में अगधकार, तकस एिं जीिन के सामञ्जस्य का तनदेि है।

आज हम खड़ी चट्ान के शसरे पर रह रहे हैं। अणुएिं उद्जन-बमों ने हमारे विचार पर अगधकार कर रखा है और हमारे अन्तःकरण को पीड़ा दे रहे हैं। संयुतत राज्य अमरीका के एक महान् िअणु–िज्ञातनक ने जब रथम आणविक विस्फोट देखा, जहा ंधररत्री से लपटें और धुआुँ उठकर न्यू मैक्तसकोय नगर के िातािरण को स्पि सकर रहे थेतो कहा कक उसे िभगिद्गीता की याद आ रही है। उसनेगीता को उद्धृत ककया-"आकाि में हज़ार सूयों के एकसाथ उदय होनेसे जो रकाि होगा िह भी उस परमात्मा के रकाि के सदृि कदागचत् िही होगा।... म ैंलोगों का नाि करनेिाला िृद्ध महाकाल हूुँ और इस समय इन लोकों को नष्ट करने के शलए रिृि हुआ हूुँ।"[18] उद्जन–ब म का रभाि तो उससे भी कहीं अगधक भयानक है। मेरा खयाल है कक उनकी यह असीम विनाि क िक्तत युद्ध के

---

[17] दद ररलीजस ररिोल्ट अगेंस्ट रीज़न, पृ० 115।
[18] ददवि सूयसहस्रस्य भिेद् ुगपदुक्त्थता ।
यदद भाः सदृिी सा स्याद्भासतस्य महात्मनः ।।
कालोऽक्स्म लोकक्षपकृत्रिृद्धो,
लोकान्समाहतुशसमह रिृिः ।
ऋतेऽवप त्िां न भविष्यक्न्त सिे
येऽक्स्थताः रत्यनीकेर्ु योधाः ।।
-अध्याय 11, श्लोक 12-32

 शलए बहुत बड़ी रततरोधक शसद्ध होगी। ककन्तु असीम संत्रास की धमककयों से हम

मानिीय रकृतत की तनम्न
रेरणाओं-भय, लोभ एिं घृणा को रोत्साहन दे रहे हैं।

भारतीय गचन्तनधारा की यह एक सुपररगचत धारणा है कक मानिीय हृदय और पाप के कालजीण ससंघर् स की यह दृश्यपटी है। दुबुलसता और अपूणतसा इस पर छापा मारतेरहते ाेहैं। ककन्तु िह उच्च परिाम एिं रचनात्मक रयत्न की भी योनयता रखता है। मनुष्य जीिनदातयनी एिं मृतूयुकाररणी रेरणाओं का शमश्रण है, ऋनिेद के िधदों में 'यस्य छाया अमृतृम् ्यस्य मृतूयु:' - क्जसकी छाया अमरता और मरण (दोनों) हैं।[19]

महाभारतकार कहतेहैं:

अमृतं चिै मृतूयुश्च द्ियं देहे प्रततष्ष्ितम्।्
मृतूयुरापद्यते मोहात् ्सत्येनापद्यतेऽमृतम् ्।।

अमरता एिं मृतूयु दोनों मानि की देह में तनदहत हैं। मोह का अनुसरण करके िह मरण को राप्त करता है; सत्य का अनुसरण करके िह अमृत को, अमरत् िको पाता है। हम लोग 'दहतोपदेि' के उस पद्य से पररगचत हैं क्जसमें कहा गया है कक भूख, तनद्रा, भय और काम मनुष्य एिं ंपिु में समान हैं। मनुष्य को जो िस्तु पिु से अलग करती है, िह उसका धम सहै, पाप-पुण्यविििेक है।[20] जीिन और मरण, रेम एिं दहंसा रत्येक संघर्िसील मानि में युद्धरत हैं।

आधुतनक मनोविज्ञान इस सत्य को तकनीकी िधदािली में दोहराता है। रत्येक मानि-राणी में दो रकार की आत्मरेरणाए ाँहोती हैं एक िह जो पररक्षण एिं एकीकरण करती है। इसे ा'इरोदटक इंसदटंटस' (रततरृवि) कहते ाेहैं। यह िधद प्लेटो द्िारा रयुतत 'इरोज़' (काम-रतत) के भिाथ सपर बना है। दूसूरी रेरणा िह है जो नष्ट करती है और मारती है, क्जसे वििामक या विघटनात्मक रेरेणा कहा जाता है। मरण-रेरणा रत्येक जीवित राणी में होती है, जो उसके विनाि में रिृ रहती है। यह रतत-रेरणा के, जो जीिन को बनाए रखने ाेका काय सकरती है, रततकूल काय सकरती रहती है। ये दो रकार की रेरणाएाँसिथसा अलग-अलग काम नहीं करतीं। िे एक- दूसूरे से शमगश्रत हो जाती हैं-जैसे ाेकक यम की काली दुदुहता-यमुना नदी का जल शिि की जदटल केिराशि से तनकली गंगा के जल में शमल जाता है। कभी-कभी आदििसादी रिृवि से भी विनाक रेरणाओं को िक्तत शमलती है। साधारण जन दयालु एिं उदार, मैत्रीयुतत और सहयोगपूण सहोतेहैंककन्तु रचार एिं मत-शिक्षण से हम उनके जीिनीय तनझरसों को सुखा देते ाेहैं, विनाक रेरणाओं को सकिय कर देते ाेहैं और उन्हें सामूदहक रमाद की सीमा तक उठा देते ा हैं। इततहास की िूरताए ाँश्रेष्ठ कायों के नाम पर सम्पाददत की जाती हैं। उदाहरणस्िरूप 'इनक्तिक्ज़िन' की रूिताए ाँविनाक रेरणाओं का ही पररणाम थीं ंऔर ये विनाक रेरणाए ाँधम सके नाम पर सम्पाददत की जाती हैं। पुराकाल में मनुष्यों को युद्ध-ज्िर से संशिमत कर ददया जाता था। ऐसा स्ितिन्त्र्य एिं जनतन्त्र, सम्मान एिं

---

[19] 10. 10. 1211
[20] आहारतनद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत् ्पिुशभनरसाणाम्।्

धमो दह तेर्ामगधको विविेर्ो धमेण हीनाः पिुशभः समानाः ।

न्याय के शलए ककया जाता था। ये बड़ी बातें सिा के रलोभन, धाशमकस क्टरता तथा रजाततगत विर्द्िेर् के शलए की जाती थीं। इसीशलए सब युद्धों को न्याय्य एिं पवित्र माना जाता था।

इस रकार के रिृविगत जीिन पर बुद्गध का िाशमक तनयन्त्रण स्थावपत करना ही सभ्यता है। यह ऐसे स्ितंत्र विचारकों का कतव्सय है, जो दबाि या धमककयों के आगे ेनहींझुकते, और जो सत्यान्िेर्ण में उत्साह रखते े हैं कक िे सामूदहक भािना को रोत्साहन दें और आिामक रिृवियों के बल को घटाए।ाँ जब हम यह खयाल करते ेहैं कक इस समय राष्रों के पास जो अशमत िक्तत है, िही युद्ध के शलए रततबन्धक शसद्ध होगी, तो हमारी दृक्ष्ट में िह लघु नरपिु, 'पुरातन आदम' है जो रत्येक मानि–िक्ष के अन्दर सोया हुआ है। मानि के क्जतने भी मनोभाि हैं, उनमें उसके स्िातंत्र्य से सबसेकम संगतत रखने िाला तथा उसे ेसबसे अगधक गगरानेिाला भय है। मानिों के हृदयों में भीर्ण भय की रततष्ठा करके हम उनके नैततक मानों को विकृत एिं भ्रष्ट करते ेऔर उनके मानस को नष्ट कर देते ेहैं। लन्दन का एक स्कूली अध्यापक शलखता है :

बस में जब म ैंस्कूल आ रहा था तो मनैंअपनेएक नन्हे छात्र (आयु 11 िर्)स से पूछा कक बड़ा होनेपर िह तया करने की इच्छा रखता है। उसनेउिर ददया, 'महोदय ! मुझे इसकी गचन्ता करने की आिश्यकता नहींहै तयोंकक तब तक कोई ऐसी जगह ही नहींबचेगी क्जस पर हम खड़े ेहो सकें।'[21]

स्नायु की तनक्षक्रयता एिं िातोन्मादी रकिया आत्मा एिं संस्थाओं ंतथा जीिन की उस रजाताक्न्त्रक रणाली में श्रद्धा के अभाि से होती है क्जसेहम जीिन सेभी अगधक मूल्यिान मानतेहैं। जीिन की रजाताक्न्त्रक रणाली तया है ? भली तनष्ठा, सदहष्णुता, अपने मत से शभन्न मत के रतत आदर तथा सबके शलए समान न्याय, अपनेविचार रकट करने की िक्तत, अपनेअन्त:करण के अनुसार चलने की सामथ्य,स जो कतव्सय समझ में आता है उसे ेकरना, एक ऐसेिासन-तलेरहना क्जसेबनाने-बबगाड़नेमें उसका दहस्सा है, ऐसे कायों एिं सुधारों की ओर रगतत क्जसमें उसकी तनष्ठा हो, कफर चाहे िे िासकों के शलए ककतने ही अवरय हों, इत्यादद बातें इसमें सक्म्मशलत हैं।

> हमारी बहुुतेरी कदठनाइयााँ इस तथ्य के कारण हैं कक दशमत जाततया ाँिही स्िततन्त्रता मागाँ रही हैं क्जसे े हम स्ियं इतना मूल्यिान मानते ेहैं। एशिया और अफ्रीका में जो आिक्न्त है िह इस बात का रमाण है कक रजातन्त्र रगतत कर रहा है, मर नहींरहा है। यदद हम अपने इस कथन में सचमुच विश्िासि रखते ेहैं कक सभी मानि समान पैदैा होते ेहैं तथा सभी व्यक्तत जातत, धम,स रजातत एिं राष्र की शभन्नता के बािजूद जीिन, स्िातिन्त्र्य तथा आनन्द के माग सपर चलने के समान अगधकारी हैं; यदद हम धम सके इन शसद्धान्तों को गम्भीरतापूिकस मानते ेहैं कक हम एक-दूसूरे के शलए हैं और ईश्िर में यहूूदी या मूततपूसजकों, यूनानी या बबरस का कोई भेद नहींहै; यदद हम संयुतत राष्र के चाटसर के शसद्धान्तों की पूतत सके शलए उत्सुक हैं; यदद रजातन्त्र में हमारी तनष्ठा केिल ऊपरी नहीं ंहै, अवपतु हाददसक है तो उन समस्याओं के रतत हमारा आचरण बबल्कुल दूसूरे ही

---

21 आर आर विल्स (बोब्रुक स्कूल), प्यूवपलटन, िारसेस्टरियर: 'लन्दन टाइम्स ',5 अरैल ' 1754।

रकार का होगा, जो आज दुतुनया को विभाक्जत ककए हुए हैं। तब हम उन लोगों के साथ खड़े ेहोंगे ेजो औपतनिेशिक पराधीनता, आगथकस उत्पीड़न तथा रजातीय-रेशियल-भेदभाि से पीडड़त हैं और हम उनकी ि कदठनाइयााँदूरू करने में उनकी मदद करेंगे,े जो उनके जीिन को पंगु ककए हुए हैं। ये समस्याए ाँऐसी हैं जो साम्याद से स्ितिन्त्र हैं। ि स्िाभाविक, दिी और उगचत हैं। हमें एशिया एिं अफ्रीका की दशलत जाततयों के विद्रोह एिं िाक्न्तयों का तनभयस होकर सामना करना होगा। यदद इसके विपरीत हम िोकों की रक्षा और िोवर्तों की तनन्दा करेंगे;े यदद हम वििाल जन-समूहों का बलात् ्एिं भयपूिकस िासन करने का उपिम बनाए रहेंगे;े यदद हम संसार के तनरानन्द, दुःखी लोगों को आिा एिं विश्िास से रदहत रखने ेमें एक-दूसरे की रततयोगगता करेंगे,े तो विश्ि की पररक्स्थतत के शलए स्ियं ही क्ज़म्मेदार एिं तनन्दा के पात्र होंगे। यदद सम्पूण सविश्ि एक दबाि के नीचे ेजी रहा है तो िह शसफस इसशलए कक हम ठीक बात करनेमें दहचककचाते ेऔर समझौता करते ेरहते ेहैं।

बबना कीमत चुकाए हुए हमें िाक्न्त नहींशमल सकती। कीमत शसफस उन्हें चुकानी है क्जनके पास देनेके शलए कुछ है। क्जनके पास सिा है, सम्पवि है: उन्हें अपनी सिा का रयोग लोगों को दिाने और धन का रयोग उनको भ्रष्ट करने के शलए नहीं ंकरना चादहए। सिा और सम्पवि राष्रों से भी उसी रकार विदा हो जाती हैं क्जस रकार ि मनुष्यों के हाथ से तनकल जाती हैं। असीररया, िैबेबलोन, िीट, शमस्र, यूनान, रोम एिं स्पेन के उदाहरण हमारी आखोंाँ के सामनेउठ खड़ेहोते ेहैं। एक राष्र जो कुछ सब राष्रों की सिश्रेेसष्ठ विरासत के शलए दान करता है- सादहत्य के शलए, कला के शलए, विज्ञान के शलए, िासन के शलए, स्ितिन्त्र्य एिं रजातन्त्र के शलए, उसी से िह जीवित रहता है।

राष्रीय एिं िैचाररक संघर्षों में हमें खतरनाक सैतनक समाधान नहीं, िरन् ्स्थायी मानिीय समाधान खोज तनकालना चादहए। हम संसार के लोगों को काले ेऔर गोरे में नहींविभाक्जत कर सकते। ये तीव्र रजाततगत भेद, जो मानिता के महत् ्खण्डों के शलए घृणा की भािना जगाते ेहैं, मानि-सम्बन्धों के शलए पयाप्सत नहींहैं। रत्येक दि के सामान्य मानि हमारी तरह ही होते ेहैं, मामूली इंसान, जो अपनेदैतनक काम पर जानेकी इच्छा रखते ेहैं; अपनेबच्चों के शलए जो कुछ अच्छे-से-अच्छा हो सकता है, करते ेहैं; अपना बाग-बगीचा लगाते ेहैं और अपनेपड़ोशसयों के साथ िाक्न्त सेरहते ेहैं। यदद उनमें से कुछ स्िेच्छा से अपनी सरकारों के हाथ अस्त्र बन जाते े हैं, तो उनसे ेकहीं ंज़्यादा लोग अतनच्छापूिकस उनके शिकार होते ेहैं। जो हमारे विरुद्ध हैंउनको भयानक विपवि की धमकी देने के बदले,े हमें उनकी उच्च रकृतत को ऊजक्सस्ित करना चादहए। हम भले एक-दूसरे को प्यार या पसन्द न करें, परन्तु हम एक-दूसरे से, कम-से-कम, बात तो करें, एक-दूसरे को समझने की कोशिि तो करें। हमें दूसरों के स्थान पर अपनेको रखना सीखना होगा, और यह अनुभि करना होगा कक उनके मन में तया आता है।

यह स्मरण रखना अरासंगगक नहींहोगा कक िूत अक्न्तम विजय का, जीिन द्िारा मृत्यु के तनगल शलए जानेका गचह्न है। यह घोवर्त करता है कक समझदारी और करुणा आग और तलिार hat H कहीं ंज़्यादा क्तिमान हैं। 'विनीत लोग भानयिान हैं,'ि– जो सहनिीलता, विनम्रता, समझ और रेम रखतेहैं।

ईसा ने कहा: "मेरे वपता के घर में अनेक हिेशलयाँ हैं।" ककसी राष्र को यह मान लेने की आिश्यकता नहीं ं

है कक उसे ेईश्िर ने राणणयों पर िासन करने के शलए बनाया है। यदद ऐसेलोग हैं जो हमसे शभन्न विचार रखतेहैं तो हमारा कतवव्सय उनसे ेलड़ना नहींहै बक्ल्क पुनतनमसाणस में उनकी सहायता करना, उनकी आखोंँ खोलना, उन्हें उनके कायिसम की अनुत्पादकता ददखाना और उन्हें मानिात्मा के समृद्ध क्षक्षततज से पररगचत कराना है। हो सकता है कक हमें बहुुत ज़्यादा विर्द्िेऱ् और अपकथन का सामना करना पड़ेककन्तु जीिन की रजासिाक रणाली का तकाज़ा है कक हम, उदारता और समझदारी से काम लें। कीतत सयुद्ध में नहीं, मेल-जोल में है। चूँकक संसार की कोई सरकार यह नहींचाहती कक हम सब एक सितसनष्ठ दुघुटसना के शिकार हों, इसशलए हमें समझौते ेकी कोशिि करनी ही चादहए। यदद समझौता असम्भि है, तो िाक्न्त भी असम्भि है, ककन्तु िाक्न्त का अशभराय ित्रु के आगे े कन्धेडाल देना नहींहै। समझौता तुष्टीकरण नहींहै; न बम गगरानेमें कोई राजनीततमिा है।

बबना कम सके तनष्ठा ररतत है। हम उन लोगों को तो रजा-सिात्मक स्ितन्त्रता देने को तैयैार नहींहैं जो उनसे ेरदहत हैं। हम अपने विरोगधयों, ित्रुओं के साथ व्यिहार करने में रजाताक्न्त्रक भािना अपनानेको तैयार नहींहैं। यदद विश्ि में बबरसता का रसार रोकना है तो अपने ही आदिों के रतत हमारी जो अतनष्ठा है, उससेहमें बचना होगा।

जैसा कक फ्रांसीसी कहाित है, युद्ध इतना महत्त्िपूण सहै कक उसे ेसेनापततयों के हाथ में नहींसौंपा जा सकता, िैसेही कहा जा सकता है कक िाक्न्त इतनी नाजुक चीज़ है कक िह राजनीततज्ञों के हाथ में नहींसौंपी जा सकती। एक ऐसे सािदेसशिक या विश्ि-समाज की रचना के अपनेशमिन के रतत रज्ञािानों को जागरूक होना चादहए जो सचमुच मुतत और रजातन्त्रात्मक हो और क्जसका आधार मानिता की अनघ्यतसा हो। हमारे युग की िेदना से समस्त मानि जातत की एक नई एकता जन्म ले रही है क्जसमें मानि की मुतत रेरणा को िाक्न्त एिं सुरक्षा राप्त होगी। यह हमारी सामथ्य सके अन्दर है कक हम उस भय का उन्मूलन कर दें जो मानिता को आच्छाददत ककए हुए है और भािी विनाि से दुतुनया को बचा लें। इसके शलए हमें मन को सािभसौम साचेंँमें ढालना पड़ेगा: मन, जो जाततयों को एक-दूसूरे सेपररगचत करानेऔर एक ऐसी तनष्ठा को विकशसत करने में समथ सहो, जो भय का एकमात्र रततरेिधक है। हमारी सभ्यता के रतत जो संतंजनसा है, उसका सामना चेतना के गहनतर स्तरों पर ही ककया जा सकता है। यदद हम सिा और आत्मभािना (क्स्पररट) के बीच के संघर् सको शमटाने ेमें असफल होते ेहैं, तो हम उन िक्ततयों द्िारा नष्ट कर ददए जाएगेंँ क्जनका सृजन करने का ज्ञान तो हमें था ककन्तु उन्हें तनयक्न्त्रत करने का वििेक न था। इस निीन रयास के शलए हमें धाशमकस साथकसता की चेतना की आिश्यकता है।

ऋनिेद में, जो हमारी सबसे राचीन सादहक्त्यक कृतत है, हमें उस रारक्म्भक काल के भारत का चेहरा ददखाई पड़ता है जब यह उर्ा काल ही था, क्जससे ेरकािमान ददन का उदय हुुआ है। उन रारक्म्भक लेखेकों के शलए सादहत्य आध्याक्त्मक साधना का पररणाम था, क्जसमें मनोभािों का पररष्करण एिं ंसमस्त स्िाथिमूसलक भािों का ततरोधान है। यह अनुभि ऐसेज्िर के समान है क्जसमें मन आग में रज्िशलत हो रहा है और आत्मा उत्फुल्ल है। िे सादहक्त्यक कलाकार, जो अपनेमन एिं हृदय में मुतत हैं, उस अज्ञात विश्ि-ऐतय के रितता हैं जो

भय, लोभ एिं घृणा पर नहीं, अवपतु उस िस्तु पर आधाररत होगा जो मानि में िाश्ित है-भािना, जो पुण्य की भूखी-प्यासी है, और क्जसे ेसुनना ही होगा।

सिाभसौम ब्रह्म जागततक उपिमों को लाघँ जाता और आनुभविक जगत ्की श्ेरेणणयों को पार कर जाता है। इसीशलए इसे ेअतनिचसनीय तथा अगचन्त्य कहा गया है। यह अरूप है, कफर भी समस्त रूपों का स्रोत है। नैसगगकस छोर सेब्रह्म-जगत्पतत, नटराज, बन जाता है।

नटराज की मूतत सर्िावििुद्ध, तर्निवैसर्, सिा का, जो मूतत सके पीछे पदे के अन्दर खड़ी है और क्जसके सामने बेलपत्रों की एक माला टाँगी हुई है, रतीक है। नटराज समस्त ब्रह्माण्ड के स्िामी का राकय् है। िह वििुद्ध ब्रह्म से शभन्न, उसके अितरण का पररपूण सविग्रह है और लय, किया तथा गतत का रतीक है। ईश्िर एक सजकस कलाकार है।

जहा ाँतक अशभव्यक्क्ततयों की बात है, विशभन्न पक्ष विशभन्न रतीकों द्िारा रकट ककए गए हैं। इससे पूजा के अन्य रकारों की स्िीकृतत की गुंजाइि है। एक मध्यकालीन भारतीय रहस्यिादी सन्त ने शलखा है: "विशभन्न दीपकों में विशभन्न रकार के तैल हो सकते हैं, िविकसाए ाँभी विशभन्न रकार की हो सकती हैं ककन्तु जब िे रज्िशलत की जाती हैं तो हमें एक समान लौ और रकाि शमलता है।" राह कोई भी हो, यदद हमारा रयत्न सच्चा है, तो हम मंक्ज़ल पर, लक्ष्य पर पहुुँच जाते ेहैं।

सच्चा धम सिह नहीं है जो हम बाहर से, ग्रन्थों सेऔर शिक्षकों से राप्त करते ेहैं। हम अभ्यासि जो कुछ ग्रहण करते ेहैं, उस दैतनक काय ससेधम सका सम्बन्ध नहीं ेहै। यह रत्येक मानिात्मा की उत्थानेच्छा है, यह जो अपनेको ककसी व्यक्क्तत के अन्तर में उद्घादटत करती है; जो ककसी के जीिन-रतत से तनशमतस होती है। यह हमारी रकृतत की तनष्पवि है, क्जसमें ऐसा आनन्द है जो जगत् ्की सेिा के शलए उमड़कर बहने लगता है।

नन्द 63 रशसद्ध िैभततों में एक थे। यद्यवप िह जातत-बदहष्कृत थे ेककन्तु अपनी रगाढ भक्क्तत से 'नायनार' हो गए और एक सन्त के रूप में पूजे ेजाते ेहैं। ऐसे लोगों की मदहा से धरररत्री उज्ज्िल एिं रकाशित होती है-ऐसेलोगों की जो अल्पारम्भ सेउठकर भक्क्तत की उच्च भूशमकाओं पर पहुुँचते हैं। नन्दनार की कथा रकट करती है कक जातत-अजातत की भेद-रेखा, िास्तविक धाशमकस राणी के शलए, बबल्कुल असमथनसीय है।

हम गचदम्बरम (दक्षक्षण भारत) में जागततक तनरथकसता की अस्िीकृतत पाते हैं; यहााँपूजा-अचनसा के विविध रकारों को उगचत मान्यता शमली है; यहााँमानिीय समानता और विश्ि के ऊध्िसविकास में सहभागी होने पर जोर ददया गया है। ये हमारे पूिसजों के विश्िास और ऊध्िाकिसांक्षाए ाँहैं, कफर हममें से कुछ लोग उनके रतत चाहे ककतने ही तनष्ठारदहत रहे हों। यही अतनष्ठा, यही शमथ्या आत्मतुक्ष्ट, यही स्िच्छन्दता हमारी सामाक्जक रचना की दुबुलसता के शलए उिरदायी है। हमें सामाक्जक, आगथकस एिं रततकिया की तनरंकुि िक्क्तत के विरुद्ध

आिाज़ उठानी चादहए। जब हम अपनी आन्तररक अपयाप्सतताओं को तनकाल बाहर करेंगे, तभी मानि-कल्याण में महत्त्िपूण सभाग लेना हमारे शलए सम्भि होगा।

3. धमों की आधारभूत अन्तदृक्सष्ट

संसार की ितमसान संकटपूण सविभाक्जत अिस्था में कदागचत् ्हमें धमों में एक ऐसा उच्चतर बन्धन शमलेगा, जो राष्ट्रों को परस्पर तनकट लानेिाला शसद्ध होगा। िैज्ञातनक रगतत को धन्यिाद है कक दूररया ाँकम हो गई हैं और यातायात में विकास हआ है। इस शमटते ेजगत् ्की महिम घटना पूि सकी कलाओं, सादहत्यों एिं धमों का आविष्कार है। यदद हमें अपना विकास सािभसौम समाज के रूप में करना है तो हमें उन दीिारों को तोड़ना होगा जो पूि सऔर पक्श्चम को अलग ककए हुए हैं और उनकी जगह समझ के पुलों का तनमाणस करना होगा। समय िुभ है। हमें संकल्प एिं रयत्न की आिश्यकता है।

धमों तथा अतीतकाल में उनके पारस्पररक सम्बन्धों का िैज्ञातनक अध्ययन हमें यह अनुभि करने में सहायता करता है कक धमों में िही धम ससच्चा और िास्तविक है जो विशिष्ट और ठोस है। धमों की विविधता का आनुभविक तथ्य, जहा ाँरत्येक धम सकी अपनी विशिष्ट रकृतत है, अपना ढाचाँा है, धमों की सितसतिायी एकता को हमारी आखाँों से ओझल नहीं कर सकता। मानि जातत के जीवित धमों में जो रमुख भेद हैं, उनके ऊपर उठा हुआ, दृक्ष्ट एिं ातात्पय सका मूलभूत ऐतय है, जो समस्त मानि-जातत को अपनेअंक में ले लेता है। यदद हम रोमन कैथशलक से लेकर तिेकर सम्रदाय तक के ख्रीष्टीय विचार की विशभन्न रणाशलयों के बीच, या यूतनटेररयन चच स से लेकर सैल्िेिन आमी के बीच एक सितसनष्ठ आधार खोज सकते हैं तो तुलनात्मक धम सके विद्याथी धमों का एक सामान्य आधार ढूाँढ लेंगे।े मानि की उद्धार न की जा सकी पररक्स्थतत, मुक्तत की लालसा, परमात्मा की स्िीकृतत और उसे ेराप्त करने के अनेक माग सभी धमों में शमलते ेहैं।

सब धम सस्िीकार करते ेहैं कक मनुष्य अपनेसेककसी महिर के सामनेहै, जो मानि-रकृतत तथा अन्य सब गोचर पदाथों के रततकूल, तनवििसेर् सि है। यह घटनाओंके जगत् ्के पीछे एक अत्युत्कृष्ट, ईश्िरीय, जीितर सि है। ईश्िर जीि का रथम शसद्धान्त है; िह सम्पूण सअक्स्तत्ि का स्रोत और सार है।

यह परम सि या परमात्मा, क्जसके शलए मनुष्य प्यासा है, तनवििसेर् कल्याण भी है। मनुष्य को न केिल उसके होनेके ज्ञान की आिश्यकता है िरन् ्उसके साथ सम्पकस एिं सामञ्जस्य स्थावपत करने की भी आिश्यकता है। इसी ित सके कारण मनुष्य जगत् ्में विश्राम का अनुभि करता है। ईश्िर ही जो सिोच्च सत्य, पुण्य, सौन्दय सएिं रेम है, मानि का सबसे बड़ा कल्याण है। हम जो नहींजानते,े उसे ेभी िह जानता है; िह हमारे रेम करने की िक्तत के बाहर रेम करता है और जब हमारे लड़खड़ातेहुए यत्न असफल हो जाते ेहैं तब भी कल्याण की उपलक्धध की गारण्टी करता है।

यह अनुभितीत सि (परमात्मा) मानित्मा में अन्तभूतस है। मानित्मा की जड़ ईश्रित् है। उपतनर्द् के कथन 'तत्त्मिशस' में इसी ईश्रिीय सिान्सतयाशसमत् का संकेंत है। बुद्ध का तत्त् रत्येक राणी में तनदहत है। ईसा के अनुसार, 'ईश्रि का राज्य तुम्हारे अन्दर है।' सन्त पाल के शलए मानिता परमात्मा का मक्न्दर है। सन्त आगस्टाइन के शलए ईश्रि 'मेरे अन्तरतम राण से भी अगधक अन्तरंग है।' ईसाई रहस्यिादी 'मानित्मा' की भूशम में ईश्रि के जन्म' की बात करते ेहैं। यह द्वितीय आदम का शसद्धान्त है। ईसा मानिों की एक नई रजातत की रथम सन्ततत थे। कुरान कहता है कक ईश्रि हमारे कण्ठ की धमनी से भी हमारे अगधक तनकट है।

हि बाह्य मानित्मा में उसकी गुप्त भूशम के रूप में उपक्स्थत रहता है और िाश्ति तथा अिाश्ति के बीच पुल बनाता है। रत्येक मानित्मा में जो ईश्रिीय स्फुशलंग है उसी से मानिीय रेरेणा की महिा, सजकसता तथा असीमता उद्भूत होती है। आत्मा आिश्यकता और काल के दबाि से छूट सकती है। जिी अंततः तनयत, तनक्श्चत है तथा अंततः तनश्चयकारी है। इसमें सृजनात्मक िक्तत है चूँकक मनुष्य ईश्रि का एक स्फुशलंग है, उसमें सृजनात्मक स्िातन्त्र्य है। सत्य में अन्तदृक्ष्ट मानिीय सुख की नींि है। मनुष्य को पूणोपलक्धध त्याग, रेम एिं सेिा के द्िारा होता है। अपनी आिश्यकताओंके रतत अनासक्तत एिं िस्तुपरकता विकशसत करने और दूसरों की आिश्यकताओंके रतत रयाप्त करुणा रखने ेसे हम ईश्रि-समत् की ओर बढतेहैं। महायान बौद्धधम स में कहा गया है कक महाकरुणागचिम् ्ईश्रिता का आन्तररक तत्त् है और ऐसा हृदय सबके शलए खुला होता है। जिात्मा (क्स्पररट) की िास्तविक सिाभसौशमकता बहुज्ञता में नहीं, दूरू तक रेम करने में है। उत्सग,स ध्यान, राथनसा ईश्रि से शमलने में सहायता करतेहैं। सन्त लोग 'तनरन्तर राथनसा करते ेहैं, ऐसा सन्त पाल ने कहा है। ओररगेन के अनुसार उनका समस्त जिीन 'नैरन्तर राथनसा है।' इसके द्िारा हम न केिल ईश्रि तक पहुुँचते हैं िरन् ्मनुष्य के हृदय में ईश्रि का रादुभाुस देखते हैं। जब सत्य में अन्तदृक्ष्ट राप्त हो जाती है, िासनाएँपराभूत हो जाती हैं; दुभाुसना शमट जाती है तथा अन्तःसंघर् सिान्त हो जाता है। जब हमारे अन्दर की गचनगारी मुतत हो जाती है तो हि अक्नन का रूप धारण करती है और संसार को स्िच्छ करती है। यह मुतत तभी हो सकती हैं जब हम अपने संकुगचत अहं, लोभ, िोध, घृणाा सब रकार की बन्धनकारी बुभुक्षा एिं िासनाओंको, जो व्यक्तत को उसके मरणिील जिी के अन्दर बन्द कर देती हैं, समाप्त कर देते ेहैं। रत्येक धम सपूणतसा के शलए एक सीढी देता है क्जस पर हमें यलपूिकस चढना है। आत्मोपलक्धध का माग सककसी याक्न्त्रक चलसोपान की भातँत नहींहै, जो चढते ेही हमें, विना हमारे रयत्न ककए ही, शसरे पर पहुुँचा देता है।

मोक्ष या तनिाणस िाश्ति जिीन सेपलायन नहीं है, िरन् ्जिीन की पररपूण ससम्भािनाओंकी शसद्गध, व्यक्ततत् की पूणतसा है। धम सकेिल ईश्रि तक जानेका माग सनहीं, मनुष्य को पाने का माग सभी है। यह केिल ध्यान, या जैसा कक प्लादटनस ने कहा था, 'एकाकी का एकाकी से युद्ध' नहीं ेहै। यह सकिय सेिा का माग सभी है। बोगध राक्प्त करने के बाद, बुद्ध ने लोगों को उस पवित्र सत्य का उपदेि ककया, जो उन्हें राप्त हुआ था। सुितनपात कहता है कक रेम की कोई सीमा नहींहै। 'जैसै ेकोई मा ाँअपने एकमात्र शििु की अपने रेम से रक्षा करती है, उसी रकार बुद्ध के शिष्य सिरसाणणणयों के रतत असीम रेम रखते ेहैं।'

संसार सेदूरू रहने में एक रलोभन भी है। एक मुक्स्लम सन्त गंगोह िाले अधदुलुकुदूसू, शलखतेहैं, "अरब के मुहम्मद सिोच्च स्गि सतक चढकर लौट आए। म ैंईश्रि की िपथपूिकस कहता हूाँ कक यदद म ैंिहााँतक पहुाँचा होता, तो हगगज़स लौटकर न आता।" इस संसार का तनर्ेध धमों की मुख्य रृविृ नहींहै। मीस्टर एकहाटस ने घोवर्त ककया कक यदद कोई अपने परमानन्द में ककसी ऐसे रुनण मानि को देखता है क्जसे िौरबेकी ज़रूरत है तो उसके शलए ज़्यादा अच्छा है कक अपनेपरमानन्द का त्याग करके उस मनुष्य की सेिा करे।

लाओ-त्से ेकहता है, "हमें अपने रततद्न्द्िी को 'दया एिं भलाई' के साथ जिाब देना चादहए।" महाभारत में कहा गया है, "जब कोई ित्रु तुम्हारे घर में रििेश करे तो उसे ेउगचत आततथ्य ददया जाना चादहए। कोई िृक्ष ऐसेलोगों सेभी अपनी छाया नहींहटाता, जो उसे ेकाटने ेके शलए आते ेहैं।" मनुष्य तब तक गततिील रहने के शलए बाध्य है जब तक जागततक रततकिया सम्पूण सराणणयों की मुक्तत के अपने लक्ष्य को राप्त न कर ले।

धमात्समा लोग जगत् ्का सांसं्काररक या कमकसाण्डीय दृक्ष्टकोण ग्रहण करते ेहैं। यह जगत् ्मनुष्य का कोई व्यक्ततगत स्िप्न नहीं ंहै। जो कुछ यहा ाँहै और जो कुछ इसके परे है, उन दोनों के बीच कोई अलंघ्य खाई नहीं ं है। हमें कालिोर तक पहुाँचने के शलए इस काल-सीशमत जीिन को त्यागनेकी आिश्यकता नहींहै। ईश्रि यहााँभी है और यहा ाँके परे भी है। एकहाटस ने ऋवर् का िणनस करते ेहुए कहा है, 'िह सूय समें दृक्ष्टपात कर लेनेके पश्चात् ्उस सूय सको रत्येक िस्तु में देखता है। फातस ने ज्ञान होने के बाद पाया कक 'जो कुछ िधद कर सकते हैं, उससे परे समस्त सृक्ष्ट में दूसूरी ही गन्ध है।' धमात्समा व्यक्तत इस जगत् ्में, उसके सम्पूण सआघातों को, मन एिं हृदय की िाक्न्त के साथ सहन करते ेहुए चलता-कफरता एिं काम करता है। जीिन की विर्मताओं के बीच िह समान स्िभाि बनाए रखता है।

आध्याक्त्मक अन्तदृक्स्ष्ट, आन्तररक पवित्रता राप्त करने के शलए कुछ आचार एिं रीततयााँबताई गई हैं। परन्तु पुराण, रीतत, पंथ एिं पूजा तथा मत केिल धम सके बाह्य िा पदाथतसनष्ठ पक्ष का तनमाणस करते ेहैं। विशभन्न धमों में ये शभन्न-शभन्न हो सकते ेहैं परन्तु इन सब छद्म पररच्छेदों के अन्दर धाशमकस रज्ञा राप्त करने की रृविृ है। जो लोग इततहास की एक विशिष्ट अिस्था में हैं, उन तक सािभसौम सत्य पहुाँचाने के शलए हमें इन रूपों या रकारों को स्िीकार करना होगा। जो कुछ िाश्ित एिं सािभसौम है, उसे ेऐसे ेरूप में अनूददत ककया गया है जो अस्थायी एिंस्थातनक है। परम्परा एिं पररिेि सा के दिनस एिं उसके रकािन दोनों को सीशमत करते ंहैं। ये अशभव्यक्ततता ाँक्स्थर नहीं रह सकतीं। सत्य ऐसा पदाथ सनहींहै कक एक बार सदा के शलए कह ददया गया हो। सत्य अपनी रेरणा एिं रोत्साहन में ईश्िरीय हो सकता है ककन्तुिह होता है सदा मानिीय रूप में। रोफेसर ए० एन० व्हाइटहेड कहते ेहैं : "बाइबबल के साथ कदठनाई उसके व्याख्याकारों की रही है, क्जन्होंने असीमता के भाि को ससीम शसद्धान्त में गगराकर बन्द कर ददया है और 'न्यूटेस्टामेंट' (बाइबबल) का रथम भाष्यकार, पाल, तो सबसे िाददहयात था।"[22]

22 'डायलानस ऑफ ए० एन० व्हाइटहेड'।

"उनके फलों (कायों) से तुम उन्हें जानोगे,े उनके विश्िासों से नहीं।" हमें सभी धमों में रेम एिं त्याग, सच्चाई एिं िफादारी की भिाना शमलती है। सिानारोला ने अपनेशिदेशसयों से कहा था : "यहूदी एिं तुकस ईसाइयों की अपेक्षा अपनेधम सका कहीं ंअच्छी तरह पालन करतेहैं। क्जस रूप में तुकस ईश्िर के नाम की गिाही देते े हैं, उससेईसाइयों को शिक्षा लेनी चादहए।" लेशेसंगं ने अपने ग्रन्थ 'नाथन, दद िाइज़' में शलखा है : "नाथन, नाथन, तुम ईसाई हो; ईश्िर की िपथ, इससे अच्छा ईसाई कोई हुआ नहीं।"[23]

सभी धमों के सन्त एिं भतत शमलकर ईश्िर की एक महती अदृश्य जातत का तनमाणस करते ेहैं। यद्यवप िे भूगोल एिं इततहास की विशभन्न क्स्थततयों से आते ेहैं ककन्तु उनका इन आधारभूत अन्तदृक्सष्टयों में एक समान भाग होता है। िे अपनेविचारों में, अपनी भक्तत में विशभन्न हो सकते हैं ककन्तु ईश्िर-सम्बन्धी अपनी दृक्ष्ट में सदा एक रहते ेहैं। जो फूल िे पूजा में चढाते ेहैं, िे अनेक रकार के हो सकते हैंककन्तु पूजा तो एक ही होती है। उनके विचार में क्टरता और असदहष्णुता आध्याक्त्मक अशभमान तथा पथभ्रष्टता के पररणाम हैं। यदद हम स्िततन्त्र्य के उच्चतर स्तरों की ओर रगतत करना चाहते हैं तो हमें 'जीिात्मा' के बन्धनकारी अहंकार से दूरू हो जाना चादहए। ककसी धम सका दूसूरे धमों से सम्बन्ध िही नहींहोता, जो झूठ और सच का होता है, तयोंकक िे सब एक ही सत्य के विविध रूप-चेहरे-हैं; एक ही व्यक्तत के विशभन्न छविगचत्र हैं। सन्त यदद दूसूरे विचारों को ठीक नहीं ं समझते ेतो भी उसे ेसहन कर लेतेहैं। पवित्रतािादी साधु ईज़ाक पेतनंगंटन ने कहा है: "शसिाय अक्न्तम के, सब

---

23 श्री मिा सनाम के एक योनय िकील बहुत िर्ों तक मद्रास में रहे थे। उन्होंने शमिनररयों से कहा था कक िे दहन्दुओं को उपदेि देनेकी अपेक्षा उनके चरणों में बैठकर कुछ सीख सकतेहैं। सच तो यह है कक उन्होंने दहन्दुओं और उनके धम सका जो गचत्रांकन ककया है, अत्यन्त उत्साही दहन्दू ूभी उसका अनुकरण करना चाहेगा :
"जब म ैंअपनी आखेँ उस देि की ितमसान अिस्था अथिा पुरातन मदहमा की ओर फेरता हूँ; जब म ैंउसके भिनों, वििाल पैमाने और विस्तार पर बने उसके सरोिरों पर ध्यान देता हूँ जो धरती पर उत्पादकता एिं बाहुल्य बबखेरते ेहैं; जब मैं परोपकाररता से पूण सउसके उन स्मारकों को देखता हूँ जो सुदूरू युगों तक अपनी अिधानता का विस्तार करते ेहैं; जब म ैं मक्न्दरों के ठोस एिं अलंकृत स्थापत्य, िस्त्र-तनमातसाओं की विदद कला, उसके धाशमकस एिं सांसाररक सादहत्य, उसकी तड़क-भड़क और मीनाकारी िाली मृदूभाण्डकला (क्जस पर एक उद्दाम एिं अशमतव्ययी कल्पना नेअपनी सम्पूण सउदारता उँडेल दी है) को देखता हूँ; जब म ैंउन दिातसनकों, विगधििेताओंएिं नीततिेिाओंकी ओर मुहँ फेरता हूँ, जो िासनाओं को अनुिाशसत करने ेऔर जो पापाचार बब्रदटि राज्य को डािाँडोल ककए हुए हैं, उनका तनराकरण करनेके शलए राजनीतत एिं नैततक रज्ञा का चमत्कार छोड़ गए हैं; जब म ैंकुटुम्बों के िाक्न्तपूण सएिं समन्ियात्मक सहजीिन को देखता हूँ, जो गाहसस्थ धम सके सद्गुणों द्िारा सुरक्षक्षत हैं; जब म ैंएक रसन्न एिं सुव्यिक्स्थत समाज में धम सएिं ंसदाचार के िुभ एिं मृदुलुकारी रभाि को देखता हूँ उदार एिं पररष्कृत श्रद्धा पर आगश्रत शिष्टाचार रणाली तथा सामाक्जक जीिन की सतह को सरल एिं ं अविकृत रखने का ढंग देखता हूँ-तो ऐसेलोगों को सभ्य बनाने या धम-सपररितनस करानेके शलए पादररयों के भेजे जानेतथा उनके द्िारा उन संस्थाओं को विकृत करने ेके रयत्न को म ैंबिना भयशमगश्रत आश्िय सके नहींदेख सकता-ऐसी संस्थाओं को विकृत करने ेका रयत्न, क्जन्हें परमात्मा नेउन्हें गुणिान एिं सुखी बनानेके शलए तनणीत ककया था।" -पी० टामस, 'किक्श्चयंस ऐण्ड किक्श्चयैतनटी इन इक्ण्डया एण्ड पाककस्तान' (1954),

सत्य छायामात्र हैं। ककन्तु रत्येक सत्य अपनेस्थान पर तत्त्‌िया सार है, कफर चाहे िह दूसूरे स्थान पर छाया-मात्र ही हो। और छाया सच्ची छाया है, जैसे ेकक तत्त्‌सिच्चा तत्त्‌है।"

सभी धम ससच्चे ेधम सके तत्त्‌ीकी विविध अशभव्यक्ततयााँ हैं। जो ईश्‌िर के अक्स्तत्‌िको मानते ेहैं, ि भी ईश्‌िर के विर्य में मानिीय विचारों की अपयाप्सतता को स्‌ीकािर करते ेहैं। नाक्स्तक क्जस चीज़ से इन्कार करता है, िह स्‌यिं ईश्‌िर नहीं, ईश्‌िर का विचार-मात्र है। आक्स्तक क्जस चीज़ को स्‌ीकािर करता है, िह ईश्‌िर का विचार नहीं, स्‌यिं ईश्‌िर है। जो पररपूणतसा, तनर्विेसर्ता, रकिैलता परमब्रह्म की है, उसे ेउसके ऐततहाशसक रूपान्तरों के पास हमें हस्तान्तररत नहीं करना चादहए।

कफर धमों की भी अपनी ििििली होती है। उन्होंने दूसूरों से बड़ी उदारतापूिकस ग्रहण ककया है। धम सका आधुतनक रत्यक्षिाद धाशमकस रततभासों, रीततयों, रणाशलयों एिं नैततक मार्गों की दुतुनया की आश्चयजसनक समानताओं की ओर इंगगत करता है। ईसाइयों के कुमारी से जन्म, त्राणकतासईसा के मरण एिं पुनर्जीिन, पवित्र ग्रन्थ की रेरणा, दया की सक्षमता, सुशमरनी का उपयोग, दरतनटी (बत्रदेि) की धारणा, ईश्‌िरराज, पौरोदहत्य, मठों का िैरागी जीिन आदद बातें अनेक धमों में पाई जाती हैं और ककसी एक ही धम सकी विशिष्टता नहींहैं। देिी माता एिं शिशु, यिोदा और कृष्ण, माता मेरी तथा उसके शिशु, दया की बौद्ध देिी तिानोन हमें ऐसेरततबबम्ब की याद ददलाते हैं क्जसके सामनेसम्पूण समानिता ने नमस्कार ककया है। ईसाई धम सके विर्य में बोलते ेहुए हरबटस जे० मुलर कहते ेहैं: "उद्धारक या त्राता की केन्द्रीय मूतत सकम- से-कम उतनी पुरानी तो है ही क्जतना रारक्म्भक यूनातनयों का रीटोज़ सोटर है और िैयक्ततक अमरता का उसका आश्‌ासिन तो उससेभी पुराना, कालरदहत शमस्र के इततहास को रततध्‌तिनत करनेिाला है। बैविलोतनया से स्‌गि सएिं धरती के तनमातसा के रूप में ईश्‌िर की धारणा, फारस से िैतान और परमात्मा की द्‌ैतिभािना, शमस्र सेअक्न्तम फैसला, सीररया से एडोतनस के पुनर्जीिन का नाटक, फ्रीक्जया सेमहामाता तथा यूनान और रोम से सािभसौम विगध (कानून) की भािना आई है। अत्यन्त राचीन काल से, क्जसका अनुमान करना भी कदठन है, उसका बक्प्तस्मा तथा सम्पकस (कम्यूतनयन) की बातें आई हैं। विविध रहस्यसूत्रों से इसकी उपासना की बातें- धूपबिी, पररधान, मनका पवित्र जल, जानुनतत तथा मन्त्रोच्चार-आई हैं। इस राचीन एिं सािदेसशिक विरासत के बबना ईसाई धम सविश्‌-धिम सहोनेके अपनेदािे ेको िायद ही स्थावपत कर पाता ।"[24] अपनेउच्चतम रूप में धम सदूसूरे मतों के रतत तनक्श्चत रिंसा का रुख ग्रहण करते ेहैं।

हहन्जदू ूधम म

[24] 'दद यूज़ेज़ ऑफ दद पास्ट', (1954) पृ० 1871

ऋग्वेद से लेकर हमारे समय तक दहन्दू ूगचन्तन ने इसी दृक्ष्टकोण को अपनाया है।[25] अनन्ता ि ि िदाः-िेद अनन्त हैं। उनकी विविध व्याख्याए ाँकी जा सकती हैं। सभी धमिसास्त्रों के रतत महान् ्आदर रखते ेहैं।

धम सके विर्य में बोलते ेहुए गांधीजी ने कहा था : "यह दहन्दू ूधम सनहींहै, क्जसकी तनक्श्चत रूप से म ैंसब धमो से अगधक कदर करता हूाँ, िरन् ्िह धम सहै जो दहन्दू ूधम सको लाघाँ जाता है; जो मानि की रकृतत तक को बदल
देता है, उसे ेअन्तर के सत्य से अविच्छेद्य रूप से बाधाँ देता है और सदा पवित्र करता है।" जब भारतीयों के धमतसनरपेक्षता ग्रहण करने की बात कही जाती है तो इसका यह अथ सनहींकक ि अधाशमकसता या भौततकिाद का समथनस करते ेहैं। ि सब धमों के रतत यह सम्मान रखते ेहैं और सब पैगम्बरों का आदर करते ेहैं। दूसूरे धमो के रतत पकड़, यह िृवि, अपने धम-सविश्िासि को और गहन तथा समृद्ूध बनाती है। सदहष्णुता का अथ सअपने तनज के धम सके रतत उदासीनता नहीं है िरन् ्उसके शलए अगधक वििेक-युतत तथा अगधक पवित्र रेम है। सदहष्णुता हमें आध्याक्त्मक दृक्ष्ट देती है, जो कट्रता से उतनी ही दूरू है क्जतना उिर ध्रुि दक्षक्षणी ध्रुि से है। धम सका िास्तविक ज्ञान, सम्रदाय- सम्रदाय, मज़हब-मज़हब के बीच की दीिारों को तोड़ देता है। दूसूरे धमों के रतत सदहष्णुता के आचरण से हमें अपनेधम सका ज़्यादा सच्चा ज्ञान राप्त होगा।'[26] यह सच है कक दहन्दू ूधम सपूजा-अचनसा के कुछ ऐसेरूपों को सहन करता है जो तकस-बुद्गध की भािना तथा अन्तःकरण की मागाँ के अनुरूप नहींहैं, ककन्तु ऐसा िह इस आिा से करता है कक दहन्दू ूधम सके सामान्य िातािरण में पूजा के ये रूप और ये रकियाए ाँशमट जाएगीं। क्जतनी दूरू तक इसकी आिा थी, उतनी दूरू तक ऐसा हुआ नहींहै। आज एक कहीं ंअगधक स्फूततरसद आध्याक्त्मक जीिन की मागाँ की जाती है।

बौद्ध धम म

बौद्ध धम सतो दूसूरे धमों के रतत अपनेमहत् ्सम्मान के शलए विख्यात है! अिोक ने अपने िासन-काल के दसिें (260 ई० पू०) िर् समें बौद्ध धम सको अंगीकार ककया था और तब से जीिन के अन्त तक िह बुद्ध का अनुयायी रहा। यह उसका व्यक्क्तगत धम सथा और उसने अपनी रजा को इस धम समें पररिततसत करने का रयत्न नहींककया।

---

25 उन्होंने(शििाजी ने) यह तनयम बना ददया था कक जब भी उनके अनुयायी लूट-पाट के शलए जाएाँ तो ि मक्स्जदों को कोई नुकसान न पहुाँचाए।ाँ जब भी उनके हाथ में पवित्र कुरान की कोई रतत आई तो ि उसे ेआदर से रखते थे और अपनेमुक्स्लम अनुयातययों को दे देते ेथे। जब दहन्दू ूया मुसलमानों की क्स्त्रयााँ उनके अनुयातययों द्िारा बन्दी बना ली जाती थींऔर क्स्त्रयों की रक्षा करने िाला कोई उनके साथ नहींहोता था तो िह स्ियं उनकी देखरेख तब तक करते ेथे जब तक उनके सम्बन्धी उन्हें छुड़ाने के शलए न आ जाएं। भारत का इततहास (औरंगजेब के दरबारी इततहासकार ख़फी खां द्िारा शलणखत फारसी वििरण से)

26 क्तलफड समिेंत:स 'दद महात्मा ऐण्ड दद शमिनरी' (1949), पृ.ृ 1311

शिलालेख 12 में अिौक घोर्णा करता है कक "दूसूरों के सब धम सम्मान के योनय हैं। उनका आदर करने िाला अपने ही धम सका सम्मान करता है; साथ ही िह दूसूरों के धम सकी सेिा भी करता है। इसके विपरीत करके िह अपनेधम सको आघात पहुाँचाता है और दूसूरों के धम सकी भी कुसेिा करता है, तयोंकक यदद अपनेधम सके रतत तनष्ठा के कारण या उसकी यिक्स्तिा के शलए कोई अपने धम सकी बड़ाई और दूसूरे के धम सकी तनन्दा करता है तो िह अपने धम सको हातन पहुाँचाता है। इसशलए केिल ताल-मेले ही श्लाध्य है: 'समिाय एि साधु:', तयोंकक ताल-मेल से ही दूसूरों द्िारा स्िीकृत धम सकी धारणा का ज्ञान और उसके रतत सम्मान होता है। सम्रा् वरयदिी इच्छा करते ेहैं कक सभी धमों के अनुयायी एक-दूसूरे के शसद्धान्तों को जानें और उगचत शसद्धान्तों की उपलक्धध करें। जो इन विशिष्ट मतों से सम्बद्ध हैं, उनसे ेकह ददया जाना चादहए कक सम्रा् वरयदिी उपहारों एिं उपागधयों को इतना महत्त् िनहींदेते, े क्जतना उन गुणों की िृद्गध को देतेहैंजो सभी धमों के आदशमयों के शलए आिश्यक है।"[27] िह सच्चे धम सके विकास-सारिृद्गध-का आकांक्षी था।

दहन्दू ूएिं बौद्ध गचन्तन में क्टरता है ककन्तुयह उसका सार-तत्त् िनहीं है। धाशमकस अर्न्िर्ण की गहनता एिं गुण ही िह िस्तु है जो धम सका तत्त् िहै।

यहूदी धम म

यद्यवप यहूदी धम,स ईसाई धम सऔर इस्लाम, क्जनका ऐततहाशसक मूल एक है, ऐसे धम सहैं क्जनकी सामान्य रिृवि अपिजनसा और असदहष्णुता की है, ककन्तुइन सब धमों में विरोधी रकार की रिृवियों के संकेत भी शमलते हैं। धमों की सरलता पर इसरायल के पैगम्बरों ने ज़ोर ददया था। एमोस ने घोवर्त ककया कक यहिा (ईश्िर) रीततबद्ध उपासना नहीं, बक्ल्क न्याय और साधुता की परिाह करते ेहैं। होशिया ने शसफस अपनी पवित्रता पर ही नहीं, ेरेम पर भी ज़ोर ददया है। मीकाह सम्पूण समामलों को संक्षेप में यों रखते हैं: "ओ मनुष्य, उसनेतुझे े ददखा ददया है कक अच्छा तया है; जो कुछ रभु तुझसे चाहतेहैं िह यही है कक न्यायपूिकस कम सकर, दया को प्यार कर और ईश्िर के सामनेविनीत होकर चल।" ईसाया नेयहिा को समस्त मानि-जातत का एकमात्र ईश्िर बना ददया। यद्यवप इसरायली ही उस रभु के चुने हुए (वरय) जन हैं ककन्तु उन्हें चुना इसशलए गया कक िे उसका पररचय समस्त मानि जातत को करा दें। मलाई कहते ेहैं: "सूय सके उगनेसे लेकर उसके डूबने तक मेरा नाम जेण्टाइलों में महत् ्बना रहेगा और हर जगह मेरे नाम के आगे ेसुगन्ध जलाया जाएगा और कोई विशुद्ध िस्तु पूजा में दी जाएगी।"[28] "तया हम सबके एक ही वपता नहीं हैं ? तया हमें एक ही ईश्िर ने पैदा नहींककया है? तब हम एक दूसूरे के रतत बेिफा तयों हैं ?"[29] एक ही दैिी सिा में विश्िास से सब अनुयातययों में यह भाि उत्पन्न होना चादहए कक िे एक ही बबरादरी के हैं और उन्हें एक-दूसूरे के रतत बन्धुभाि रखना चादहए। मलाछी धाशमकस रान्तीयता तथा अपिजनसा का विरोध करते ेहैं।

---

27 'एडडत्स ऑफ अिोक', नीकम एिं मैककककयोन (1958), पृ.ृ 51-52 ।

28 1-111

29 मलाछी 2-10।

खीष्टीय धम म

ख्रीष्टीय धम सयूनान के रहस्यात्मक धमों से बहुत अगधक रभावित रहा है। जो कुछ अनुभि हुआ उसे े विविध रतीकात्मक रूपाकारों में व्यतत ककया गया है। तलीनथेस का सुरशसद्ध भजन यह है :

परमश्रेष्ठ हे रभुिर, होता ककतनेही नामों में तेरा आह्िनि ।
रकृतत-राज तुम, जो अनन्त िर्षों में रहते ेहो समान।
सिसक्ततमय, तनज न्यायादेिों से कर सबको िाशसत ।
क्ज़यस, सभी राणी सब देिों में करते ेतुझको िन्दित ।।[30]

प्लूटाकस हमें बताता है "सभी राष्ट्रों के ऊपर एक ही सूय सऔर एक ही आकाि है, और अनेक नामों के साथ एक ही ईश्िर है।"

रारक्म्भक ख्रीष्ट मत की गोप्य रकृतत थी : इल्यूशसस के रहस्यों से शमलती-जुलती। ओररगेन गुप्त शसद्धान्तों की बात कहता है जो केिल दीक्षक्षत लोगों को ही शसखाए जा सकते हैं। तलीमेण्ट का भी ऐसा ही मत है और डायोनाइशसयस एररयोपेगोइट एकगुप्त एिं मौशलक परम्परा की बात कहता है। सन्त पाल ईसा को केिल अनुश्रुतत से जानते ेथे ेपरन्तु जब िह लोगों को उत्पीडड़त करने के शलए दशमश्क जा रहे थेतब उन्होंनेचकाचौंध करनेिाला िह दृश्य देखा कक पुनजीवित ईसा मसीह आकाि से उन्हें बुला रहे हैं। इस अनुभि ने उनके जीिन को एक नया मोड़ ददया। क्जस रभुको उन्होंनेदेखा, िह त्राता ईश्िर था, क्जसकी तुलना रहस्य-धमों के देिताओं से की जा सकती थी; ऐसा जो मर गया था परन्तु पुनजीवित हो उठा और क्जसके द्िारा मनुष्य अमरत्ि राप्त कर सकता था। जहा ाँईसा ने एक ऐसेईश्िर के राज्य की घोर्णा की क्जसे ेमनुष्य केिल पश्चाताप और साधुतापूण स आचरण से राप्त कर सकता है, िहााँपाल ने शसखाया कक मुक्तत ईसा केिल ईसा के माध्यम से ही हो सकती है। इसके बाद सन्त पाल ने यहूदी धम स(जूडाइज्म) के कमकसाण्डीय अनुष्ठानों से अलग हो जानेका और एक नूतन विश्ि-धम सचलाने का तनणयस ककया। उन्होंनेयहूदी नबबयों के आदेिों को ग्रहण ककया; उनमें नि-प्लेटोिाद की शिक्षाओंको सक्म्मशलत कर शलया और ईसा को केन्द्रीय बबन्दु ुबना ददया।

रारक्म्भक खीष्टीय धम सयूनानी (हेलेतनक्स्टक) राच्य पयािरण से घतनष्ठ रूप से सम्बद्ध था तथा रारक्म्भक खीष्टीय गचन्तन यूनानी (हेलेतनस्ट) गचन्तन से पररव्याप्त था, और अपने को यूनानी रूप में रकट भी करता था। रोमन कैथशलक खीष्ट सम्रदाय के रतत रोटेस्टेण्ट सम्रदाय की एक शिकायत तो यही थी कक उसने

[30] O God, most glorious, called by many a name.
Nature's Great King, through endless years the same,
Omnipotence, who by Thy just decree
Controllest all, hail, Zeus, for unto thee
Behaves Thy creatures in all lands to call

रततमा-पूजकों के अनेक तत्त्ीिं को ग्रहण कर शलया है।'[31] उदाहरणाथ सईसा के जन्म की तनक्श्चत ततगथ मालूम नहीं ं है। पिू सके, जहा ाँईसा का तनिास था, विरोध के बािजूद, पाश्चात्य चचों ने 25 ददसम्बर को चुना तयोंकक िही पैगन (मूततपूसजकों की) परम्परा थी। यह एक त्यौहार था, जो कुछ लोगों के मत से, शिशिर-अयन या संक्रान्न्त का द्योतक था, अतः सूय सदेिता के शलए, िििेर्तः शमथ्र (शमत्र) के शलए, जो त्राता ईश्िर के रूप में ईसा का मुख्य रततद्िन्द्िीी था, पवित्र समझा जता था।

ईसा ने हमें एक सरल संदहता (कोड) रदान की। उन्होंनेबक्प्तस्मा नहींककया और न तो बक्प्तस्मा को आिश्यक करार ददया। रभु के सायंकालीन तरल भोजन अथिा अशभवर्तत रोटी की जो रथा उन्होंनेचलाई िह 'गास्पेल्स' (ईसा द्िारा उपददष्ट मंगल-समाचार) के िणनसानुसार 'ककसी जादुई महत्त्िसे रदहत एक सरल उत्सि' मात्र था। चच सने धम-ससंस्कारों (सैमेण्ट्स) को मुक्तत के शलए आिश्यक करार दे ददया, जैसा कक रहस्य-सम्प्रदायों में होता था। जब उसे मालूम हुआ कक 'कम्यूतनयन' (ईसा के अंततम भोज के स्मरणोत्सि में अंि-ग्रहण) की रथा शमथ्रिाद में भी मौजूद है तब उसे बड़ी परेिानी महसूस हुई और उसने कल्पना कर ली कक मूतत-स पूजकों के देिता डेविल ने सरल ईसाइयों को गुमराह करने के शलए ऐसा ककया है। ईसाई धम समें ऐसा बहुत-सा बाह्याचार िरि कर गया, स्ियं ईसा ने क्जसकी तनंदा की थी। 'शसद्धान्तों का उपदेि करते हुए तथा मानिों को आदेि देते हुए मेरे रूप की ि तनरथकस ही पूजा करते हैं।' सैद्धाक्न्तक पररितनसों ने ईसा के व्यक्ततत्िकी दैिी सरलता को बहुत कुछ ढक शलया है।

नाक्स्टकों (राचीन ज्ञानिादी या रहस्यिादी ईसाई) ने ईसा की मानिीय रकृतत से यह कहकर इन्कार ककया कक यह देिता का अगचन्त्य उपहास है। और चूँकक ईश्िर को तो सचमुच कोई दुःख कष्ट नहींहोता, इसशलए उनकी मानिीय देह केिल आभास मात्र रही होगी। बाद में इस विश्िास को तनंददत ठहराया गया तयोंकक इससे गास्पेल की समस्त कथा तथा ईसा के पुनजीवित हो उठने की घटना का विरोध होता था। एररयस एक सीधा आदमी था, जो सामान्य समझिाले दृक्ष्टकोण से कहता था कक ईसा अपनी मानिीय देह के साथ, ईश्िर से नीचे ठहरते हैं और गास्पेल्स से इस विचार का समथनस होता था। "म ैंस्िग सस नीचे आया, अपनी इच्छा पूण सकरने के अमाक्जतस बबरसता के साथ आध्याक्त्मक रेरणा के आश्चयजसनक शमश्रण सदहत महामाता का धमस, स्थान राच्य धमों के

31

पुंज में से केिल एक था, जो पैगनिाद (मूततिसाददता) के उत्तरकाल में रोमन साम्राज्य में फैल गया था, और योरोपीय जाततयों को जीिन के विजातीय आदिों से आच्छाददत कर धीरे-धीरे राचीन सभ्यता के समस्त ढाचों को विस्मृतत के गभ समें फेंक ददया था। ....धररत्री के रतत ततरस्कार से भरे हुए तथा स्िग सके गहन भािाततरेक में डूबे सन्त एिं संन्यासी, जनमत में मानिता के सिोच्च आदि सबन गए और उन्होंने देिभतत एिंबीर होनेके उस पुरातन आदि सको भुला ददया क्जसमें िह अपना विचार ककए बबना जीता और अपनेदेि के उत्थान के शलए मरने को तैयार रहता था...यह मनोग्रक्स्त एक हज़ार साल तक बनी रही। मध्य युग की समाक्प्त पर रोमन लॉ, अरस्तू के दिनस तथा पुरातन कला एिं सादहत्य को पुनजीिन राप्त हुआ और यूरोप जीिन के स्िदेिी आदिों तथा संसार के अगधक संति और पौरुर्युतत दृक्ष्टकोण की ओर लौटा। सभ्यता की यात्रा के लम्बे पड़ाि का अंत हुआ। राच्य आिमण की धारा पीछे मुड़ गई है और अब तक भाटे की दिा में पड़ी हुई है। -जे० जी० फ्रेज़र दद गोल्डेन बाउ एडोतनस, आटस, ओशसररस स्टडीज इन दद दहस्री ऑफ ओररयण्टल ररलीजंस (1907), पृ० 251-

31 गगबन ने'रोमन साम्राज्य का हास एिं पतन' के इततहास को सार-रूप में बताते हुए बबरसता तथा धम सकी विजय' बताया है।

शलए नहीं, ं अवपतु उसकी इच्छा की पूतत सके शलए क्जसने मुझे ेभेजा था।" "क्जसने मुझे ेभेजा है, िह मुझसे महिर है।" अथनेशसयस ने अनुभि ककया कक पाल द्िारा रचाररत उद्धारकतासया त्राता का शसद्धान्त एररयन धम सके रततकूल है। ईसा को सच्चा मानि और सच्चा ईश्िर दोनों बताया गया-मनुष्य इसशलए कक मानि-जातत के शलए रायक्श्चत करें, ईश्िर इसशलए कक मानि जातत को पापमुतत करें। ईसाई धम समें ईसा के दैित् तिथा ईश्िर से उनके ऐतय, दोनों को रखना पड़ा। ईसा ईश्िर नहींहैं तो उनके द्िारा मुक्तत सम्भि नहींहै: यदद ऐतय को छोड़ देते ेहैं तो िह बहुदेिदाद में पररिततस हो जाता है। तनकाइया की पररर्द् (कौंशसल) में यह धम-सलक्ष्य स्िीकार ककया गया कक 'िाइस्ट अितररत हुए थे, बनाए नहींगए थे, तयोंकक िह परमवपता के ही तत्त्िके थे।' एररयन धम सपर विजयी हो जानेके बाद उससे दूसूरे वििादों का आविभाास हुआ। यदद ख्रीष्ट मानि और दैिी दोनों हैं तो उनकी रकृतत एक थी, या दो शिशभन्न रकृततया ाँउनमें थीं ? कुछ ने दैिी रकृतत पर जोर ददया और इस विचार से विद्रोह ककया कक ख्रीष्ट ककसी औरत के पेट से पैदा हुए थेऔर उन्होंनेहाड़-मांस के साथ सम्बद्ध आपदाओंको झेला। गगबन ने शलखा, "कैथोशलक लोगों का धम-स विश्िास एक ऐसी सीधी चट्टान के शसरे पर कापाँ रहा था जहा ाँसे पीछे हटना असम्भि था, जहा ाँखड़ा होना खतरनाक था और क्जससे गगरना भयानक था; कफर उनके धम-स दिनस की उदिा रकृतत के कारण उनके पंच की अनेकविध असुविधाए ाँबढ गई। जो लोग ईसा की एक ही रिृवि के मानने िाले (मोनोफाइसाइट्स) थे, उन्होंनेभयानक संकट की चेतना से ख्रीष्ट की एक ही अितार-रकृतत पर ज़ोर ददया। "जो ख्रीष्ट को विभाक्जत करते ेहैं, उन्हें तलिार से विभाक्जत कर देना चादहए; उन्हें बोटी-बोटी काट डालना चादहए; उन्हें जीते ेही जला देना चादहए।" ये िातय एफीसस में हुई एक ईसाई धम-समीमांसा-सभा में कहे गए थे। चैलसेडोन की पररर्द् ने ऐसा सूत्र तनकाला जो रोटेस्टेण्ट और कैथोशलक दोनों सम्रदायों ने स्िीकार कर शलया। "बबना ककसी भ्रम, बबना ककसी पररितनस, बबना ककसी विभाजन, बबना ककसी विच्छेद के दो रकृततया।ाँ" जब इन दोनों के साथ 'होली घोस्ट' की कल्पना शमला दी गई तो हमें 'दरतनटी' (बत्रमूतत-सवपता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा) या बत्रत्त्िका शसद्धान्त राप्त हुआ। ईश्िर की इक्न्द्रयातीत रकृतत ने, जो मानिीय कल्पना और भलाई के मानिीय स्तरों के परे है, न केिल अपने को रकाशित ककया िरन् ्धरती पर मानिीय आकार से अितररत हुई। यही ख्रीष्ट थे। िह स्ियं ही ईश्िरि–ाणी थे।े

आज हम उन धाशमकस विडम्बनाओं से गचन्तातुर नहींहैं क्जन्होंने एक ददन ईसाई- जगत् ्को दहला ददया था। ईसाई धम सका आधारभूत दािा यह है कक ईश्िर ने एक तनक्श्चत समय और स्थान पर केिल ईसा के रूप में अपनेको अितररत ककया और मनुष्य तथा रकृतत दोनों के संघर् ससे मुक्तत पाना उनकी ही मृतूयु के कारण सम्भि हुआ। उनमें जीिा का एक नूतन रूप रकट हुआ क्जसमें 'देह, मन एिंआत्मा का पररपूण सामञ्जस्य था।' इस धम-सविश्िास से यह तनष्कर् सतनकलता है कक जो इल विश्िास को स्िीकार नहींकरता और ईसाई सम्रदाय के बाहर है (इसराइल के नबी तथा यूनान के दाितसनक भी), उसके शलए स्ितिन्त्रतापूिकस दी जाने िाली मुक्तत की कोई सम्भािना नहींहै। परन्तु इस क्स्थतत को अनेक रशसद्ध ईसाई विचारक स्िीकार नहींकरते।

जक्स्टन माटायसर (दूसूरी िाधदी) कहते ेहैं, "िसब लोग, जो 'लोगस (Logos-िदब्रह्म) अथिात् ्तनत्य-ईश्िरीय विश्ि-रिज्ञा के साथ रह चुके हैं, ईसाई हैं कफर भलेही उन्हें, सुकरात और हेरातलीटस की भातााँ, नाक्स्तक

ही समझा गया हो। ओररगेन ने अपनेसाधी-ईसाइयों को गैरै-ईसाई पूजाविगधयों का सम्मान करने के शलए एक चेतािनी दी थी। टदूसशलयन के िधदों में पैगन (मूततपूसजक) आत्मा रकृत्यात्मक ईसाई है। सन्त आगस्टाइन का हि िततव्य रशसद्ध ही है क्जसमें उन्होंनेकहा है कक "ईसाई धमजसगत् ्के आरम्भ से रहा है; ख्रीष्ट के मानिीय रूप में अितरण के बाद इसे ेख्रीष्टीय मत कहा जानेलगा।" िूसा का तनकोलस सब धमो को ब्रह्िाणी की विशभन्न अशभव्यक्ततया ाँमानता था। "हे ईश्िर, यह तुम्हीं हो, विविध धम सविविध पथों एिं विविध नामों से क्जसकी तलाि में हैं, तयोंकक तुम तो िैसे ही रहते ेहो, जैसेतुम हो-सभी के शलए अगचन्त्य और अतनिचसनीय। हम पर कृपा करो और अपना मुला ददखाओ। जब तुम कृपापूिकस िैसा करोगे ेजब तलिार, विद्िेषपूणि सघृणा तथा सम्पूण सबुराइया ाँनष्ट हो जायगेी और सभी जान जाएगेँ कक विविध धाशमकस रीततयों में िास्तविक धम सएक ही है।" क्स्िटिज़रलैण्ड का सुधारक क्ज्िगिली विश्िसि रखता था कक सब महान् ्पूततपूसजक (काकफर-हीदेन) स्िगि समें

32

शमलते हैं। खलीरमिैर (Schleier- macher) कहता है, "म ैदेखता हूाँ कक धमों की विविधता धम सकी रकृतत में मूलबद्ध है...यह अनेकता धम सकी पूण सअशभव्यक्तत के शलए आिश्यक है।" "जैसेमानि-जातत में सामान्य एकरूपता की मागाँ करने से बढकर धमरसदहत बात दूसूरी नहींहै, उसी तरह धम समें एकरूपता खोजनेसे बढकर अख्रीष्टीय िस्तु भी कुछ और नहींहै।" अपने'रेडेन' में उसने सब धमों की एकता को खूब सराहा है। िह कहता है, "धम समें तुम क्जतना ही गहरे पहुाँचते जाओगे,े उतना ही सारा धाशमकस जगत् ्तुम्हें एक अविच्छेद्य पररपूण सके रूप में ददखाई देगा।" मैतसमूलर शलखता है, "एक ही िाश्िति और सािदेसशिक धम सहै जो उन सब धमों के ऊपर, नीचे े तथा परे खड़ा है क्जन्हें हम मानते ेया मान सकते हैं।"

रोफेसर िी० लास्की ने अपनी पुस्तक 'शमक्स्टकल गथयोलोजी ऑफ़ दद ईस्टन सचच'स में इस बात पर जोर ददया है कक सनातनी (यूनानी) ईसाई के शलए ईश्िर के सम्बन्ध में ददया जानेिाला रत्येक िततव्य अपयाप्सत है और मूतत सबनाने की ददिा में लेजाता है। ईश्िर के रहस्य को तकस-बुद्गध की धारणाओं में व्यतत नहींककया जा सकता। िह तो जीिन्त ईश्िर का रायोगगक ज्ञान है। लास्की शलखता है-"अनुभि से अलग कोई धमवसिद्या नहीं ं है। बदलना, एक नूतन मानि बनना आिश्यक है... ईश्िर-ज्ञान तनश्चय ही दैित्-राक्प्त का माग सहै।"

जहा ाँतक सनातन (आथोडातस= यूनानी) चच सका सम्बन्ध है, रारक्म्भक यूनानी धमवसपताओंके मत से समस्त धम-सविद्या (गथयोलोजी) अन्ततः तनर्ेधात्मक है। यह ईश्िर के विर्य में अिधारण या विचार बनाने से इन्कार करती है। लास्की कहता है- "यह एक रिृवि है जो सब रकार की ऐसी अमूत सएिं विशुद्ध बौद्गधक धमभसािना को अलग कर देती है जो ईश्िरीय रहस्यों को गचन्तन की मानिीय रणाशलयों में ढालना चाहती है। यह सम्पूण समानि को समेटने िाली अक्स्तत्िात्मक िृवि है।" अनुभि में हम सब विचारों और धारणाओंको पार कर जाते ेहैं। परन्तु पाश्चात्य ख्रीष्टीय धमरसाज्य[33] में धमवसिद्या या ईश्िरज्ञान अिधारणों का विर्य हो गया। इसे े 'विज्ञानों की रानी' कहा जाता है। इधर के ज़माने में धम सकी जो आलोचना हुई है िह िस्तुतः बौद्गधक गचन्तकों द्िारा तनशमतस ईश्िर की गलत रततमाओंके विर्य में है।
32

Uno religio in rituum varietate

[33] ख्रीष्टीय चच,स आथोडातस या राच्य (यूनानी) और पाश्चात्य, दो मुख्य िाखाओं में विभाक्जत हो गया था।

दुभुानसर्ायि ितमसान रोटेस्टेण्ट सम्रदाय की रमुख रृिवृ ईसाई धम सके बाहर ईश्रि के इलहाम या श्रुतत-रकिा को अस्ीकिार करती है। िहााँगैर-ईसाई धम सआत्मश्रेष्ठीकरण के तनरथकस रयत्न मात्र हैं। ख्रीष्ट दूसूरे धमों की शसद्वध या उपलक्धध नहीं ंहैं, िरन् ्विल्कुल ही शभन्न एिं असम्पृतत हैं; िह पततततों के रतत, जो ईश्रि के न्यायाधीन हैं, ईश्रि के दयालुतापूण सव्यिहार का एक अरततम रयत्न हैं। सत्य पवित्र धम सग्रन्थ में तनदहत है और उस धमग्रसन्थ में ईश्रीय रकिा है और यदद दूसूरे लोग इसे ेग्रहण नहींकरते ेतो इसका कारण उनकी अन्धता और अज्ञान है। ईश्रि ने न केिल दूसूरे देिताओं की पूजा-उपासना को अवपतु अपनी अनामी रकृतत के विर्य में गलत विचारों को भी दक्ण्डत ककया है।

तनरपेक्ष सत्य के विशभन्न देिेदार एक-दूसूरे के रतत असदहष्णुता से पूण सहैं और जब उनके हाथ में िक्तत होती है तो िे विरोगधयों के शलए उत्पीड़न-कक्ष, बागधक और जलानेिाले अक्नन-कुण्ड की व्यिस्था करते ेहैं। िे हमसे खोजी, अनुसन्धानकता सहोनेकी नहीं, रीततिादी होने की, गचन्तक होनेकी नहीं, विश्िासी एिं श्रद्धालु होने की आिा करते ेहैं।[34]

श्री हरबटस जे० मुलर शलखतेहैं: "गास्पेल्स (ईसा के उपदेि) से स्पष्ट हो जाता है कक जीसस (ईसा) ने अपनेका एक नूतन विश्िधम सके िाक्न्तकारी जन्मदाता के रूप में रकट करने की कल्पना ही नहींकी थी, और सचमुच में तो िह ख्रीष्टीय धम सके संस्थापक भी नहीं थे। इन सदुपदेिों के अनुसार उन्होंनेखुले रूप में कभी देित्‌िका दािा नहींककया। िह तो बताते ेहैं कक िह अपने को मसीह या पैगम्बर कहतेथे: यद्यवप उन्होंनेकभी डेविड के ििंिभूत होनेकी िेखी नहींबचारी, क्जसे ेउन पर थोपनेकी ल्यूक और मैथ्यू (ईसाई धम सके आदद रचारक) ने इतनी चेष्टा की है। ककन्तु यदद उन्होंने इसे ेगुप्त रखनेका अनुरोध अपनेशिष्यों से न करके सािजसतनक रूप से यह काय सककया होता, तो भी उनके श्रोता उनके देित्‌िको स्ीकिार न करते। परम्परा से मसीह (पैगम्बर) ईश्रि-पुत्र न थे। कभी उन्होंनेत्राता रभु (ईश्रि) के द्िारा मुक्तत का िचन नहींददया। बक्ल्क उन्होंनेतो यह कहा कक पश्िािाप और साधुता ग्रहण करके कोई भी मनुष्य, अपने ही रयत्नों से, ईश्रि का राज्य पा सकता है। इसके बाद चच सने उन्हें ईश्रि-तुल्य बनाने और यह आग्रह करने का िम चलाया कक मुक्तत केिल ख्रीष्ट के ज़ररये ही सम्भि है। ईसाई धम सका केन्द्रीय शसद्धांत अितार- शसद्धान्त बन गया क्जसका कक रत्यक्षतः ईसा अथिा उसके रथम

---

[34] एच० ला फासे शलखतेहैं-"ऐसा विश्िास करने ेका कोई कारण नहींहै कक लगभग दो हज़ार िर् सपूि सबेतुलहम में जो देििर् अितार हुआ था, िह अपनेपररणामों में बहुत महत्त्िपूण सहोने के बािजूद अक्न्तम था। बक्ल्क इततहास से तो इसके रततकूल ही रकट होता है, तयोंकक विश्ि के उस भाग में, क्जसनेईसाई होने की घोर्णा कर रखी है, ऐसे ेलक्षण तो ददखाई नहींपड़ते क्जससे माना जा सके कक राक् ख्रीष्टीय युगों की अपेक्षा मानि पाप-मोचन या मुक्तत के अगधक तनकट है। उदाहरणाथ,स जब हम तीस िर्ीय युद्ध एलविजेनशसयन क्जहाद (कूलेड) को राक्षसीय हत्याओं ंअथिा मूततपूसजकों के अक्ननिध आदद का स्मरण करते ेहैं और यह देखते हैं कक ये सब घटनाएँ तब घटीं ंजब चच ससबसे िक्ततमान था, तब ईसाइयों की धम-स सैद्धाक्न्तक पररपूणतसा या एकमेिता के दािों के बारे में यह तो नहीं कहा जा सकता कक िे घटनाओं द्िारा समगथतस हैं।"
-दिुईस कफडेशलटी (1952), पृ.ृ 86

अनुयातययों को पता भी न था ।"[35] जब यह कहा जाता है कक 'चच सके बाहर मुक्तत राप्त ही नहींहो सकती' तो इसका अशभराय यह है कक िह 'चच सकी भिाना के बाहर नहींराप्त हो सकती। भले विश्िासिालेसभी मानि मुक्तत की आिा कर सकते हैं।'

इस्लाम

इस्लाम ने अपने क्टर एकेश्िरिाद और ईश्िर की अनुभितीत महानता पर ज़ोर देने के बािजूद, न किेल यहूदी धम स(जूड़ाइज़्म) तथा ख्रीष्टीय मत के केन्द्रीय विश्िासों को अपनेअन्दर समादहत कर शलया िरन् ् अरब रेगगस्तान के पुरातन किीलाई धमों और जरथुस्त्री (पारसी) धम सके भी कई पहलुओं को अंगीकार ककया। िह अपनेसक्न्नदहत भागों से कहींज़्यादा बड़ा है। इस्लाम अपने तईं यहूदी धम सऔर ख्रीष्टीय मत की पूणोपलक्धध मानता है। मुहम्मद ने 'जीसस, मेरी के पुत्र' के इलहाम का हिाला ददया है। भले इस्लाम ने ख्रीष्टीय मत के अपधम सके रूप में अपना आरम्भ ककया है पर उसनेअपना एक अनोखा रूप विकशसत कर शलया, जैसे ेबौद्ध धम स ने, जो मूलतः दहन्दू ूधम सका एक सुधार-आन्दोलन था, अपनी एक अलग राणाली और ढाचेँ ेका विकास कर शलया था।

कुरान मुहम्मद द्िारा शलखा या बोलकर शलखाया गया ग्रन्थ है। मुसलमानों के शलए यह फररश्ता क्जब्राईल और नबी मुहम्मद के युनम अशभकरण द्िारा ईश्िर की िाशति िाणी का इलहाम है। मुसलमान मुहम्मद को ईश्िर का अक्न्तम निी या पैगम्बर मानते ेहैं; उनके बाद कोई नबूित नहीं होगी इसशलए उनके बाद उनके िधदों की व्याख्या करने के शसिा और कुछ रह नहीं जाता।

रारम्भ से ही इस्लाम में एक सािदेसशिकता और अिजनसा पर ज़ोर ददया गया है। अबू हनीफ (मृतूयु 767) कहते ेहैं: "ककसी समाज में मतभेद का होना ईश्िरीय दया का गचह्न है।"[36] तेरहिीं ंसदी में इधन-उल अरबी ने उपदेि ककया कक जो मनुष्य ईश्िरीय ज्ञान के अनुसन्धान में लगा हुआ है, उसे ेककसी एक धम सके द्िारा, एक अपिजकस िृवृ के साथ, दूसूरे धमों की उपेक्ेषा कर उसकी तलाि नहींकरनी चादहए बक्ल्क मानि को राप्त सब रमाणों पर विचार करना चादहए। इस सम्बन्ध में हाथी की कथा दहन्दू,ू बौद्ध एिं जैनै गचन्तकों की भातँात, मुक्स्लम धमिसास्त्री भी कहतेहैं।[37]

---

35 'दद यूज़ेज़ ऑफ दद पास्ट' (1954), पृ० 149।

36 कफग अकबर 1, 691

37 "इसशलए अन्धतनिासचकों नेजानिर का अनुसंधान करने ेके शलए अन्ध रततततनगधयों को चुना। हर एक नेघड़ तथा अंगों को टटोलकर उसका स्पष्ट रूप समझनेकी चेष्टा की। और इस रकार हर एक नेपूण सकी एक-एक कल्पना की और उस कक्ल्पत छाया के साथ सम्पूण सहृदय और आत्मा से गचपक रहा।"-ब्राउन की अंग्रेज़ी कविता का गद्य रूपांतर ।

फरीदउद्दीन अिार (मृतूयु 1230) ने शलखा "रत्येक अपना एक रास्ता खोज लेता है...हर एक अपनी सामथ्य सके अनुसार ज्ञान राप्त करता है और सत्यज्ञान में अपना स्थान राप्त करता है।"[38] हर एक का जीिन उसका अपना माग सहै। अकबर क्जन धमों सेपररगचत था, उनमें सामञ्जस्य लाने की उसकी चेष्ेटा को लोग अच्छी तरह जानते ेहैं। सम्रा् िाहजहााँ के सबसे ेबड़े लड़के दाराशिकोह ने 'समुद्र-संगंम'[39] नामक एक ग्रन्थ शलखा, जो फारसी ग्रन्थ 'मजमः उल-बहरीन' के समान ही है। ग्रन्य का अिाय यह ददखाना है कक दहन्दू ूधम सऔर इस्लाम की मूलभूत बातों में बहुुत साम्य है। परन्तु औरंगज़ेब ने तो अपिजकस ृिवृ ग्रहण की।'[40] टीपू सुलतान ने ककतने ही अिसरों पर, श्रृंगेरी के िंकराचाय से भगिान से राथनसा करने के शलए अनुरोध ककया। एक बार जब उसके कल्याण के शलए िंकंराचाय सके पथ-दिनस में सहस्र चण्डी जप हो रहा था, तब उसनेबड़ी रिंसा व्यतत की थी।[41] इस्लाम के सम्पूण सइततहास में दूसूरे धमों के रतत सम्मान के भिा की दृढ रिृवृ रही है। सूफी इस विचार को रततपाददत करते ेरहे।

A Church or a Temple or a Kaaba stone,
Koran or Bible or a Martyr's soul,
All these and more my heart can tolerate,
Since my religion now is love alone.

(हहन्जदी पद्यान्जतर)

---

[38] तक्ज्कराते ेऔशलया।

[39] ए किदटकल स्टडी ऑफ दारा शिकोह'ज़ 'समुद्र-संगम', बाई डा० रोमा चौधुरी (1954)।

[40] क्जसमें इस्लाम नेऊाँची ख्यातत राप्त की,
और पैगम्बर के कानून को व्यापक सम्मान ददया,
जो हमारे तनरंग के अक्न्तम बाण की भातााँत तनकला,
धम सएिंकुफ्र के युद्ध में;
जब धमद्रसोह का िह अपवित्र बीज
क्जसेअकबर नेबोया था, निीन कोंपलें फेंककर तनकल आया
दारा के अन्तःकरण में; ददल की िमा
बुझ चली हर हृदय में, अपनेको अरक्षक्षत समझ,
हमारे समाज की भ्रष्टता के बीच,
तब ईश्रि नेभारत से ेचुना,
उस विनीतमना िीर आलमगीर को,
धम सकी पुनः स्थापना और विश्ासि को निीन जीिन देने।
उसके खड्ग के विद्युत् ्में जल उठी
अपवित्रता की फसल; धम-सविश्ासि का टाच स
एक बार पुनः हमारे पाररदों पर रकिा विखेर गया।

- 'रीलिैन ऐण्ड रीज़न इन इस्लाम', ए० जे० आरबेरी, पृ० 1141

[41] मैसूर आककसयोलाक्जकल डडपाटसमेण्ट एनुउल ररपोटस, 1916) पृ० 74-75 ।

गिरजाघर हो या हो मष्न्जदर या िह काबे ेका पत्थर,
हो कुरान, इंजील भले हो या शहीद का आत्म अमर।
कर लेता है इन सबको या औरों को भी हृदय सहन,
मेरा धम मप्रेम है किल, िही हमारा तन, मन, धन।

संघर् सका स्रोत धमों की विविधता नहीं, सदहष्णुता का अभाि है। सदहष्णुता का अथ सगुप्त अहंकार से उत्पन्न उदासीनता अथिा दूसूरों के रतत अिज्ञा-अपमान नहींहै। इस रततष्ठापना से विददत होता है कक परम सिा एक ऐसा रहस्य है क्जसके एक क्षुद्र अंशमें ही अभी तक रिेश ककया जा सका है। सदहष्णुता खुले मन की भािना है। हम विशभन्न मागों पर चल सकते हैं परन्तु हमारा लक्ष्य एक ही है। चूँकक हम एक ही अनुसन्धान, एक ही तलाश में िाशमल हैं, इसशलए हमें एक-दूसूरे के साथ आध्याक्त्मक बन्धु ुके रूप में व्यिहार करना चादहए। विशभन्न धमों को एक ही विर्य के विविध रूप में ग्रहण करना चादहए। जो मेरी सिा नहीं ंकरता, िह दूसूरों की सिा कर सकता है। धाशमकस विश्िासों तथा रीततयों के विर्य में सदहष्णुता हमारा पवित्र कतव्सय होना चादहए। यदद हम इसका अभ्यास करेंगे तो कठोरता एिं क्टरता नष्ट हो जाएगीं और उनकी जगह कोई ज्यादा अच्छी चीज़ आ जाएगी। यदद हम एक सच्चे ईश्िर की ईष्यालुस के रूप में कल्पना करते ेहैं तो दूसूरे देिताओंकी पूजा भ्राक्न्तमूलक हो जाती है। पिू समें, चीन और भारत में देिता ईष्यालुस नहींहोते ेऔर इनके कोई राष्रीय धम सनहींह।ैं धाशमकस सत्य का अनुसन्धानकतास एक संिादी, एक पररव्राजक हो सकता है। जो चीज़ मानि की िक्त्त का विस्तार करती है, िह सत्य पर कधज़ा नहींहै बक्ल्क सत्य की खोज है। लेशसंग का एक कथन अतसर उद्धृत ककया जाता है कक ककसी आदमी का मूल्य सत्य पर उसका कधजा होनेके कारण तनधारसरत नहींहोता, बक्ल्क सत्य की खोज में सच्चाई के साथ रयल करने से होता है। "यदद ईश्िर अपनेदादहनेहाथ में समस्त सत्य शलए हो और बाय ें हाथ में सत्य के शलए मूल्यिान, तनरन्तर सकिय रेरणा शलए हो और कहे कक म ैंसदा गलत ही चुनिा करूँगा तो 'चुनो' कहने पर म ैंविनयपिूकस उसका बाया ाँहाथ पकड़ लूँगा और कहूूँगा : 'वपता, यही मुझे दो; िुद्ध सत्य किल तुम्हारे शलए है। दहन्दुओंु की गायत्री राथनसा रकाि के शलए िाश्ित अनुसन्धान है। िैज्ञातनक जानता है कक सत्य सदा अस्थायी और अनुमानात्मक होता है और क्जस चीज़ का महत्त्ि है, िह खोज है। विशभन्न धमों के अनुयातययों को चादहए कक अपने को सत्य का संगी-अन्िेर्क-समझें। जब हम जानतेहैं कक सत्य हमारे अगधकार में है तो हम उनके रतत कठोर हो जाते ेहैंक्जनके पास िह नहींहै। यह विश्िास कक ककसी का अपना धम सजगत् ्के रहस्य की गहनतर अन्तदृदृसक्ष्ट देता है, दूसूरे रकार के विश्िास रखने िालों के रतत ित्रुता की भािना न जागररत होनेदे। गांधीजी ने एक अमरीकी शमिनरी को, क्जसका दािा था कक ख्रीष्टीय माग सही सबके शलए िैसिोम है, शलखा था, "आप सब लोगों के विर्य में जाननेकी जो कल्पना करते ेहैं, िह आप तभी कर सकते हैं जब खुदु ईश्िर हों। म ैंचाहता हूूँ कक आप समझ लें कक आप दोहरे भ्रम के नीचे पल रहे हैं। आप अपनेशलए क्जसेसिैसिोम समझते े हैं, िह अिश्य िैसा ही है; और क्जसे ेआप अपने शलए िैसिोम समझते ेहैं िही समस्त जगत् ्के शलए िैसिोम है, यह मान्यता सिद्रसष्टापन और अच्युतता की है। म ैंथोड़ी विनम्रता का अनुरोध करूँगा।" रो० ए० एन० व्हाइटहेड कहते ेहैं, "म ैंक्जस बात पर एतराज़ कर रहा हूूँ, िह हमारे ज्ञान की पयाप्सतता में हमारा िादहयात विश्िास है।

विद्ानिों का आत्मविश्ासि सभ्यता की जागततक त्रासदी-रेजेडी- है।"[42] िह कहते ेहैं, "जहा ाँकोई पंथ है िहााँ समझो कक कोई धमद्रसोही या नाक्स्तक आसपास या अपनी कब्र में है।"[43]

यह िृवि कक सत्य हमारा ही एकागधकार है, मानि धमों के सिोच्च रूप में तनदहत उदारता से मेल नहीं ं खाता। कफर रत्येक महान् ्धम सने दूसूरों सेभी सीखा है। यदद धम सको कफर िही राणदायी िक्तत राप्त करनी है जो ककसीमेंज़ासकेमेंथी, तोधमों तनिमराणस्पधा सकी जगह उनके बीच के सहयोग
को देनी होगी। इस महत्त्पूिण सविर्य पर विश्ा विभाक्जत होकर नहींरह सकता। ईश्रि सित्रस-ख्रीष्टीय मत में या अन्यत्र-सकिय है। यदद हमारा विश्ासि है कक ईश्रि नेसत्य का रकिा समस्त मानिता को नहीं, दहन्दुओं, बौद्धों, यहूददयों, ईसाइयों या मुसलमानों में से थोड़े ेसे चुने लोगों को ददया है, तब संघर् सऔर झगड़े िुरू हो जाते ेहैं। तेरहिीं ंसे सत्रहिीं ंिताधदी तक का खीष्टीय मत का इततहास एक अनोखी असदहष्णुता तथा अपिजकस सत्य के दुःखदायी रभािों का गचत्रण करता है। यदद हम रेम के ईश्रि की नहीं, ईष्या-सर्द्र् के उस ईश्रि की उपासना करते ेहैं, जो अतीतकाल में रलय उपक्स्थत कर चुका है, तो समझ लीक्जए कक संसार में िाक्न्त नहींहो सकती। धमों के विर्य में यही दृक्ष्ट भिानिील राणणयों के रास्ते ेका रोड़ा रही है और उन्होंने घबराकर धम सका ही त्याग कर ददया है।[44] म ैंसमझता हूाँ कक ख्रीष्टीय मत की यह असदहष्णुदृक्ष्ट, क्जसने इनक्तिक्ज़िन और धम-सयुद्धों का आरम्भ ककया, जीसस अथात्स ्'रेम के ईश्रि या रेम के दिेता' की शिक्षाओंके रतत न्याय नहींकरता। नई बाइविल (न्यू टेस्टामेण्ट) में हम पढते ेहैं कक 'ईश्रि रेम है' (जॉन 4-16) और उसका 'िधद' िह रकिा है जो रत्येक मनुष्य को रकाशित करता है (जॉन 1, 9); यह भी कक उसकी इच्छा है कक सि मनुष्यों की रक्षा हो और िे सत्य का ज्ञान राप्त करें (1. दटमोथी 11 - 4) मानि-जातत विद्ोिपूिण सिास्त्राथों तथा मज़हिी वििादों से थक गई है। पक्श्चम में ख्रीष्टीय मत ने परस्पर अपिजकस चचासका उद्भि ककया है, क्जनमें से रत्येक एक विशिष्ट औगचत्य पर जोर देता रहा है और उसके विर्य में वििाद को विच्छेद द्ारा चुप करता रहा है। ककन्तु जब से कोररन्य के चच सको सन्त पाल ने पत्र शलखा था, समय-समय पर विभाजनों का अन्त करने के रयत्न होते ेरहे हैं। आज ऐतय के इस रयत्न को और विस्तृत आधार पर चलाने की आिश्यकता है। आत्मा का राज्य स्तिन्त्रता का क्षेत्र है। िह अपनेसदस्यों को ककती धम सके स्िीकार करने को न तो पसन्द करता है, न उसके शलए उन्हें दक्ण्डत करता है। िह विशभन्न मतों के अनुयातययों के बीच एक नये रकार की सृजनात्मक सहानुभूतत की संिृद्गध करता है। हमारा कतव्सय है कक हमारी परम्पराओं में जो कुछ मूल्यिान है उसका उत्सग सन करते ेहुए भी हम साथ-साथ काम करें और उस ददन- ददन गहन होती जानेिाली िक्तत को उपलधध करें जो भ्रातृत्ि-भािना से आती है।

---

42 दद कफलासफी ऑफ ए० एन० व्हाइटहेड, संपादक शिल्प (1941), पृ॰ 698 ।

43 एडिंचर ऑफ आइडडयाज़ (1933), पृ॰ 661

44 रोफेसर फ्रेडररक हीलर शलखते हैं-"यह तनपट सत्य है कक खीष्टीय धम,स ऐसेअव्याख्येप अपराधों से ततरस्कृत हुआ है जो उसी रूप या मात्रा में दूसूरे ककसी महत् ्धम समें पाए नहींजाते। न इस्लाम, न बौद्ध या दहन्दू ूधम सनेअपनेधम-सविश्ासि के शलए इतनेमानयों का कत्ल ककया है, क्जतनों का कक खीष्टीय चचाँ नेककया है...अपनेऊपर ऐसे कलंक के धधबेहोते ेहुए भी, खीष्टीय मत कैसे, गैर ईसाई और अतुलनीय रूप से ेबहुत ही कम कलकफत घनों को तुलना में पररपूण सहोनेका दािा कर सकता है !"

-दहधबटस जनलस, जनिरी 1954, पु० 112-1151

किेल ऐसा ही विचार ऐसेसभ्य समाज का आधार बन सकता है जहा ाँहम उत्साहपूिकस दूसूरे धमों को समझनेका यन करें और उनके अनुयातययों की सेिा करें। ऋनिेद की अक्न्तम ऋचा में कहा गया है :

संच्छिध्ि ंसंदिध्ि
सं िो मनांसस जानताम् ्।
समानी िः आकृतत:,
समाना हृदयातन िः
समानमस्तु िो मनो
यथा िः सुसहासतत ***(10-191)***

शमलकर चलो; शमल-जुलकर बात करो; तुम्हारे मन एक समान जानें, तुम्हारे यल साथ-साथ हों; तुम्हारें हृदय एकमत हों; तुम्हारे मन संयुतत हों, क्जससे ेहम सब सुखी हो सकें।

4. नई विश्ि-सिभ्यता

मनुष्य-राणी सित्रस एक-सेही हैं और िे एक ही गहनतम मूल्य स्िीकिार करते ेहैं। उनमें जो भेद हैं, िे तनस्संदेह महत्त्िपूिण सहैंपरन्तु उनका सम्बन्ध बाह्य, अस्थायी सामाक्जक दिाओं से होता है और िे उनके साथ ही पररितनसीय होते ेहैं। पररिहन तथा यातायात के आधुतनक साधनों के कारण अलगिा की दीिारें टूटती जा रही हैं और सहकाररता के सेतुओं का तनमाणस होता जा रहा है। सभी समाज तेज़ी के साथ उद्योग-रधान होते ेजा रहे हैं और हम सब विज्ञान में एक ही भार्ा बोलते ेहैं। हर जगह मूल्यों के नये रततमान बनते ेजा रहे हैं। हमें ऐसी एक नई विश्ि-सिभ्यता के व्यथापूिण सजन्म में भाग लेने को कहा जा रहा है जो किेल अन्तराष्सरीय सहयोग तया समझ से ही सम्भि है। अन्तराष्सरीय संघर्ों की तीव्रता के बािजूद संसार एक होता जा रहा है।

लोगों में यह भ्रमात्मक खयाल पैदा हो गया है कक जहा ाँपक्श्चम अपनेदृक्ष्टकोण में िैज्ञातनक है िहााँपूिस आध्याक्त्मक मानस का है। एक तकसबुद्ध-रधान तथा दूसूरा धाशमकस है। एक ऊजक्स्िी और तनरन्तर बदलनेिाला है तो दूसूरा क्स्थर एिं अपररितनशिील है। यदद हम दूरू तक देख सकें तो हमें मालूम होगा कक तीन-चार सौ साल पहले ेतक चीन एिं भारत की विज्ञान एिं रौद्योगगकी में मौशलक देन रही है तथा दूसूरी ओर पक्श्चम धाशमकस आिेिसाद एिं पवित्रता से महत्त्िपूिण सउदाहरण उपक्स्थत करता रहा है। क्जतना ही हम एक-दूसूरे को समझते े जाते ेहैं उतना ही यह अनुभि करते ेजाते ेहैं कक हम दोनों एक-दूसूरे के जैसे ेही हैं। पूिसऔर पक्श्चम चेतना के दो विशभन्न रकार या गचन्तन की दो विशभन्न रणाशलयों का रततततनगधत्ि नहीं करते।

विज्ञान तथा धम सरत्येक संस्कृतत के पहलू हैं। ताककसक एिं आध्याक्त्मक दो ऐसेसूत्र हैं जो मानिीय स्िभािा में अविच्छेद्य रूप से गुाँथे हुए हैं, यद्यवप दोनों के ताने-बाने जुदा-जुदा हैं। मानि इततहास के विशभन्न युगों में कभी एक, कभी दूसूरे का अगधक महत्त्ि रहा है।

वपछले ेअनेक िर्ों में पारम्पररक तत्त्ि-मीमांसा के विरुद्ध विद्रोह होता रहा है। थेल्स से लेकर पक्श्चम के व्हाइटहेड तक, ऋनिेद के ऋवर्यों से लेकर हमारे समय तक के भारत में, दिनस अनुमान रधान रहा है। आधुतनक जगत् ्में ताककसक रत्यक्षिाद तथा अक्स्तत्ििादि तत्त्िमीमांसा के रतत विद्रोह का रततततनगधत्ि करते ेहैं।

परन्तु दिनस की तथाकगथत िाक्न्त सिथसा निीन नहींहै। हमें यूनानी गचन्तन में रत्यक्षिाद तथा आंनल रयोगिाद (इम्पीररशसज़्म) की रिृवृिया ाँउपलधध होती हैं।

तकस ककया जाता है कक कुछ भी तब तक सत्य या साथकस नहींहो सकता, जब तक िह इक्न्द्रयों द्िारा ग्रहण न ककया जा सके। राचीन ग्रीक गचन्ताधारा में रोटागोरस के ऐसेही विचार थे ेककन्तु प्लेटो ने उसी की आलोचना की। आधुतनक यूरोपीय विचारधारा में ह्यूम मानता है कक ईश्िर, आत्मा, अमरत्ि या नैततक मानों के विर्य में कोई िास्तविक या साथकस दािा नहीं ंककया जा सकता। ह्यूम तत्सम्बन्धी विश्िासों को 'वितण्डा एिं भाक्न्त' कहकर विरोध करता है। कांट ने इस दृक्ष्टकोण को स्िीकार नहींककया है।

कोम्ते(Comte) ने अपने सांस्कृततक विकास की तीन श्रेणणयों िाले तनयम के साथ रत्यक्षिाद के विचार का रारम्भ ककया। उसके मत से रत्येक संस्कृतत की रथम श्रेणी धमवसिद्या-विर्यक होती है। कोम्तेके शलए धमवसिद्या का मतलब अन्धविश्िास या िहम है। दूसूरी श्रेणी है तत्त्िमीमांसा की, जो पुरातन देिताओंके स्थान पर शसद्धान्तों एिं िक्ततयों को स्थावपत करती है। तीसरी श्रेणी है रत्यक्षिाद की, जो िैज्ञातनक ज्ञान के साथ मीमांसा करता है।

ह्यूम के अनुभि के शसद्धान्त में हमनेभार्ाई विश्लेर्ण की तकनीक को जोड़ ददया। ईश्िर, आत्मा तथा अमरता-विर्यक िततव्यों की साथकसता भार्ागत भ्रमों का कारण है। धाशमकस विश्िासों को मूखतसापूण स कहकर बताया गया है क्जसके कारण हम अपने को भ्रशमत करते ेहैं। तत्त्िमीमांसा के सभी रकार लाभरदहत उद्योग कहकर त्याग ददए गए हैं।

ताककसक रत्यक्षिाद रमाणीकरण शसद्धान्त को अपनाता है। ककसी भी िातय का तथ्यपरक अथ सतभी तनकल सकता है जब िह इक्न्द्रयानुभि द्िारा रमाणीकरण में समथ सहो। धाशमकस रस्तािनाएं ाँरयोग द्िारा रमाणणत नहींकी जा सकतीं, इसशलए उनसे ेकोई तथ्यात्मक अथ सनहींतनकलता।

सािदेसशिक रूप से स्िीकृत िैज्ञातनक शसद्धान्त भी इक्न्द्रयानुभि से रमाणणत नहीं ंककए जा सकते। परन्तु हम इसके कारण रकृतत के तनयमों को अस्िीकार नहींकरते। रमाण-शसद्धान्त स्ियंशसद्ध िततव्य नहीं ं है; न तो िह इक्न्द्रयानुभि द्िारा रमाणणत ककए जानेकी सामथ्य सरखता है।

जो लोग यह कहकर तत्त्विद्या के हटा देनेका दािा करते ेहैं कक अनुभिातीत सिा है ही नहीं, िे खुद जगत् ्की रकृतत के विर्य में एक तत्त्विद्यापरक िितव्य दे रहे हैं। हम प्लेटो के आिदिसाद से लेकर मातस सके भौततकिाद तक तत्त्विद्या-व्यिस्था का ततरस्कार कर सकते हैं ककन्तु तत्त्विद्यात्मक गचन्तन से बच नहीं ं सकते। जब भी गचन्तन या विचार अपने विर्य में चैतन्य होता है, तभी दिनस िन जाता है। यहााँतक कक िह भी जो दिनस को अस्िीकार करता है, िैसा एक ऐसेदिनस के पररणामस्िरूप ही करता है, क्जसे ेअपनेदिनस का गुमान नहींहै। जब भी मूल्य के मान रयुतत होते ेहैं और आलोचना का आरोपण ककया जाता है तो िहााँएक दिनस होता ही ह। विश्लेर्णात्मक दातसनकों का तकस स्ियं तत्त्विद्या पर, जगत्–्विर्यक कततपय पूि-सकल्पनाओंपर आधाररत है। ताककसक विश्लेर्ण का जो भी मूल्य है, िह जीिन के विर्य में एक ऐसी ििृवि-रुख के रूप में ही पररभावर्त ककया जा सकता है क्जसेताककसक विश्लेर्ण केिल अपनेबल पर स्थावपत नहीं कर सकता।

जब ताककसक रत्यक्षिादी घोवर्त करते ेहैं कक दातसनक अन्िेर्ण के शलए अनुभि-सामग्री का एक अपररत्याज्य स्रोत है तो िे 'अनुभि' िधद को इक्न्द्रयलधध के अथ समें सीशमत कर देते ेहैं परन्तु हमें नैततक, सौन्दयात्समक एिं धाशमकस अनुभि भी होते ेहैं। हमारे घनीभूत अनुभि, ज्ञान के शलए उत्साह, सौन्दय सके शलए रेम, नैततक तनरिा, दिेभािना रयोगिाद की दुतुनया से बाहर नहीं ंककए जा सकते।

मानिीय जीिन के दूसूरे पक्षों से बुद्गध का तनरसन ताककसक रत्यक्षिाद का रमुख तत्त्िहै। जब हम विज्ञानों की बात करते ेहैं तो हमें उसमें न केिल गणणत, भौततकी तथा जैविक विज्ञानों को, बक्ल्क सामाक्जक विज्ञानों को तथा उन्हें भी िाशमल करना चादहए जो आध्याक्त्मक मूल्य से सम्बक्न्धत हैं।

कैक्म्ब्रज के रोफेसर सी० डी० ब्राड अपनी पुस्तक 'फाइि टाइप्स ऑफ एगथकल गथयरी' की भूशमका में कहते ेहैं:

"पाठक को इसके शलए चेतािनी दे देना िायद उगचत होगा कक मेरे व्यिहाररक एिं भािनात्मक दोनों रकार के अनुभि की सीमा वििेर् रूप सेसंकीण सहै-विश्िविद्यालय के एक अध्यापक के शलए भी। परन्तु कैक्म्ब्रज में कॉलेजों के फेलो के शलए िीरभािापन्न गुण अथिा रदिनसीय पाप के बहुत कम रलोभन हैं, और मेरी कामना है कक मानि जातत का िेर् भाग भी इसी सौभानयपूण सक्स्थतत में होता। कफर म ैंव्यिहार में सही और गलत के विर्य पर अपने को उिक्जत करने में कदठनाई का अनुभि करता हूाँ। जब लोग कहते ेहैं कक िे पाप की भािना के अन्दर काय सकर रहे हैंतब मुझे ेइसकी स्पष्ट धारणा नहीं ंहोती कक उनके मन में तया होता है; कफर भी मुझे ेसन्देह नहीं होता कक कुछ मामलों में यह एक िास्तविक अनुभि है, जो उन लोगों के शलए अत्यन्त महत्त्िपूण सहै, क्जन्हें िह होता है और सचमुच इसका गहन नैततक एिं ताक्त्त्िक महत्त्िहो सकता है। म ैंअनुभि करता हूाँ कक ये व्यिहाररक एिं भािनात्मक सीमाए ाँनैततक अनुभि के कततपय महत्त्िपूण सपक्षों के विर्य में मुझे ेअन्धा बना सकती हैं। कफर भी जो लोग ककसी भी विर्य पर बड़ेज़ोरों के साथ अनुभि करतेहैं, िे िस्तु-जगत् ्की व्यिस्था में उसके महत्ि के बारे में अत्युक्तत कर सकते ह।ैं पुण्यिीलता के शलए एक स्िस्थ बुभुक्षा, क्जसे ेशिष्टाचार से तनयक्न्त्रत रखा जा

सकता हो, बड़ी बदढया चीज़ है।, ककन्तु उसके शलए 'भूख और प्यास' का अनुभि करना अतसर आध्याक्त्मक मूत्राततसार के लक्षण हैं।"

दिातसनक व्याख्या के ककसी भी रयल में इन सब बातों का विचार करना ही होगा। कफर जो धारणाए ाँ (कानसेप्स) आधुतुनक गणणत तथा भौततकी रयुतत करती हैं, िे भी तो इक्न्द्रयानुभि से रत्यक्ष रामाण्य नहींहैं। उनसे ेऐसी अनुशमततया ाँतनकलती हैं जो अन्ततोगत्िा रायोगगक पररक्स्थततयों से सम्बद्ध हैं। तत्त्विद्या-विर्यक उपपविया ाँजगत् ्की रकृतत की व्याख्याए ाँहैंऔर िे तनरीक्षक्षत आधार-सामग्री के रतत अपनी पयाप्सतता और रत्यक्ष ज्ञान में ताल-मेले बैठाने ेकी अपनी सामथ्य सके रकिा में जाचँी जाती हैं। िे केिल अटकलबाक्ज़या ाँ नहींहैं िरन् ्अनुभि की व्याख्याए ाँहैं। िैज्ञातनक उपपवियों के मामले ेमें जो कुछ हम रमाणणत कर सकते हैं, िे उनके संवंपिाक या पररणाम-मात्र हैं, और भी िहींतक जहा ाँतक उनका पररकलन या तनरीक्षण ककया जा सकता है। हम िैद्युत् ्ऊजा,स गुरुत्िाकिर्णस अथिा सापेक्षता को देख नहींपाते ेपरन्तु हम सिाधानीपूिकस तनणीत पररक्स्थततयों में इसका पररकलन करते ेहैं कक ककस बात का तनरीक्षण ककया जाना है और यह कक तया िे सत्य हैं, और तब रमाणणत करते ेहैं कक िस्तुतः उनका तनरीक्षण होता है या नहीं। यह अरत्यक्ष रमाणीकरण है। तत्त्िज्ञानात्मक उपपवियााँ ऐसे ही अरत्यक्ष रमाणीकरण की सामथ्य सरखती हैं।

ऐसेही तत्त्विद्यािादी हैं क्जनका दािा है कक िे भी िहााँतक रयोगिादी अनुभििादी हैं, जहा ाँतक कक जीि का जीि के रूप में व्यिहार करते ेहैं। िे सब इस आधारभूत तथ्य से आरम्भ करते ेहैं कक ककसी चीज़ का अक्स्तत्ि है।

कफर भी रत्यक्षिाद धम सकी रकृतत और रयोजन को इन्द्रजाल, अन्ध-विश्िास और लोकिाता से, क्जनसे सम्पृतृत होकर िह गलत समझा जाने लगा है, मुतत करनेमें सहायता करता है।

रत्येक महान् ्दिातसनक विश्लेर्क और अक्स्तत्ििादी दोनों होता है। िह बौद्गधक अन्तःकरण रखने ेिाला कवि है। दृक्ष्टहीन विश्लेर्ण आत्मा का अपव्यय, सूक्ष्मदशितसा का विनाि है; अनुिाशसत दृक्ष्ट, अपरीक्षक्षत अन्तःरज्ञा, आत्यक्न्तक भािोग, अन्ध- विश्िास, कट्टरता तथा पागलपन के स्रोत हैं।

विश्लेर्क और क्षणभंगुरतािादी रिवृिया ाँसुकरात और प्लेटो में शमलती हैं। उन्हें मध्ययुग में हम पुनः स्कूल्स के दिातसनक शसद्धान्तों में पाते हैं।

ताककसक विश्लेर्ण और अक्स्तत्ििादी अनुभि के बीच सदा ही तनाि रहता है। कोई भी समुगचत दिनस एक ओर तकसबुद्गध की सच्चाई तथा दूसूरी ओर आभ्यन्तर अनुभि के दिा ेद्िारा समगथतस होना चादहए।

म ैंपाश्चात्य गचन्तन से दो उदाहरण लेना चाहूाँगा प्लेटो और कांट। प्लेटो की रूपाकार-उपपवि (गथयरी ऑफ फॉम्स) ताककसक युक्ततयों पर आधाररत है। जब िह रूप अथिा आकार को तत्त्िपरक बताता है और कहता है कक तनरपेक्ष सौन्दय सऔर तनरपेक्ष न्याय केिल पररकल्पनाएाँनहींहैं िरन् ्दूसूरी दुतुनया में, परलोक में, अक्स्तत्ि

रखते ेहैं; जब िह इक्न्द्रयलधध जगत् ्को दूसूरी दुतुनया के नीचे रखता है तो िह आकफसयस (एक यूनानी संगीतज्ञ और रहस्यिादी दितसनक) और पैथागोरस के विचारों द्िारा रभावित है। जो रदि है िह रकृतत के परे नहींजाता ककन्तु जो उत्कट रेरणा िह पैदैा करता है िह रकृतत को पार कर जाती है।

प्लेटो में इस दुतुनया को परदिे मानने की गहरी भािना और दूसूरी दुतुनया की दृक्ष्ट थी। मृतूयुअन्त नहीं ं है। एक दूसूरा लोक है, जहााँ जन्म के पूि सऔर मृतूयुके अनन्तर आत्मा का अक्स्तत्ि रहता है। िह विचार तकस अथिा भौततकज्ञान-मीमांसा-द्िारा नहीं, मनुष्य तथा उसके आचरण पर गूढ मनन से राप्त होता है।

'थेरेटस' में सुकरात 'जहा ाँतक उसके शलए सम्भि है, मनुष्य के दिेतुल्य बनने' के शलए आिाहन करता है। हमें कमी की, अभाि की अनुभूतत होती है। हमें अपने ितमसान स्तर से ऊपर उठना है। मनुष्य, जैसा िह है, अपूण सहै।

कांट ने ज्ञान तथा विज्ञान को इक्न्द्रयलधध जगत् ्तक सीशमत कर ददया। ककन्तु जब िह जगत् ्की रकृतत पर मनन करने लगा तब इस तनष्कर् सपर पहुाँचा कक सम्पूण ससत्य या सिा इतनी ही नहींहै और इक्न्द्रयातीत, अपने-आप में स्ितिन्त्र चीजें भी हैं। तकस के, आत्मा के, अपनी समग्रता में जगत् ्के और ईश्िर के विचार आए। इन विचारों से सम्बद्ध िास्तविकताओं को पदाथ सकी संज्ञा नहींदी जा सकती। उनका कोई आंगगक उपयोग नहीं, केिल तनयामक उपयोग है। िे हमें अपने अनुभि को संघदटत करने और उसके मूल्य का अन्दाज़ लगाने की क्षमता रदान करते ेहैं। विज्ञान का अशभततनि, उसकी तलिा, एक तनष्ठा, एक आिा, एक विश्िासि पर तनभरस है, जि कक तकस की तनष्ठा अपनी ही श्रेष्ठता अथिा जगत् ्की बुद्गधग्राह्यता पर आधार रखती है।

नैततक रततततनगध के रूप में हमारी रकृतत के परीक्षण ने कांट को मौका ददया कक िह विचारों को अगधक समृद्ध और गहन अथ सरदान कर सके। कतव्सय का तथ्य ऐसी िास्तविकता के रकार का एक तनक्श्चत उदाहरण है क्जसकी ओर तकस की धारणाएाँसंकेत करती हैं एक िास्तविकता, क्जसमें यद्यवप तनक्श्चत अक्न्तस्सतु है, ककन्तु कफर भी अनुभि के सन्दभ समें उसे ेककसी अथ समें पदाथ सनहीं कहा जा सकता। कांट के शलए, हमारे ऊपर के तारों-भरे गगन का पररदिनस, हमारी अन्तःस्थ नैततक विगध की पहचान के साथ ककया जाना चादहए।

भारतीय गचन्तन में अक्स्तत्िादिी संकट और बौद्गधक विमि सदोनों ही हैं। भारतीय गचन्तन का मुख्य सम्बन्ध, मानि की मयादसा (स्टेटस) उसके अक्न्तम लक्ष्य से है। रकृतत और परमात्मा पर तो उनके मनुष्य के सहायक के रूप में-मनुष्य को आत्मा की सुरक्षा तथा मन की िाक्न्त राप्त करने में सहायता देने के शलए-विचार ककया गया है। भारतीय गचन्तन की रधान रुगच तो व्यिहाररक है। दिनस जीिन का पथ-दिकस है।

भारतीय दितसनक क्षेत्रों में पारस्पररक शसद्धान्तों पर पक्श्चम के संसग ससे एक हलचल पैदा हो गई है। सामान्य रूप से कहें तो इससे दृक्ष्टकोण में कोई रमुख पररितनस नहींहुए हैं, यद्यवप विचार के ढंग का रभाि पड़ा है। थोड़े-से लोग ऐसे भी हैं क्जन्होंने भारतीय परम्पराओं का त्याग कर ददया है और कततपय पाश्चात्य विचारकों

के विचारों को ग्रहण कर शलया है, ककन्तु दुभाुनसर्ाि उन्होंने न तो भारतीय गचन्तना पर, न पाश्चात्य दिनस पर ही कोई गहरा रभाि डाला है। सबसे ेरभािपूण सपररितनस तो भारत के मौशलक गचन्तन को हमारे युग की िधदिाली में उपक्स्थत करने और उन ददिाओंमें उसके विकास में हुआ है। धम सकी समस्या-विर्यक भारतीय पकड़ को ब्रह्मसूत्र के रथम दो सूत्रों के सन्दभ समें रकट ककया जा सकता है। कहा जाता है कक ब्रह्मसूत्र उपतनर्दों का, जो िेदान्त हैं, मुख्य अशभराय रकट करता है। ये दो सूत्र परमसि (ब्रह्म) के ज्ञान की आिश्यकता तथा उसके रतत बौद्धधक आचरण पर रकाि डालते हैं।

जैसे ेहम जागततक रकिया के पीछे रहस्य का होना स्िीकार करते ेहैं, िैसेही हम मानशसक अिस्थाओंके रखर रिाह के पीछे भी ककसी रहस्य की क्स्थतत को मानतेहैं। तत्त्िविद्या-सम्बन्धी गचन्तना, जो अपने को अनुभि के आधार पर खड़ा करती है, मानती है कक रकृतत आिश्यकता की, और आत्मा की रकृतत मुक्तत की पररकल्पना की पकड़ में है। जागततक रकिया के पीछे जो सत् ्या सि है और क्जसेब्रह्म कहते ेहैं और िैयक्ततक अहम् ्के पीछे जो सत्य या सि है और क्जसे ेआत्मा कहा जाता है, एक ही हैं।

इस भौततक जगत् ्में मनुष्य की देह एक मरणिील बबन्दु ुहै; उस (मनुष्य) का मन स्ियं एक यन्त्र है। रकृतत का ऊध्िगिामी रिाह देह को अपनेअक्न्तम उत्पादन या पररणाम के रूप में ग्रहण नहींकर सकता। उसके परे कुछ है-कुछ ऐसा जो मानि जातत को बनाना है। उसके अन्दर िाश्ित िितमसान है ककन्तु िह उसके संकुगचत-व्यक्ततत्ि से आच्छाददत है। मानि की महिा उसमें नहीं है जो िह है बक्ल्क इसमें है कक िह तया हो सकता है। उसे ेचेतनापूिकस उस क्स्थतत में विकशसत होना है। दैिी सजनसीलता में भागीदार होनेकी उसकी उच्चाकांक्षा, और िैसा कर सकने का दीक्षक्षत, िोगधत संकल्प विकासकारी रेरणा के साधन हैं। हम इसे ेपरमात्मा की कृपा या मनुष्य की िक्तत-दिरसाद का तपः रभाि-चाहे जो कह सकते ेहैं। इस सृजनात्मक रकिया में रत्येक मनुष्य का एक विशिष्ट अशभनय है।

धम सऔर विज्ञान में कोई संघर् सनहींहै। विज्ञान जो कुछ कह सकता है, उससे मानिीय व्यक्ततत्ि के महत्त्ि के धाशमकस दृक्ष्टकोण पर कोई रभाि नहींपड़ सकता। जगत् ्िा ब्रह्माण्ड में और भी ऐसेग्रह हो सकते हैं क्जनमें तकस-बुद्धध-रधान राणणयों का अक्स्तत्ि सम्भि है।

धम सको भी ककसी ऐसी बात का आग्रह नहींकरना चादहए जो तनणयस ककए जाने योनय िैज्ञातनक तथ्य के रत्यक्ष रततकूल हो। विज्ञान राकृततक रपंच या रततभास के अपनेतनरीक्षण से नैततक व्यिस्था ढूाँढ तनकालने का काम नहीं ंकर सकता।

महत्त्िपूण सरश्न यह है कक तया मानि-राणणयों को राकृततक विकास की ऐसी रकिया का िीर् समझा जा सकता है जो साशभराय संचांशलत न ककए जा रहे हों ? या उन्हें परमात्मा की मूतत सया रततबबम्ब के रूप में बनाया गया ईश्िर-पुत्र माना जा सकता है ? िैज्ञातनक मानितािादी बुद्धधयोग की िक्तत में, यद्यवप िह आकक्स्मक रूप से ही उद्भूत होती है, विश्िास रखते ेहैं। ऐसेराणी जो उस रकिया पर आगधपत्य रखते ेहैं, क्जसके कक िे अब

तक अक्न्तम पररणाम हैं। ककन्तु ये ि़ैज्ञातनक मानितािादी उस सीमा के विर्य में अत्युक्तत करते ़ेहैं क्जस सीमा तक मानि-राणी उपताककसक कामनाओं सेस्ितिन्त्र हैं और क्जस सीमा तक ि़े अपना आचरण बौद्द्धक-ताककसक-एिं जागततक कृपालुता की योजनानुसार तनयक्न्त्रत कर सकते ़ेहैं। धम सकी स्थापना है कक मनुष्य अगध-रकृतत (रकृतत के परे के) एिं रकृतत दोनों स्तरों पर अपना अक्स्तत्ि रखता हैं। कांट मनुष्य की द्विविध रकृतत का हिाला देता है। रततभाशसक या इक्न्द्रयलधध जगत् ्में रहते ़ेहुए उसकी तनयतत तनक्श्चत है, और ताक्त्िक या इक्न्द्रयातीत जगत् ्के राणी के रूप में ि़ह स्ितिन्त्र है। 'तुममें जो है, ि़ह जगत् ्में जो है उससे ़ेमहिर है। [45] मनुष्य कतव्सय के तनयम को न मानने के शलए स्ितिन्त्र है।

[45] जॉन ,4-41

5. सभ्यता के नैततक शसद्धान्त

व्यक्तत की मयादसा एिं स्तिन्त्रता का आधारभूत शसद्धान्त सभी धाशमकस मतों में सितसनष्ठ है और यदद म ैंकह सकूाँ तो कहना चादहए कक राजनीततक रणाली में भी लागू है। मातस सने ईश्रि को अस्िीकार ककया, उसका विश्िासि मानि के रभविष्णु दैित्िमें था। जैन विचारकों का मत है कक मनुष्य दैित्िराप्त कर सकता है और मनुष्य की आत्मा में जो सब िक्ततयााँतछपी पड़ी हैं, उन्हीं की सिोच्च, श्ेरेष्ठतम और पूणतसम अशभव्यक्तत ईश्रि है। महाभारत के एक श्लोक में कहा गया है कक इस धररत्री पर मनुष्य से बढकर कुछ भी नहींहै :

ुह्यं ब्रह्म तहददं िो **ब्रिीसम न**
मानुषात् ्श्रेष्ठतिरं हह ककष्चचत्।्

पैस्कल हमें बताता है कक जगत् ्में व्याप्त, सम्पूण सविचारहीन िक्ततयों से श्ेरेष्ठ, विचारिील मानि-राणी है। िे उसे ेकुचल सकती हैं ककन्तु जानती नहीं ंकक िे तया कर रही हैं; पर मनुष्य जानता है। आत्मा है, पदाथ स नहीं। यह आत्मतनष्ठा उसे अन्तरुन्मुखता और स्तिन्त्रता देती है। यदद िह िस्तुतनष्ठता में अपने-आपको खो देता है तो तनयत पररपाटी, कठोरता एिं अवििेक में फाँस जाता है। हमसे जनतन्त्र की मागाँ है कक मनुष्य की स्तिन्त्र आत्मचेतना का सम्मान एिं विकास करें तयोंकक िही मानिीय इततहास की समस्त रगतत के शलए उिरदायी है।

संसदीय लोकतन्त्र एक ऐसी राजनीतत व्यिस्था है जो हमारे तनिागसचत नेताओं द्िारा िाशसत होनेमें हमारी सहायता करती है। यह इस दृक्ष्टकोण को स्िीकार नहींकरता कक यदद तुम हमारे साथ सहमत नहींहोते े तो हम तुम पर रहार करेंगे। हम तकस–ि ल से, न कक िस्त्र-बल से, दूसूरों को अपने मत में लानेकी चेष्टिा करते ेहैं।

असंसदीय िासन-व्यिस्थाओं में रत्येक उिरागधकारी संकट-रूप होता है क्जसमें आन्तररक उथल-पुथल होती है तथा रायः बाहरी दंगे-फसाद भी होते ेहैं। असंसदीय िासन में नेता खुद कानून का रूप धारण कर लेतेहैं; िे अपनी इच्छा अपनी जनता पर लादते ेहैं क्जससे ेमन भ्रष्ट हो जाते ेहैं और आत्माएाँ पततत हो जाती हैं। सभी राजनीततक रणाशलयााँव्यक्तत के िासनागधकार का विरोध करती हैं। िस्तुतः यह व्यक्तत का विरोध नहींहै, चाहे िह बुरा हो या भला, िक्ततमान हो या िक्ततरदहतः यह रणाली का, व्यिस्था का विरोध है। यदद हम ककसी के अच्युत होनेकी बात मान लें, तभी उसके अत्याचार को ठीक बताया जा सकता है। जो मनुष्य ऐसी चापलूसी नहीं ं कर सकते, िे चुप कर ददए जाते ेहैं। विरोधी अपराधी के रूप में बदल जाते ेहैं। कोई समाज, यदद पाखण्ड चाहता है,

सत्य को दक्ण्डत करता है और विकासमान मतों का गला घोंट देता है, तो िह रगतत नहीं ंकर सकता। तानिााह दूसूरों की अततरिंसा की टीका करते ेहैं, परन्तु खुदु अपनी अततरिंसा से खिु होते ेहैं। पहली बात से कुछ हातन नहींहोती ककन्तु दूसूरी बात उनके विनिा का कारण हो सकता है।

उन दिेों द्िारा भी संसदीय लोकतन्त्र के अपनाए जानेकी सम्भािना है, क्जनमें िह इस समय नहींहै। नेतृतिृ पररपति होनेके साथ राजनीततक रणाशलयााँभी बदल जाएगीँ। लोकतन्त्र एक ऐसी रणाली भी है क्जससे े हम जनता के जीिन-स्तर को ऊपर उठाना चाहते हैं। जब कोई दिे राजनीततक स्िाधीनता राप्त कर लेता है तो उससेबड़ी मात्रा में ऊजा समुतत हो जाती है, जो इसके पिू सस्ितिन्त्रता की लड़ाइयों में खच सहो जाती थी। बड़ी अपेक्षाए ाँपैदा हो जाती हैं और लोग सददयों की जड़ता के ऊपर उठ जाते ेहैं और एक नीिन जन्म की सम्पूण स पीड़ाओंके बीच सेगुज़रते हैं। एशिया और अफ्रीका के बहुतेरे लोग भुखमरी से थोड़ा ही ऊपर के स्तर पर जीिन व्यतीत करते ेहैं। यदद राजनीततक लोकतन्त्र को जीवित रखना है तो आगथकस विकास की रकिया को तेज़े करना होगा। हमें सददयों के पसीने और आसुाँओं को एक पीढी के रूप में बदलना होगा; हमें असमानताओं को कम करना होगा, ऐसे सामाक्जक सम्बन्धों को बदलना होगा जो अन्यायपूण सहैंऔर हमें अपने को गौरिाक्न्ित बुराइयों एिं पुरातन रथाओं से मुतत करना होगा। हमारे पास समय बहुत कम है और करना बहुत कुछ है। लोकतंत्रात्मक समाज में धतनकों को गरीबों के शलए सामाक्जक उिरदातयत्ि िहन करने होंगे। ऐसा ही विश्ि-समाज में भी होना चादहए। विकशसत राष्रों को वपछड़ेराष्रों की सहायता करनी पड़ेगी।

अपनेविधान में हमनेअपनेको अन्तराष्सरीय सहयोग एिं िाक्न्त के बन्धन में बाधाा है। अब भौगोशलक, राजनीततक, आगथकस अथिा सांस्कृततक ककसी रकार का अलगिा नहींहै। सहकाररता की भािना को राष्र की सीमा से बाहर राष्रों के समूह तक ले जाना होगा। लोकतन्त्र का अथ सही विरोधी के रतत सम्मान है। यदद हम ककसी रयोजन में विश्िासि करते ेहैं और देखते ेहैं कक ऐसे राष्र भी हैं जो हमसे सहमत नहीं ंहैं जो लोकतन्त्रात्मक पद्धतत का तकाज़ा है कक हम उन्हें अपनेदृक्ष्टकोण से सहमत होनेके शलए समझाए–ाँबुझाए।ाँ जैसै े लोकतन्त्रात्मक माग सआन्तररक समस्याओं के समाधान में सीधी कारसिाई, भीड़ का िासन अथिा दहंसा के साधनों का रयोग करने से इन्कार करता है, िैसेही हमें मानि-राणणयों की वििेकयुततता को मान लेना होगा और उनके साथ समझौता, विचार-विमि,स ताल-मेल एिं सहमतत का रास्ता अपनाना पड़ेगा।

जब आन्तररक जलन-इंक्जन, बेतार का तार और विमानन का आविष्कार हुआ, तब सभी ने उन्हें विज्ञान तथा रौद्योगगकी की रिंसनीय उपलक्धधयाा कहकर उनका स्िागत ककया। िैज्ञातनकों द्िारा बाह्य अन्तररक्ष में िेि को (जो अज्ञात की सीमाओं को पीछे धकेलनेका एक महत् ्रयत्न है) सामान्य पररक्स्थततयों में लोगों ने हर् स एिं गौरि के साथ ग्रहण ककया होता ककन्तु िास्तुक्स्थतत यह है कक हमें भय और दुकुश्चिन्ता है तयोंकक युद्ध के तिमसान िाताििरण में हम इन कृबत्रम उपग्रहों को सैतनक दृक्ष्ट से देखते हैंऔर यह जानते ेहैं कक उनसे ेआणविक क्षेपास्त्र लम्बी दूरूरयों तक भेजेजा सकते ेहैं। कोई राष्र या िासन धरती पर मानि जातत के विनिा-साधन की इच्छा नहीं ंरखता; कफर आकिाों की हलचल ने धरती पर भी घबराहट पैदा कर दी है।

सब जनताक्न्त्रक सरकारें स्िीकार करती हैं कक हमें विश्ि की सभी जाततयों या राष्ट्रों को पूण सिंि फलदायी जीिन का अिसर देना चादहए। स्ितन्त्रता की अमरीकी घोर्णा बड़े ज़ोरों के साथ कहती है कक सब मनुष्यों को जीिन, स्ितन्त्रता और सुखान्िेर्ण का अगधकार है। अपनी सामररक तैयाररयों से हम इन अगधकारों को संकट में डाल रहे हैं और विश्ि के भविष्य को अन्धकारमय बना रहे हैं।

लोकतांबत्रक माग सहमसे मागँाँ करता है कक हम िाक्न्तपूण ससहअक्स्तत्ि और सहयोगी जीिन-यापन को ग्रहण करें। यह हमसे कहता है कक हम पारस्पररक सहमतत के शलए धैयपूिसकस और तनरन्तर रयत्न करें और मतैतय तक पहुाँचने के शलए रत्येक माग सकी खोज करें। हम आत्म-समपणस के शलए नहींकहते, े तयोंकक यह तनरिाा का रततफल है, न हम तुष्टीकरण के शलए कहते ेहैं तयोंकक िह भी नैततक पतन का पररणाम है। परन्तु इसके साथ ही हम क्स्थर धारणाओं से िाशसत नहींहो सकते। हमें मानिीय विर्यों में मानि की स्खलनिीलता को मानना ही होगा। ककसी न्यायोगचत तनणयस में कोई भी पक्ष पूणतसः जीतता या हारता नहीं। एक दूसूरे से अच्छी मात्रा में देन-लेन होनी चादहए।

आधारभूत समस्या अब इस या उस राष्ट्र या इस या उस समूह की विजय नहीं है। यह मनुष्य के जीवित बचनेया आत्महत्या करने की समस्या है। यह तनणयस का अिसर है, तनरिाा का नहीं। विकल्प है विनाि या मानिीय भ्रातृत्ि । इसे ेदैियोग की सनकों पर नहींछोड़ा जा सकता। आज ककसी राष्ट्र के जीवित रहने के अगधकार की परख की माप उसके िस्त्रीकरण के आकार से नहीं, िरन् ्इस बात से होती है कक िह ककतनी दूरू तक समस्त मानि-समाज की गचन्ता रखता है। हमें कानून द्िारा रदि अगधकारों के सदहत संयुतत राष्ट्र या राष्ट्र संघ की कल्पना का समथनस करना ही चादहए, क्जससे िह आिमण को रोक सके, अपने तनणयस मानने और जारी करने को मजबूर कर सके; न्याय-शसद्धान्तों के अनुसार राष्ट्रों के बीच होनेिालेझगड़ों का तनबटारा करा सके। यदद हम विश्ि-समाज के रतत उच्चतर तनष्ठा का विकास कर सकें तो मानि-इततहास का मदहम युग हमारी पकड़ और पहुाँच के अन्दर होगा। इसके शलए आिश्यकता है कक हम मनुष्य के अन्दर आत्मा की िक्तत का पुनः आविष्कार करें तथा अपने अशभरायों की कफर से व्याख्या करें। यदद लोकतन्त्र को जीवित रखना है, तो उसका कफर से रादुभािस करना होगा। इसे ेअपनी राष्ट्रीय एिं आगथकस मूतत-सपूजा को विस्मृत करना होगा; आत्मलाभ या स्िाथ सछोड़ना होगा और इसकी आन्तररक धारणाओं की ओर लौटकर, इसकी आत्मा को, अन्तभािस को कफर से पकड़ना होगा।

इततहासकार हमें बताते ेहैं कक तनयतत की तलिार व्यक्ततयों के जीिन पर और राज्यों के ऊपर भी लटक रही है। हेरोडोटस शलखता है: "ज्यों-ज्यों म ैंअपनी कहानी के साथ आगे ेबढता जाऊाँगा, म ैंछोटे-बड़ेऐसे नगरों पर दटप्पणी करूाँगा जो कभी महान् ्थेऔर आज अगधकांि छोटे हो गए हैं तथा जो हमारी समझ में महान् ्हैं, िे पहले े छोटे थे। इसशलए यह जानतेहुए कक मानिीय समृद्गध कभी एक ही स्थान पर नहींरहा करती, दोनों के विर्य में एक िृवि में शलखगूाँ।" समृद्गध सेऔद्धत्य या हेकड़ी आती है, क्जसेयूनानी 'हाइबब्रस' या विनाि कहते ेहैं। सिा का रेम खतरनाक है। आज विश्ि की जो क्स्थतत है उसके शलए दुबलस राष्ट्र उिरदायी नहींहैं। महािक्ततयों के

 राजनीततक नेता ही मानि जातत को विनाि के कगार तक ले जानेकी धमकी देते ेहैं।

उन्हें अपनी नीततयों का
कफर से तनमाणस करना होगा और आणविक परीक्षणों पर रोक लगाकर तन:स्त्रीकरण के शलए रयत्न करना
होगा।

महात्मा गांधी ने उन नैततक शसद्धान्तों-सत्य और अदहंसां-की घोर्णा की, क्जन पर सभ्यता ठहरी हुई
है। सभ्यताए ँउसी सीमा तक बच पाएगँी क्जस सीमा तक ि इन शसद्धान्तों को ग्रहण करेंगी। हमारा कतव्सय है कक
ददन रहते,े अिसर रहते ेहम रयत्न करें। बुराई को तभी तोड़ा जा सकता है जब हम उसका उिर भलाई से हैं।
अन्धकार को गाली देनेसे कोई लाभ न होगा। हमें रकाि को बढाना होगा क्जससे ेअन्धकार दूरू हो सके। हमें
िेदना और करुणा में समथ,स कष्ट-सहन और त्याग में समथ समानि की आत्म-भािना में आस्था होनी चादहए,
क्जसने इन सब िताक्धदयों में मानि-रगतत को रोत्सादहत ककया है।

6. भविष्य के शलए लड़ाई

विचारिन मनुष्य के शलए संसांर की ितमसान अिस्था गौरि, आश्चय सतथा गचन्ता का स्रोत है। गौरि का विर्य यह है कक हमारी पीढी ने विज्ञान तथा रौद्योगगकी की ऐसी महती सफलताओंका विकास ककया है जो हमें गगन पर िासन करने, नक्षत्रों तक पहुुँचने तथा विश्ि के छोरों तक रसार पाने की सामथ्य सरदान करती हैं। हमारी सभ्यता इस दृक्ष्ट से अनुपम है कक िह हमें एक विश्िव्यापी सामाक्जक व्यथा का आधार देती है। विश्ि का ऐसा एकीकरण अतीत में कहीं नहींपाया जाता। नई क्स्थतत की चुनौती का सामना करने के शलए हमें नूतन साधन खोजनेहोंगे ेऔर विरासत में राप्त सामाक्जक एिं अंतराष्सरीय आचरण के साचौँ को स्थायी बनाने की चेष्टा छोड़नी होगी। हम आश्चयमूसढ इसशलए हैं कक समता एिंस्ितिन्त्रता के शसद्धान्तों पर आधाररत अन्तराष्सरीय संघटनों द्िारा एक विश्ि-व्यिस्था स्थावपत करने के हमारे रयत्न सफल नहींहुए हैं। यद्यवप हम जानते ेहैं कक विश्ि एक है, और चाहे हम इसे ेपसन्द करते ेहों या न करते ेहों, राजनीततक, राष्रीय एिं जाततगत भेदें के रहते े हुए भी, हममें से रत्येक का भानय दूसूरों के भानय के साथ जुड़ा है क्जसेहम जानते ेतो हैं परन्तु हमारी मांस-मज्जा एिं अक्स्थयों में उसका अनुभि नहींहोता। और जब हम देखते हैं कक महान् ्राष्र दूसूरों के साथ तनपटने ेके अपने ढंग में पररितनस करने के शलए तैयार नहींहैंऔर उन्हीं ंढंगों पर अड़े हुए हैंजो फैिन के रततकूल और खतरनाक हैं, तो हम हैरान ही नहींहोते,े गचन्तातुर भी होते ेहैं। बड़ी आकक्स्मता एिं तेज़ी से संसार एक-दूसूरे के साथ गुथाँ गया है और इस बलात् ्लादी घतनष्ठता ने मतभेदों को घनीभूत कर ददया और संघर् सकी सम्भािनाओं को बढा ददया है। हमारे युग ने जो समस्याएँ हमारे सामनेउठा फेंकी हैं, उनसे ेहम ककंकतव्सयविमूढ हो गए हैं तयोंकक विकशसत राष्र, क्जनसे हम नेतृत्ि की आिा करते ेहैं, हमें तनरािा कर रहे हैं।

यह सोचना गलत था कक हम विकास की यात्रा में आन उलझे हैं और हमारे रयल करने पर भी हम एक ज़्यादा अच्छी दुतुनया में पहुुँच जाएगेँ। इससे पहले ेके युग में हमें रगतत की अतनियतसा पर विश्िासि था। जब पृथ्िी केिल एक वपचला हुआ द्रिपुंज थी, तब कोई जीिन के उन रूपों की कल्पना भी नहींकर सकता था जो उसके बाद रकट हुए। धीरे-धीरे धरती ठंडी हुई, महासागर लहराए और उसके बाद िनस्पतत-जीिन आया। अमीबा (आद्यज जीिकण) से लेकर दूसूरे जीिों-सरीसृप, कवप, िानर आदद की अनन्त विविधता के बीच से नीनडरताल मानि, कफर आददमानि और बाद के सभ्य मानि तक एक ऊध्िसरगतत का िम बराबर चलतां ंरहा है। संकुगचत दृक्ष्ट से देखने ेपर जहा–ँतहाँ हास के उदाहरण भी शमल सकते ेहैं परन्तु दूरू दृक्ष्ट से देखनेपर ज्ञात होता है कक पश्चाद्गमन की, उलटिा की काला- िगधयों के होते ेहुए भी रिृवि ऊध्िगसामी ही रही है। इसशलए यह मान शलया जाता है कक एक तनदसय तकस-रकिया सेआगे ेबढते ेजाएगेँ –ियद अंधे ेकी तरह लड़खड़ाते हुए, पर अपनेबिाजूद, सभ्य जीिन की उच्चतर अिस्थाओंकी ओर । उन्नीसिीं िती में हमें रगतत की अतनियतसा में दृढ विश्िासि था। विकास-शसद्धान्त के विश्िासिी हमें बताते ेहैं कक राकृततक िरण या चुनाि के कानून का पररणाम यह होगा कक

तिमसान अपूण समाज एक अगधक पूण सतथा भव्यतर मानिता में बदल जाएगा। इततहास की मातसिसादी व्याख्या इस दृक्ष्टकोण का समथनस करती है। ककन्तु दो विश्ियुिद्धों के बाद हमें अपनेभविष्य का िह विश्िासि अब नहीं है। रथम विश्ियुिद्ध के बाद हम सबने कल्पना की थी कक हम वििेकिान राणी हैं और सभी मानिों का दहत एक ही है : हम सब िाक्न्त चाहते हैं, इसशलए हम तीव्र गतत से एक नूतन सामाक्जक समाकलन की ओर बढते ेजाएगेँ। द्वितीय विश्ियुिद्ध ने रगतत के इस बुलबुलेको तोड़ ददया।

इस तकस में मौशलक भ्राक्न्त िह गलत साधम्य सहै जो रकृतत-विज्ञान के इततहास और मानिीय इततहास, अिमानि-जाततयों को िाशसत करने िाले तनयमों तथा समाज में मानि के ऊपर लागू ककए जानिेालेतनयमों के बीच ककया जाता है। हम इसमें कोई सन्देह नहींकरते ेकक मनुष्य जििन के रारक्म्भक रूपों से आगे ेबढा है ककन्तु हमें यह तनश्चय नहींहै कक सुख एिंसामाक्जक सदाचरण में तनरन्तर रगतत हुई है। जब हम अतीतकाशलक सभ्यताओंके इततहास की ओर मुहँ करते ेहैंतो िहा ँउत्थान और पतन, एक ऊध्िगिसामी उभार, समस्याओंसे तनबटने ेकी चेष्टा, थकान, कफर धीरे- धीरे तनरन्तर हास, तन्तुओं का कड़ा पड़ते ेजाना, धमतनयों का कठोर होते े जाना और सृजनात्मक िक्ततयों का िशमक मरण-सब कुछ ददखाई पड़ता है।

क्जस सभ्यता का हपनेविकास ककया है, िह भी पररितनस के तनयम से बाहर नहीं है। इसका उत्थान होगा या पतन, आकाि के नक्षत्रों पर नहीं, हमारे ही ऊपर तनभरस है। सभ्यता मानिीय सृक्ष्ट है-यह मानि के मन और संकल्प की विजय है। आणविक िाक्न्त को ही ले लीक्जए। यह एक विराट मानिीय यन्त्र है; िैज्ञातनक कुिलता और आदिों द्िारा राप्त नूतन िक्तत का सचेतन उपयोग है। यह मानि की बनाई चीज़ है। इततहास भानय नहीं ं है। यहा ँिास्तविक विकल्प उपक्स्थत हैं। हम चुनाि कर सकते ेहैं-सही या गलत। महती रौद्योगगकीय िाक्न्त सबके शलए बाहुल्य का रबन्ध कर सकती है और यदद हम बुद्गधमान हैं तो िाक्न्त भी ला सकती है। ककन्तु यदद हम वििेक भ्रष्ट हैं, तो हमारी सारी आिाओंऔर समस्त जििन पर पानी फेर सकती है। युगों के स्िप्न की शसद्गध में, लोक-संग्रह में जो बाधा है, िह हमारे वपछड़े हुए ढंग और तनष्ठाए ँहैं। हम अपनी संकटापन्नता को जानते ेहैं। जब आदमी को उसकी तनयतत का ज्ञान हो जाता है, तो तनयतत समाप्त हो जाती है और मनुष्य अपने हाि में आ जाता है तथा अपने भविष्य की बागडोर खुद सभाँल लेता है।

कफर भी यह संघटन जानता है कक हममें त्रुदटयााँ तया हैं। यह जानकारी यदद घनीभूत हो जाए तो िह हृदय की इच्छानुसार अपना भविष्य बनाने में हमारी मदद कर सकती है। कुछ ऐसेआिश्यक कदम हैं जो सब राज्यों को उठानेचादहए।

क्जन सैतनक उपायों में आस्था रखते ेहुए सददयों से िे विकशसत होते ेरहे हैं उनका उन्हें त्याग करना होगा। ऐसा रतीत होता है कक हम अभी तक उसी शसद्धान्त का पालन करते ेआ रहे हैं तयोंकक उन्नत राष्ट्र अनुभि करते ेहैंकक तब तक उनका सम्मान नहींहोगा जब तक कक िे अणुबम बनाने में समथ सनहीं ंहो जाएगेँ। इस विर्य में िक्ततयों में भयानक रततस्पधास है, और उनमें से रत्येक दूसूरों को यह ददखाने का रयत्न कर रही है कक इन अस्त्रों के तनमाणस की दौड़ में िह सबसे आगे ेहै। िे भूल जाती हैं कक युद्ध की क्स्थततयााँइस कदर बदल

चुकी हैं कक आज पराजय और विजय के बीच बहुत ज्यादा अन्तर नहींरह गया है। आणविक युद्ध में जीतने जैसी चीज़ अब नहींरह गई है। ककसी भी राष्ट्र के शलए आणविक युद्ध आरम्भ करना दुुःखदायी गलती होगी, तयोंकक इसका अथ सहै-सबका विनाि। इतनेपर भी हम तनरन्तर इन नाटकीय अस्त्रों को बनाते ेऔर मानि जातत के ऊपर भय के काले ेबादल फैलाते जा रहे हैं। यदद हम यह कल्पना करते ेहैं कक उनकी विनािकता से डरकर हम उनके रयोग का त्याग कर देंगे ेतो हम अपनेको धोखा देते ेहैं। यदद युद्ध का कोई भविष्य है तो कफर मानि-समाज का कोई भविष्य नहींहै; यदद मानि-समाज का कोई भविष्य है तो युद्ध का कोई भविष्य नहीं है।

राष्ट्रीयता को विश्ि-तनष्ठा के नीचे, उसके तनयन्त्रण में रहना होगा। मो-त्सू ईसापूि सपाचाँिीं ंिितािदी में एक चीनी विचारक हुआ है। उसनेअपनेसमय के चीन की संकटपूण सक्स्थतत का जो िणनस ककया है िह हमारे तिमसान संकट में अरासंगगक नहींहै। चोर अपनेखुद के कुटुम्ब को प्यार करता है, और अपने इस रेम की खाततर िह सोचता है कक िह दूसूरे कुटुम्बों की चोरी या उसका विनाि कर सकता है। एक सरदार अपनेकबीले को प्यार करता है और उसके शलए दूसूरे कबीलों का दुरुपयोग िींिणि करने में अपनेको ठीक समझता है। एक सामन्त अपनी जागीर को चाहता है और दूसूरे सामन्तों को सताना ठीक समझता है। आज, राष्ट्र-राज्य ने हमें िििीभूत कर रखा है। राष्ट्रीयता तब तक उपयोगी िक्तत है, जब तक िह कतव्सय, सि-ससामान्य की भलाई की तनष्ठा और सामान्य कल्याण के शलए त्याग के उच्च शसद्धान्त हममें जगाती है। ककन्तु जब िह हमें गलत रास्तों पर ले जाती है-यदद िह हममें यह भािना पैदा करती है कक िह गलत हो या सही, हमें अपने देि का समथनस करना ही चादहए- तो उसकी तनन्दा की जानी चादहए। हम एक ऐसे दजेपर पहुंच गए हैं, जहां ंराष्ट्रीयता मात्र पयाप्सत नहींहै। हमारी आिश्यकताएंएिं समस्याएं बीसिीं ंसदी की हैं। हमारी तनष्ठा समग्र मानिता के रतत होनी चादहए। हमें यह अनुभि करने में समथ सहोना चादहए कक भले हमारे राष्ट्रीय दहतों को हातन पहुँचे ेककन्तु यदद उसनेमानिता का, मानि जातत का रक्षण होता है तो िह उगचत है। हमें विश्ि की आध्याक्त्मक एकता को विक्च्छन्न करने में अपनी राष्ट्रीय तनष्ठा का रयोग नहींकरना चादहए।

हमें अपनैयक्ततक तथा संघीय अशभमान एिंअहम् ्को त्याग देना चादहए। मानिीय इततहास का मूल दुगुणस यह अशभमान है कक हमें ईश्िर ने ही दूसूरों को शिक्षक्षत करने और उन्हें अपनी जीिन-रणाली में पररतनक्ष्ठत करने के शलए चुना है। यूनानी कवियों के अनुसार, हुबब्रस, अशभमान का औद्धत्य-व्यक्ततगत एिं ं राष्ट्रीय-ही सब दुुःखान्तक घटनाओंका मूल है। यह अशभमान का रततिोध ही था क्जसने शमस्र के फराओं, यूनान के िासकों, फारस के सम्राटों, बगदाद के खलीफाओंऔर मध्यकाशलक रोम के पोपों का अन्त कर ददया। तनकट के और उदाहरण देना जरूरी नहीं ंहैं। केिल हेकड़ीबाज़ यह विश्िास करते ेहैं कक िेर् जगत् ्का िासन करने योनय पयाप्सत बुद्गध और गुण उनके पास हैं। जो अशभमान विनम्रता का उपहास करता है, िह बहुत ही खतरनाक होता है। परमात्मा उन लोगों को अपनेही ढंग पर शिक्षा देता है जो महती िास्तविकताओ की, मानि-मयादसा की, मानिीय एकता की भािना की और सभी लोगों के स्ितंत्रता के अगधकार की जान-बूझकर बहुत समय तक उपेक्षा करते ेरहते ेहैं।

आज हमें विनम्रता की भिाना की आिश्यकता है। हमें यह रुख त्याग देना चादहए कक हम ठीक हैं और हमारे विरोधी गलत हैं या यह कक हम जानते ेहैंकक हम पूण सनहींहैं परन्तु तनक्श्चत रूप से अपनेिंत्रुओं से अच्छे हैं। िर्ों से सामूदहक िध देखते-देखते हम तनष्ठुर हो गए हैंऔर भयानकताओं को देख-देखकर कठोर हो गए हैं। बहुत उन्नत राष्ट्रों में बड़ी मात्रा में बबरसता है और बहुत वपछड़ी हुई जाततयों में भी सभ्यता का काफी बड़ा अंहै। एक ज़माने में सभ्यताएं बाहर से बबरसों द्िारा नष्ट कर दी गई थीं; हमारे समय में इस बात की सम्भािना है कक िे अन्दर से उन बबरसों द्िारा नष्ट कर दी जाएं ंक्जन्हें हम पैदा कर रहे हैं। रौद्योगगकीय िाक्न्त की जोड़ी की एक नैततक िाक्न्त करनी पड़ेगी। हमें नूतन मानिीय सम्बन्धों का विकास करना ही पड़ेगा और राष्ट्रों की बौद्गधक संघटना तथा नैततक ऐतय को रोत्सादहत करना ही होगा। सरकारों को भी एक हृदय, एक अन्तःकरण, एक भिाना, कक हम सब जातत एिंिग सके बन्धनों से परे एक ही बबरादरी के सदस्य हैं, का विकास करना चादहए।

यदद विश्ि-तनष्ठा की भिाना बढानी है, तो हमें जीिन की दूसूरी परम्पराओं से गुण-ग्रहण की िृवि पैदा करनी होगी। यह दिे बहुत ददनों सेअनेक संस्कृततयों-आय,स द्रविड़, दहन्दू,ू बौद्ध, यहूदी, पारसी, मुसलमानी और खीष्टीय-का शमलनस्थल रहा है। आज जब संसार शसकुड़ता जा रहा है तो सभी जाततयों एिंसंस्कृततयों के इततहास हमारे अध्ययन के विर्य बनने चादहए। यदद हम एक-दूसूरे को ज़्यादा अच्छी तरह जानना चाहते हैं तो हमें अपने अलगाि की िृवि और बड़प्पन की भिाना छोड़ देनी चादहए और मान लेना चादहए कक दूसूरी संस्कृततयों के दृक्ष्टकोण भी उतनेही उगचत हैं और उनका रभाि भी उतना ही िक्ततमान है, क्जतना हमारा है। मानि-जातत के इततहास के इस संकंट-काल में, हमें मानिीय रकृतत को पुनः नूतन ढंग पर गदठत करनेकी आिश्यकता है। इस सम्बन्ध में राच्य-पाश्चात्य अिबोध के शलए 'यूनेस्को' जो मूल्यिान काय सकर रहा है, उसकी हम रिंसा करते ेहैं।

आज भी पूिी यूरोप, पक्श्चमी एशिया और अफ्रीका में आिक्न्त और संघर् सितमसान है। जब संसार को ककसी दूसूरे महायुद्ध में लपेट लेनेका खतरा दूरू नहींहुआ है तो हमें विनम्रता और अनुद्विननता से काय सकरना चादहए। हमें ददखला देना चादहए कक राष्ट्र भी स्िाथि-सरदहत व्यिहार कर सकते ेहैं, जैसा कक कभी-कभी व्यक्तत करते ेहैं। भविष्य की लड़ाई मनुष्यों के मन और हृदय में जीती जानी चादहए। हममें से हर एक अिबोधपूण समानस और अनुतप्त हृदय का विकास करे। म ैंआपको विश्िास ददलाता हूूँ कक तब राष्ट्रों के बीच युद्ध उसी रकार असामतयक हो जाएगेँ जैसे ेव्यक्ततयों के बीच के द्िन्द्ि-युद्ध हो गए।

7. एक आक्त्मक िृवि : एक जीिन-माग स

लोग एशियाई मानस के धाशमकस झुकाि और यूरोपीय मनोिृवि की िैज्ञातनकता पर जोर देकर एशिया को यूरोप से शभन्न बताते िेहैं। इस भेद को इस तथ्य से समगथतस ककया जाता है कक लगभग समस्त जीवित धमों का रादुभािस एशिया से हुआ है और : जो चमत्कारपूण सिैज्ञातनक उपलक्धधया ाँआधुतनक सभ्यता का गौरि हैं िे मुख्यतः पाश्चात्य मानस के बौद्गधक रयत्न एिं पैठ का पररणाम हैं। यदद हम इन बातों पर दूरूदृक्ष्ट से विचार करें तो देखेंगे ेकक महान धाशमकस रततभाए ाँपक्श्चम में भी हैं, जैसे ेकक लधधकीतत सिैज्ञातनक पूि सर्में हैं। आधुतनक इततहास के रीक्जयस'[46] रोफेसर लाड सऐेतटन ने 11 जून, 1895 को कैक्म्ब्रज में जो उद्घाटन भार्ण ददया था, उसमें कहा था : "जब हम तीन हज़ार िर्ों को अलग करके, चार सौ िर्ों का तनरीक्षण करेंगे ेतो

हमें कोई दिनस राप्त नहींहो सकता। यह एक अपूण सतथा भ्रमात्मक स्थापना होगी।" धम सऔर विज्ञान, श्रद्धा और तकस मानि-रकृतत के विशभन्न पक्षों का रततततनगधत्ि करते ेहैं। हममें से रत्येक धाशमकस और िैज्ञातनक दोनों ही हैं। ज़्यादा-से-ज़्यादा यह दोनों में से एक पर ज़ोर देनेकी बात है। इस रािधान के साथ म ैंइस पुरातन देि की, जो िृद्ध और तरुण दोनों है, रेरक भािना-रेरक भािना या आत्मा क्जसनेपूि सके अनेक भागों और पक्श्चम के भी कुछ भागों पर रभुत्ि रखा है-पर संक्षेप में विचार करूाँगा। अंगकोरिाट, बोरोबुदुर और अनेक दूसरे िैभिर् रततष्ठा के हमारे दािे ेकी ओर, सभ्यता के रतत हमारी देन की ओर इंगगत करते ेहैं। भारत एक मानशसक चौखटा है; एक मानशसक िृवि है; आत्मा की एक रेरणा है; जीिन का एक माग सहै। इसका धम,स अपनेविसिेसम रूप में, िैज्ञातनक और लौककक, राजनीततक एिं आध्यात्मिक है। िह जीिन को ककस रूप में देखता है ?

1. जागततक विकास की रकिया पदाथ ससेजीिन की ओर जाती है, जीिन से जीिमानस, जीिमानस से मानिीय रज्ञा और इसके बाद का कदम है-मानिीय रज्ञा से आध्यात्मिक मुक्तत। हमारी बौद्गधक चेतना दीप्त चेतना बन जानी चादहए। जबकक अिमानिीय स्तरों पर गतत अपने-आप या नैसगगकस होती है; मानि-स्तर पर विकास केिल चेतन एिं स्िेच्छापूण सरयत्न से ही सम्भि है ।

.

2. मनुष्य एक मुतत राणी है–िह स्ितंत्र कता सहै। अशभकतासस्ितंत्र है। रत्येक व्यक्तत में आत्म की गचनगारी है। यह आत्मा की उपक्स्थतत ही है जो मानि-स्िभाि को एक मयादसा रदान करती है। यही लोकतन्त्र का आधार है। यही मानिीय अगधकारों की सािभसौम घोर्णा का औगचत्य है।

3. आरकफयसािदी (रहस्यिादी) कहते ेहैं कक हम पृगृथी-पुत्र हैं और नक्षत्राककत गगन के भी पुत्र हैं। मनुष्य पृगृथी और स्िग,स धूल एिं देिता दोनों का शमश्रण है। हमारे भीतर जो जीिात्मा है िह अनेक अनाध्यात्मिक स्तरों पर शलपटा हुआ है। यदद हम िैर्यक्ति–स्तुपरक घटनाओंमें खो जाते ेहैं तो मानि की स्ितंत्रता अव्यतत रह जाती है। तब आत्मतनष्ठ पदाथतसनष्ठ होकर रह जाता है-मानस-रदहत, विचार-रदहत तथा भािना-रदहत । यदद मनुष्य

---

[46] हेनरी अष्टम द्िारा स्थावपत कैक्म्ब्रज एिं आतसफोड सपीठ के रिता ।

अपनी आत्मतनष्ठता, अपनी आन्तररकता को पुनः राप्त कर लेता है, तो िह अनाध्याक्त्मक का तनयन्त्रण करने योनय हो जाता है और आध्याक्त्मक लक्ष्यों के शलए उसका उपयोग कर सकता है। आत्मा और रकृतत में कोई विरोध नहींहै। रकृतत को आत्मा के िीिीभूत, तनयक्न्त्रत ककया जा सकता है।

धम सका अशभराय ही अपनेसम्पूण सजीिात्मा को, िरीर, मन, हृदय और संकल्प को अनुिाशसत रखने ेमें हमारी सहायता करना है। राथनसा, ध्यान एिंआत्म-तनयन्त्रण द्िारा हम अपनेसम्पूण सव्यक्ततत्िको संग्रगथत करते ेहैं।

4. संग्रगथत व्यक्ततत्ि, कफर चाहे क्जस भी धम सको िे मानतेहों और चाहे क्जन जाततयों के हों, एक ही पररिार के सदस्य हैं। जो भी पितस श्रृंग पर आरोहण कर जाते ेहैं, िे नक्षत्रों तक पहुुँच जाते ेहैं। ऐसा धम सअपिजकस अथिा एकागधकारवरय नहींहो सकता। यदद हम सामाक्जक यन्त्र-रथाओं एिंरीततयों, खान-पान की आदतों और िीिादहक तनयमों के पीछे पहुुँच सकें तो हमें ज्ञात होगा कक बल आध्याक्त्मक जागरण पर, नैततक पुनजन्सम पर ददया गया है। मूल में सभी धम सपरस्पर-ग्रगथत हैं और िे शिखर पर शमलते हैं।

5. अपने इततहास के आरम्भ से ही भारत के दृक्ष्टकोण में सािदेसशिकता रही है। ऋनिेद हमें बताता है कक 'रेमी ऋवर् उस रहस्यमयी सिा को देखता है, जहा ाँसम्पूण सजगत् ्एक ही गृह राप्त करने के शलए आता है।"[47]

भ्रातरो मनुजाः सिे स्िदेशो भुिनत्रयम् ्।

सब मनुष्य, शिि एिंकृष्ण, दहन्दू ूऔर मुसलमान, ईसाई और यहूदी भ्राला हैं, और हमारा देि बत्रभुिन है। हमें उन िस्तुओं के रतत श्रद्धा रखनी चादहए जो तकसपूण सज्ञान की सीमा से परे हैं और क्जनके विर्य में कुछ भी कहना कदठन है। सब शमलाकर मानि-जातत के शलए हमारी आिा उस सम्मान एिंश्रद्धा पर आधाररत थी जो मनुष्य दूसूरे लोगों के विचारों के रतत रखतेथे। दूसूरों पर अपने विचारों को लादने ेका यत्न नहींकरना चादहए। एक रशसद्ध श्लोक में कहा गया है:

उत्तरं यत् ्समुद्रस्य हहमाद्रेश्चैि दक्षिणम् ्।
िर्षं ंतद् भारतं ंनाम, भारती यत्र सन्जततः ।।

जब विशभन्न धमािसलम्बी इस देि में एकत्र होतेहैं तो देि के आध्याक्त्मक नेता विशभन्न लोगों को अपनी परम्पराओं की शिक्षा देते ेहैं और नैततक आचरण के तनयमों में उन्हें रशिक्षक्षत करते ेहैं: स्िं स्िं चररत्रं ं शिक्षेरन् ्...।'[48] भगिद्गीता हमें कहती है कक हमें लोगों के मन में केिल इसशलए भ्राक्न्त नहींउत्पन्न करनी चादहए कक हम समझते ेहैं कक िे अज्ञान और कमासतत हैं।

[47] िेनस्तत्पश्यक्न्नदहतां गुहा सद्यात्रा विश्िं भित्येकनीडम् ्।

[48] मनु कहते ेहैं:
एतद्देिरसूतस्य सकािादग्रजन्मनः ।

न बुद्रधभेदं जनयेदज्ञानं कमसमङ्गिनाम्।्

भारत ने दो में से ककसी भी दिनस को ग्रहण नहीं ंककया। जीन समस्त विपरीतताओं पर विजय राप्त करता है; उन्हें नष्ट करके नहीं, अवपतु एक बृहिर और व्यापक ढाचेँ में उनको बुनकर। इसी दृक्ष्टकोण का पररणाम है कक भारत में विशभन्न धमो का िाक्न्तपूण सह-अक्स्तत् रहा है और ि एक-दूसूरे को रभावित करते रहे हैं-यद्यवप यह परम्परा बीच-बीच में कुछ धमों की धम-सपररितनसकारी कारसाइयों से बुरी तरह क्षततग्रसत भी होती रही है।

भारतीय राज्य का धमतसनरपेक्ष रूप उस सम्मान पर बल देता है जो इस दि में बसने िाले सब धमों के रतत िह रदशितस करता है। भारत अनेक बार इससे हट भी गया है और फलस्रूप हातन उठाई है।

हमारी सभ्यता के नैततक एिं आध्याक्त्मक मूल्य कदागचत् एक बृहिर मानिीय भ्रातृत्ि के आधार का काम दे सकते हैं।

रगतत यानी मानि-पीढी को रज्ञा एिं सद्गुण की नूतन ऊँचाइयों तक ले जाने िाली रगतत अतनिाय स नहींहै। मनुष्य बुरा करने में भी समथ सहै, जैसाकक िह भला करनेकी भी सामथ्य सरखता है।

भविष्य के विर्य में कुछ भी अतनिाय सनहींहै। हम स्पेंगलर जैसे तनश्चिाददयों के साथ सहमत नहीं, जो कहता है कक "संस्कृतत का इततहास ककसी ियक्क्तक जीि या ककसी राणी या कोई िृक्ष या पुरुर् के इततहास की ठीक रततिस्तु है।" ऐततहाशसक घटनाए ँभौततक या जीिास्त्रीय घटनाओंकी भातँत नहीं हैं। उनमें राकृततक पररक्स्थततयाँऔर आध्याक्त्मक िक्क्तयाँएक-दूसूरे पर अपनी रततकिया करती हैं। स्ितंत्रता और आिश्यकता एक जीिन्त ऐतय, एक जीवित सम्पूण समें करस्पर आशलंगन करती हैं-जुड़ जाती हैं। हम विनाि में संकट में कूदेंगे या स्िप्न में भी न देखी गई ऊँचाइयों पर चढ जाएगेँ, यह सब हमारे ही ऊपर तनभरस करता है। जॉन डिी घोवर्त करते हैं: "रगतत के भविष्य के विर्य में म ैंकेिल इतना ही जानता हूँ कक यह कहना मनुष्य पर ही तनभरस करता है कक िह उसे चाहता है या नहीं।"[49] मानि-जातत क्जस तनयतत को अपने बौद्रधक एिं नैततक अनुिासन से तैयार करती है उसके शसिा और कोई तनयतत उसकी रतीक्षा नहींकरती।

जो नूतन िक्क्तयाँ मानिीय इततहास की ददिा को रूप दे रही हैं; नहीं, उसे बदल रही हैंउनमें सबसे महत्त्िपूण सहै अणु-केन्द्रों में बन्द िक्क्तयों को मुतत करनेके उपायों का आविष्कार। यह नई िक्क्त भलाई और बुराई दोनों के शलए रयुतत हो सकती है। हममें से अनेक लोग, जो हमारे द्िारा की हुई रौद्योगगकीय रगतत तथा तछछोरापन, अशिष्टता, उजड्डपन तथा हमारे मनों की संकुगचतता के बीच स्पष्ट विरोध देखते हैं, तनरािा से भर स्िं स्िं चिररत्रंशिक्षेरन् पृगृथव्यां सिमसानिाः ।।

---

49 जोज़ेफ़ रैटनर : दट कफलासफी ऑफ जॉन डिी, पृ० 461

गए हैं। हमनेअणु बम बनाए और वपछले ेयुद्ध में उनका रयोग ककया। िैज्ञातनक हमें बताते ेहैं कक आणविक परीक्षण भी अज्ञात एिं अनुत्पन्न पीदढयों को असमान्यता, अंग-भंग, उत्पीड़न, रोग और िीघ्र मृतूयुसे अशभिप्त कर देंगे।

मनुष्य-जातत आज कसौटी पर है। हमारी बौद्गधक िक्तत और हमारे अमानुर्ी कृत्य के बीच जो विरोध है उसनेगचन्तना और समस्त विश्ि के भिाना-रिण व्यक्ततयों को तनरािा से भर ददया है। अपनी मृतूयु के कुछ पहले ेएच० जी० िेल्स ने शलखा था, "एक भयानक विगचत्रता जीिन में आ गई है। अभी तक घटनाए ँककसी ताककसक संगतत सेएक-दूसूरे के साथ गुँथी रही हैं-जैसे ेकक आकािीय वपण्ड या नक्षत्र एक-दूसूरे के साथ गुरुत्िाकिर्णस के स्िणि-ससूत्र में बधेँ ेरहे हैं। अब तो ऐसा लगता है कक िह सूत्र लुप्त हो गया है और िह सिित्रस ककसी तरह ककसी भी जगह तनरन्तर बढते ेहुए िेग से दौड़ा चला आ रहा है। लेखेक का विश्िासि है कक आस-पास या इस
बन्द गली से बाहर जानेका कोई माग सिर् नहींहै। यह हमारा अन्त है।"[50]
आणविक अस्त्रों में रगतत होनेके पूि सही िेल्स ने यह शलखा था। महान मनोिैज्ञातनक काल सगुस्तिै जुंग हमसे कहते ेहैं, "आत्मा का विपथगामी विकास तनश्चय ही हमें सामूदहक मानशसक विनाि तक पहुँचा देगा। तिमसान क्स्थतत इतनी भयानक है कक कोई अपना यह संिय तछप नहींसकता कक स्रष्टा दूसूरा जल-रलय संयोक्जत कर रहे हैं, जो मनुष्य की ितमसान जातत को अक्न्तम रूप से नष्ट कर देगा।"

जब नैततक मनोिेग आधुतनक अस्त्रों से सक्ज्जत हैं तो हमारे सामनेभयानक संयोग उपक्स्थत हैं और हमारे करुणािील बुद्ध या पीड़ाक्षम ख्रीष्ट की शिक्षाओं की ओर लौटनेकी अपेक्ेषा उस कबीलाई ईश्िर के समादेिों की ओर ही लौटने की अगधक संभािना है क्जसने अपनेआदशमयों को हुतम ददया था कक अपनेित्रुओं को तनदसयतापूिसक नष्ट कर 77 / (376) छोड़न मत, बक्ल्क पुरुर्, स्त्री, बच्चे और दूधू पीते ेशििु, बैल, तथा भेड़, ऊँट तथा गधे-सबको मार डालो।" यही बात तो घदटत हुई थी दहरोशिमा में, जब तीन लाख तनिाशसयों का नगर 6 अगस्त, 1945 को खत्म कर ददया गया क्जसमें एक ततहाई आदमी मारे गए तथा बहुतेरे घायल हुए। युद्ध अब सदा से अगधक बबरसतापूण,स अगधक विनािक और अगधक अध:पतनकारी हो गया है।

इस भयानक सम्भािना का यह कोई उिर नहीं है कक हम भौततकी में होने िाली िैज्ञातनक रगतत को बन्द कर दें। ये िैज्ञातनक उपलक्धधयाँ हमारी बौद्गधक तनगध का पररणाम तथा मानिीय विकास का अंग हैं। नूतन ज्ञान की खोज बन्द नहींकी जा सकती। हमें निीन विचारों, नूतन जीिन-मागों का अिलम्ब लेना होगा। यदद हम दूसूरों को स्थान नहींदेना चाहते तो हमें अपनी सम्भािनाओं को अगधकागधक चररताथ सकरना होगा।

मानिता का विनाि तनैयक्ततक िक्ततयों अथिा अतत-राकृत व्यिस्थाओं का पररणाम नहींहोगा।
यदद िह घदटत हुआ तो िह मनुष्य की हठधमी और हेकड़ी, क्जसेयूनानी 'हाइबब्रस' कहते ेथे, सिा के शलए

---

[50] दद माइण्ड ऐट दद एण्ड ऑफ इ्स टेथर, पृ० 4-5

अनुिासन-विहीन आसक्तत (क्जसने मानिीय इततहास के ककतने ही पृष्ठों को कुक्त्सत ककया है) का सीधा फल होगा।

हमें तनरिा होनेया श्रद्धा का त्याग करने की आिश्यकता नहींहै। हमें जगत् ्के केन्द्र dot 4 , अन्तर में जो रकाि एिं रेम है, उससे रदीप्त होकर सजनसात्मक एिं साहसी बनना पड़ेगा। सबके शलए िाक्न्त, स्ितंत्रता एिं सुरक्षा का नूतन विश्ि उन्हींके द्िारा राप्त ककया जा सकता है जो महत् ्आध्याक्त्मक आदिों से रेररत है। इस महती उथल-पुथल के बीच संक्श्लष्ट एिं साथकस जीिन बबताने का यही एकमात्र माग सहै। क्जस बात की आिश्यकता है, िह ज्ञान नहीं, उदारता है। यदद हमारी वििाल योजनाए ाँअसफल हो जाती हैं; यदद हमारे सम्मेलन गत्यिरोध या क्ज़च में समाप्त होते ेहैं, या हमारी विज्ञक्प्तया ाँकटूक्ततयों का वितनमय करती हैं तो यह सब इसशलए कक िे ऐसेआदशमयों के हाथ में होती हैं क्जन्होंनेआन्तररक अशभिृद्धि की पीड़ा नहींभोगी है। व्यक्ततयों के रूप में हम पहले ेसे अगधक मानिीय, अगधक करुणािील हैं। बहुत सारी स्िाथि-सरदहत दयालुता ददखाई भी पड़ती है ककन्तु समूह या दल के सदस्यों के रूप में हम उतनेतन:स्िाथि सनहीं हैं। हम अपनेसम्बन्ध में मोह से पूण सऔर मतभेद रखनेिालों के रतत उिेजनापूण सघृणा से भरे हुए हैं। जब तक हम अपना पुनतनमसाणस नहीं ं करते,े हमारी सम्पूण सबाह्य सफलताए ाँहमें कोई सहायता न पहुाँचा सकेंगी। हमें क्जस चीज़ की आिश्यकता है, िह ज़्यादा अच्छा संघटन नहीं िरन् ्ददिा एिं दृक्ष्टकोण का पररितनस है।

हम संयुतत राष्ट्र संघ के सदस्य हो सकते ेहैं परन्तु हम तब तक सफल नहींहो सकते ेजब तक राष्ट्रीयतापूण समूततपूसजा तथा िाक्ति की राजनीतत के रभुत्ि-तलेहैं। हमारे मन संियग्रस्त, विभाक्जत तथा खक्ण्डत हो रहे हैं। हमें मानिीय रकृतत की अन्धता और संसार के विद्रोह के विर्य में भ्राक्न्त नहीं होनी चादहए। जीिात्मा विभाक्जत है। िह भला करना चाहती है पर करती नहीं; िह बुराई से दूर रहना चाहती है परन्तु बुराई का तनराकरण करने की इच्छा, अगधक िक्ततमान मनोिेग के आगे ेकन्धा डाल देती है।'[51] हम िाक्न्त के शलए राथनसा करते ेहैं ककन्तु संघर् सएिं द्िन्द्ि को बढाते ेहैं। यदद व्यक्तत के शलए अपनेदहत को, स्िाथि सको राष्ट्र के दहत के ऊपर रखना गलत समझा जाता है तो राष्ट्र के मामले ेमें भी राष्ट्रीय दहत को मानिता के बृहिर कल्याण के ऊपर रखना गलत है।

यदद हम 'पहले ेस्िगि सके राज्य की तलाि करो' के शसद्धान्त का उल्लंघन न करें तो ऐसी जगह हठधमी-रदहत अथ समें धम सबड़ा सहायक शसद्ध हो सकता है: हमारा विक्षत और व्यग्र समाज एक नूतन व्यिस्था में ढिर कर सकता है। आत्मा का रोग केिल धम सके ऐसेअनुिासन से अच्छा हो सकता है जो अन्तराष्ट्सरीय सम्बन्धों में भी इस शसद्धान्त की स्थापना करता है कक हम सब एक-दूसरे के सदस्य हैं। राष्ट्रीय नेताओंको अपने राष्ट्रों के रक्षण से बृहिर कल्याण की कल्पना करनी चादहए। हमारे मन एिं हमारे हृदयों के बदलेजाने की आिश्यकता है। हमें मानिीय महिा में, मानिता एिं सदइच्छा में जीना एिंविकशसत होना चादहए।

---

[51] जानाशम धम सन च मे ेरिृवि:
जानाम्यधमं ंन च मे ेतनिृवि: । रोमांस 7 भी देणखए

8. राष्रीय एकता तथा नई विश्ि-व्यिस्था

राष्रीय संग्रयन एक ऐसी समस्या है क्जससे ेसभ्य राष्र के रूप में हमारे जीवित रहने का रश्न जुड़ गया है। हम अपनी पुरातन सभ्यता में, जो लगातार एिं अखक्ण्डत चली आ रही है, गौरि का बोध करते ेहैं। कहा जाता है कक इससे पहले ेसभ्य जिीन शमस्र और िैविलोन में आरम्भ हुआ ककन्तु इन राष्रों के अतीत को ितमसान से शमलानेिाली कडड़या ाँपूरी तरह टूट चुकी हैं। फराऊन सम्राटों अथिा सुमेरिशसयों अथिा उनकी संस्थाओंकी कोई जीवित स्मृतृत िेर् नहीं है। ककन्तु भारतीय सभ्यता की आधारभूत धारणाए–ाँआध्याक्त्मक, नैततक एिं

 सामाक्जक-अब भी रयोग में आ रही हैं'[52] और भारतीय संस्कृतत की स्थावपका उन्हीं के कारण बनी हुई है-उस
भारतीय संस्कृतत की जो रायः असम्भि ऐततहाशसक पररक्स्थततयों में भी चार सहस्र िर्षों से जीवित है।

राष्रीय भिाना क्जस दिे में हम रहते ेहैं उसकी भूशम के रतत रेम, ऐततहाशसक परम्पराओं-क्जन्हें हम विरासत में पाते हैं-तथा एक सितसनष्ठ भविष्य की आिा के कारण जीवित रहती है। हम अतीत का स्मरण करते े हैं, ितमसान के रतत जागरूक रहते ेहैं और भविष्य के शलए कम सकरते ेहैं।

भारत एक भौगोशलक तथ्य है। भौगोशलक दृक्ष्ट से भारत एक ऐसी विस्तृतृत है जो सागरों और पितसों से तघरा हुआ है और क्जसमें जगह-जगह महानददयों पर बनेबाधाँ हैं, बीच-बीच में खानें हैं। उिर में दहमालय और दक्षक्षण में सागर से तघरे इस क्षेते्रफल में जो लोग रहते ेहैं, िे सब भारतीय हैं-कफर चाहे िे दहन्दू,ू मुसलमान, शसख, -ईसाई जो भी हों (तद्ि् ंभारतंनाम, भारती यत्र सन्तततः) । भारत उन सबकी मातृभूशम है जो इसमें रहते ेहैं। विविध उद्गमों एिं स्रोतों से तनकले ेलोग भारत आए और उसकी संस्कृतत को रभावित ककया, जो एक है यद्यवप अपनी अशभव्यक्ततयों में विविधरूपा है। भारत कभी पूणतसः एक सम्राट के िासकीय रभुत्ि में नहीं ंरहा-यद्यवप हि अिोक, समुद्रगुप्त और अकबर के काल में बहुत-कुछ इसके तनकट पहुँच गया था। बब्रदटि रभुत्ि ने समस्त भारत को िासकीय ऐतय रदान ककया। आज हमारा रजातन्त्र कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से आसाम तक फैला हुआ है। िताक्धदयों से भारत की एकता लोगों का आदि सरही है। महाभारत कहता है कक भारत के सब तनिासी, सुदूरू दक्षक्षण के तनिाशसयों-सदहत, कुरुक्षेते्र युद्ध के समय एकत्र हुए थे।

विंसेंण्ट क्स्मथ का कथन है : "विना ककसी संयि के भारत में एक गहन अन्ततनदहत मौशलक एकता है और िह उससेकहीं ंअगाध है क्जतनी भौगौशलक अलगिा अथिा राजनीततक रभुसिा से आविभूतस हो सकती है। हि एकता, रतत, िण स(रंग), भार्ा, िस्त्र-विन्यास, आचार एिं सम्प्रदाय की असंख्य विविधताओंको पार कर जाती है।"[53] राजनीततक रकल्पनाओं तथा आगथकस व्यिस्थाओंके पीछे सांस्कृततक बन्धन हैं। भारत वपछली चालीस िततयों सेआत्मोन्मुखी रेरणा का घर रहा है, और यहााँविभेदों के बीच ऐतय का विकास करने का मानिीय मेधा का अत्यन्त आश्चयजसनक रयास चलता रहा है। ज्ञात और अज्ञात स्थानों से आए हुए मानिों की धारा इस दिे में बही है: आय,स द्रविड़, िक, हूण, पठान और मुगल।

हमारे इततहास के आरम्भ से भारत एक बहुभार्ी, बहुजातीय और बहुधमी समाज रहा है।[54] यह विविध जाततयों एिं संस्कृततयों का संगमस्थल है।

---

[52] रोफेसर बिाम कहते ेहैं "भारत की पुरातन सभ्यता, शमस्र, मेसोपोटाशमया एिं यूनान से इस विर्य में शभन्न है कक इसकी परम्पराएँ, बबना ककसी विच्छेद के, आज तक सुरक्षक्षत हैं। विश्ि में भारत और चीन सबसे राचीन, नैरन्तर सांस्कृततक परम्पराएँ रखनेिाले दिे हैं।"-दद िण्डर दैट िाज़ इक्ण्डया (1954), पृ० 4

[53] विसटें क्स्मथ : दद आतसफोड सदहस्री ऑफ इक्ण्डया, पशसवसिल स्पीयर द्िारा सम्पाददत, 1958, पृ० 7 ।

[54] देणखए कूम सपुराण
भारतेर्ु क्स्त्रयः पुंसो नानािणाःस रकीततततसाः ।

भारत का ऐततहाशसक शमिन मानिों की विशभन्न जाततयों, विशभन्न धाशमकस विश्िासों के बीच ऐतय स्थावपत करना रहा है-और यह उनका उच्छेद करके नहीं। िरन् ्उनके बीच सामञ्जस्य और समन्िय की स्थापना द्िारा। मनुजैसा कट्र स्मृततकार भी कहता है।

एतद्देशप्रसूतस्य,[55] सकाशादग्रजन्जमनः ।
स्िं स्िं चररत्रं सशिेरन्,् पृगृथवयां सिमानिाः ।।

संसार के सब लोग अपनी परम्पराओं के विर्य में इस दिे के रमुख शिक्षकों से ज्ञान राप्त करेंगे। भारतीय परम्परा धम सको स्िीकृतत देनेकी और जहा ाँभी मूल्य राप्त हों, उनको पहचानने की रही है।'[56] हमारे ऋवर् विभेदों के महत्त्िको समझते ेथे। उपतनर्द् के ऋवर्यों, बुद्ध महिीर, आचाय-सगण, रामानन्द, कबीर, नानक तथा हाल के रामकृष्ण, राममोहन राय, रिीन्द्रनाथ और गांधीजी ने भारत के सब लोगों को एक ही ईश्िर का उपदिे ददया है।

हमारे इततहास के आरम्भ से भारत अनेकता में एकता की स्थापना के शलए सचेष्ट रहा है। अनेक विघ्न-बाधाओं और दुभुानसय के होते ेहुए भी भारत इस लक्ष्य की राक्प्त के शलए यलिान रहा है। हमारे इततहास के स्िणिमस युगों में हमनेसिधसम-स समन्िय के इस शसद्धान्त पर बल ददया है।

अिोक ने, क्जसके दूतों ने भारतीय विचारों को एशिया माइनर तक पहुाँचाया और एसीनीज़ तथा ख्रीष्टीय शसद्धान्त को रभावित ककया, अपना शसद्धान्त िातय शिलाओं पर खुदिा ददया था-समिाय एि साधुः । एकमात्र समिाय ही श्लाघ्य है। भारतीय विचार की संकल्पनाए,ाँ जो रोमन साम्राज्य में छनकर पहुाँच गई थीं, शसकन्दर और अिोक द्िारा उद्घादटत स्रोतों के द्िारा बहती रहीं। फादहयान ने 401 ई० से 410 ई० तक भारत का भ्रमण ककया था। उसके रमाण के अनुसार 320 ई० से 380 ई० तक गुप्त िासन का स्िणि-सयुग पूण सधाशमकस सदहष्णुता के शलए विख्यात था। गुप्त सम्राट् विष्णु के पूजक थेककन्तुउन्होंनेबौद्धों और जैतनयों को पूजा की पूण सस्ितंत्रता दे रखी थी। उन्हें अपनेपवित्र स्थानों-तीथों को समृद्ध करनेकी पूरी छूट थी। सम्राट् हर्िसधनस, क्जसनेभारत के बहुत बड़े भाग पर 606 ई० से647 ई० तक राज्य ककया था, शिि के भतत थे, ककन्तु सूय सऔर बुद्ध का भी बहुत सम्मान करते ेथे। बाण के हर्चसररत के अनुसार उन्होंने विशभन्न धमों के रततततनगधयों का एक सम्मेलन बुलाया

नानादिाथनेस युतताः नाना कमाणसण कुितेस ।।

55 पाठान्तर: एतद् के स्थान पर अस्मद् ।

56 देणखए कुरान:

"ओ मानि-जातत ! अपनेरभु का स्मरण कर, क्जसनेतुझे पैदा ककया है, क्जसनेमनुष्य (आदम) से उसकी संगगनी (हव्िा) पैदा की है और कफर दोनों नेन जाने ककतने पुरुर् और क्स्त्रयााँ पैदा करके दुतुनया में फैला ददए हैं। इसशलए उस रभु को स्मरण रख, क्जसके नाम पर तू परस्पर ररश्ते ेकायम करता है और उस ररश्ते ेकी इज्ज़त करता है।"

-सूरा 4, तनसा भाग 8, मौलाना अबुल कलाम आजाद के अनुिाद से।े

था। सबसे बड़ेमुगल सम्रा् अकबर ने भी धाशमकस सदहष्णुता पर आचरण ककया था। उसने'मत की दीघ स सदहष्णुता, जातत एिं धम सके विचार बबना सबके रतत न्याय, धरती के बोझ में कमी, समाज के समस्त िगों- राजपूत राजा, उजबेक एिं मुगल सामन्तों, अफगान स्रोत से आकर बसने िालों तथ दिेज तनिाशसयों के दहतों को परस्पर ग्रगथत करने के शसद्धान्तों की स्थापना की चेष्टा की।"[57]

हमारे ह्रास के युगों में असदहष्णुता और कट्रता का बोलबाला रहा। जब हम अनम्य-कटोर-और मतान्ध हुए तभी हमारी अिनतत हुई और जब हम सदहष्णुऔर मैत्रीपूण सरहे तभी हम समृद्ध हुए। हमारे इततहास की विपवियााँहमें सदहष्णुता एिं सददच्छा के गुणों को अपनाने की आिश्यकता की शिक्षा देती हैं।

Ye may know each other
Not that ye may despise each other
8. XLIX 13.

तुम एक-दूसूरे को जानो न कक
तुम एक-दूसूरे से घृणा करो।

गुरु ग्रन्थसादहब में भारतीय परम्परा की रेरणा से पूण सभजन हैं। िे दहन्दुओं और मुसलमानों, दोनों के ग्रन्थों से शलए गए हैं। एक मुसलमान सन्त हज़रत शमयामीर को अमृतृसर के स्िणि-समक्न्दर का शिलान्यास करने के शलए आमक्न्त्रत ककया गया था।

आज भारत मानि-जातत के जीवित धमों का घर है और उनके अनुयायी एक- दूसूरे के साथ िाक्न्त एिं मैत्रीपूिकस रहते हैं: यद्यवप कभी-कभी इसमें बाधा-विघ्न भी पड़ते रहते हैं।

मनुष्य में स्ियं अपने को पार कर जाने, अपने से ऊपर उठनेऔर जानने, अगधकागधक प्यार करने की उच्चाकांक्षा है।

हमारी अन्तरात्मा हमें आगे की ओर धकेलती है। यही मनोिेग धम सका मूल बताया जाता है ककन्तु धमों के कारण हमें विभाक्जत होने की आिश्यकता नहींहै। चाहे हम मक्न्दर में पूजा करें, मक्स्जद में राथनसा करें अथिा गगरजाघर में दण्डित् करें, हम सब रभु की गृहस्थी के सदस्य हैं।

जब यह कहा जाता है कक हमारा राज्य धम सतनरपेक्ष है, तब इसका अथ सइतना ही है कक राज्य ककसी एक धम समें बधााँकर नहींरह गया है िरन् तब तक सब धमों का रक्षण और सम्मान करता है जब तक उनके अनुयायी इस तरह आचरण नहींकरते कक उससेनैततक अन्तःकरण पर आघात हो या देि की एकता के शलए खतरा पैदा हो। धमतसनरपेक्षता धाशमकस रततद्िन्द्विताओंको दूरू करने का रयत्न करती है; यह राजनीततक अशभरायों के शलए धाशमकस विश्िास के दुरुपयोग या िोषण को अनुत्सादहत करती है। हमारा विधान सबको उपासना की

[57] मैशलसन : अकबर (1890), पृ० 171

स्तिंत्रता देता है; यह धाशमकस अशभरायों के शलए अपना संघटन करने की अनुमतत देता है। इसनेपृथृक् तनिाचसक मण्डलों को समाप्त कर ददया है और हमारे तनिाचसन-कानून में व्यिस्था है कक मतदाता को जातत, रजातत, समाज या धम सके नाम पर तनयशमत अपील एक भ्रष्टाचार है क्जसके कारण एक तनिागसचत व्यक्तत का तनिाचसन रद्द हो सकता है।

ककसी सच्चे धम सकी कसौटी यह है कक िह ककस सीमा तक व्यक्तत एिं समाज- व्यिस्था को बदल सकता है। इसे ेहमारे सामाक्जक जीिन और धाशमकस रथाओं के अधेँरे स्थानों को रदीप्त करना ही चादहए। ऋनिेद कहता है कक मानि-जातत एक ही है-एकैि मानुरी् जाततः। सब मनुष्य भाई हैं: भ्रातरो मानिाः सिे। सभी धम स शसखाते ेहैं कक मानि-राणी असीम मूल्य िाला है और सम्मान एिं रेमपूण सकृपा के योनय है-िविर्तः िे जो अभागे े हैं, क्जनको गहरे घाि लगेहैं िे हमारी सिागसधक सहानुभूतत के पात्र हैं।

आचार संदहता का ही नाम धम सहै: धारणाद् इतत आहुः। जो समाज को एक में बाधँ रखता है िही धम सकहा जाता है। जो संस्थाएँ. और रथाए ँसमाज को विक्च्छन्न करती हैं, कफर उनकी पुरातनता चाहे क्जतनी ही सम्मानाहस हो, उन्हें समाप्त कर देना चादहए। अतीत की आध्याक्त्मक विरासत को मृत् बोझ से अलग करके पहचानना चादहए। यज्ञिेददका से हमें दहकती आग, न कक बुझी राख, लेनी चादहए।

जातत-व्यिस्था के विकास का ऐततहाशसक आधार जो भी रहा हो, उसनेराचीन उपतनर्द् के महत् ्आदि स को, जो घोवर्त करता है कक मानि-राणी आत्मा का एक स्फुक्ल्लंग, ईश्िर की एक ककरण है, अपमातनत ककया है। इस पर भी हमनेलोगों को अलग करने िाली रस्तर-शभवियों का तनमाणस ककया और ककसी को उच्च और दूसूरों को तनम्न बताया। हमनेलोगों के मन को पंगु एिं उनके जीिन को संकुगचत बना ददया। हमारे समाज की िजनसाए ँ एिं तनर्ेध मानिात्मा का क्षरण करते ेऔर उसे ेतोड़ देतेह।ै कभी-कभी हम गहन रज्ञा की सूक्ष्म अशभव्यक्तत कहकर अपनेअन्धविश्िासों का समथनस करते ेहैं। हम क्जस आत्मिञ्चना से अपने को आच्छन्न करते ेहैं, उससे े हमें छूटना ही होगा। कुछ लोग ऐसेहैं जो यदद नाक्स्तकता द्िारा हमारा जीिन भ्रष्ट रथाओं से स्िच्छ होता हो तो उसका स्िागत करेंगे। हमें खाइयों को भरना, न कक उन्हें और चौड़ा करना चादहए। हमें उन कृबत्रम चहारदीिाररयों को तोड़ डालना चादहए जो हमें अलग-अलग रखती हैं। जातत सामाक्जक बुराई के रूप में शमट रही है ककन्तु िह राजनीततक बुराई, बक्ल्क रिासतनक बुराई, भी बनती जा रही है। राजनीततक सिा अथिा रिासतनक रभुता हगथयानेके शलए हम जाततगत तनष्ठाओंका इस्तेमाल करते ेहैं।

हम क्जस धम सको मानते ेहैं, उसके नाम पर अस्पृश्यता एक बड़ा कलंक है। ईश्िरिरीर, जो कक मानिता है, में कुछ भी अस्िच्छ या अस्पृश्य नहींहै। िेदान्त-देशिका कहती है :

श्िपचोऽवप महीपाल, विष्णुभक्तो द्विजागधकः ।
विष्णुभक्ततविहीनस्तु यततश्च श्िपचाधमः ।।

किल चररत्र ही श्रेष्ठता का रमाण है। इसका कुछ महत्त्ि नहींकक तुम्हारे पालक-माता-वपता कौन हैं या तुम्हारी जातत तया है। हमारी धििेर्ता हमारे ज्ञान और सत्कम समें है, हमारे िण स(रंग), पन्थ, रजातत या िंिि में नहीं। यदद हम पाथतसय की भिाना को अपनेहृदयों सेनहींतनकाल बाहर करते ेतो दूसूरे दिेंों के रजाततगत पाथतसय की तनन्दा कैसे ेकर सकते ेहैं ? यदद हम अपनेलोगों के बीच समानता की स्थापना नहींकरते, े तो दूसूरों से समानता की मागँाँ कैसे ेकर सकते ेहैं ?

हमें जाततगत विर्मताओं तथा अस्पृशूयता सेमुतत करनेके शलए पुनः पुनः महान् ्आत्माओं का आगमन हुआ है ककन्तु हम भूल जाते ेहैं कक िे तया करना चाहते ेथे। हम सम्रदाय एिं जत्थे बनाते ेहै और अपने को ऐसेबन्धनों में बाधँा लेते हैं क्जनसे हमें मुतत करने का रयत्न उन्होंनेककया था।

हमारा संविधान जाततगत रततबन्धों को नहींमानता और अस्पृशूयता की रथा उसकी दृक्ष्ट में अपराध है। परन्तु िैधातनक रिधान ही पयाप्सत नहींहै। हमें विचार करने की अपनी आदतों और आचरण की रणाशलयों को बदलने के शलए रशिक्षक्षत ककया जाना चादहए। यदद हमें अपनेंदििाशसयों की विशभन्न श्रेणणयों को सितसनष्ठ लक्ष्यिाले एक ही समाज में संग्रंगथत करना है तो अपेक्षाकृत दुबुलस कडड़यों को सुदृढ करना आिश्यक है।

गरीबी और आगथकस वपछड़ापन ककसी जातत, समाज, रजातत या धम सका एकागधकार नहींहै। हमारे समाज के सब िगों में गरीब लोग हैं। कुछ राज्य-सरकारें ऐसे ेसब छात्रों की सहायता का रबन्ध कर रही हैं क्जनके रततपालकों एिं संरक्षकों की आय अगधक नहींहै। शिक्षा और आगथकस अिसर महान िैम्य-विनाक या समस्तरकारी हैं। 14 िर् सकी आयु तक के सब िालेय छात्रों के शलए सािभसौम, तनःशुल्कि एिं अतनिाय सशिक्षा और अपयाप्सत साधनों िाले मेधािी छात्रों के शलए छात्रिृवि का रबन्ध हमारे समाज को संग्रगथत करने में सहायक होगा।

हमारा लक्ष्य सामाक्जक न्याय है। दुतुनया में दूसूरा ऐसा कोई दिे नहींहै जहाँ आगथकस विर्मताए ँइतनी विस्तृतृ हों और आगथकस सुविधाए ँइतनी कम हों, क्जतनी िे भारत में हैं। जब लक्ष-लक्ष जन गरीबी, रोग, तनरक्षरता और असहायता की भिाना से कष्ट भोग रहे हों, तब हम कैसे ेकह सकते हैं कक मानि-व्यक्तत बड़ा मूल्यिान् ्है ? िे इतनेअगधक हैं; िे इतने कम की मागँाँ करते ेहैं, ककन्तु उतना थोड़ा भी नहींपा सकते। हमारी पंचिर्ीय योजनाए ँहमारे लोगों के जीिन-मान को ऊपर उठानेके रयल हैं।

रादेशिक असंतुलन, जो राज्यों एिं केन्द्र के बीच संघर् सपैदा करते ेहैं, दूरू ककया जाना चादहए। तेज़ी के साथ उद्योगीकरण और संतुशलत रादेशिक विकास इस संघर् सको कम कर सकते हैं और राज्यों की अन्ततनभसरसता पर बल दे सकते हैं। दिे के विशभन्न भागों में महत् ्उद्योगों का तछतरिा उगचत ददिा में उठाए गए कदम हैं। कोई एक राज्य आगथकस रूप से आत्मतनभरस या अपने में पयाप्सत नहींहै। राष्र को संयोक्जत एिंं तनदेशित विकास के माग सपर बढाना ही होगा। रादेशिक रततद्वन्द्विताओं को राष्रीय रगतत में बाधा डालने का अिसर नहीं ंरदान ककया जाना चादहए। आगथकस संग्रथन सेराष्रीय ऐतय को दृढता राप्त होगी।

हम अपनेदि का तनमाणस ईंट और गारे या हथौड़ी और छेनी से नहींकर सकते। इसे ेहमारे ििाशसयों के मक्स्तष्क और हृदयों में चुपचाप विकशसत होना होगा। स्कूलों-कॉलेजों में हमारे युिकों को इसका शिक्षण ददया जाना चादहए; हमारे नेताओं द्िारा इसकी घोर्णा और इस पर आचरण होना चादहए और हमारे राष्रीय जीिन की बुतनयाद में इसे ेले आना चादहए। शिक्षा केिल सूचनाओं का दान-मात्र नहींहै। िह मनोिेगों का रशिक्षण है। इससे हमको अनुभूतत की रणाली और आचरण केअभ्यास की सीख शमलनी चादहए। हमारी पाठ्य-पुस्तकों में इस बात पर जोर ददया जाना चादहए कक हमारी संस्कृतत मोहेंजोदड़ों और हड़प्पा से लेकर आज तक ककस रकार विकशसत हुई है और कैसे ेइसनेआत्मिीनीकरण की िक्तत का रदिसन ककया है। बुरी पाठ्य-पुस्तकें तरुणों के मानस को विकृत करती हैं, उनकी रुगचयों को भ्रष्ट करती हैंऔर उनके स्िभाि को अध:पततत करती हैं। उगचत शिक्षा-रणाली हमारे दि की अनेकता को अशभराय एिं भािना की एकता रदान करेगी।

आकाििाणी दि के सांस्कृततक संग्रथन में महत्त्िपूणस योग दे रही है। भक्तत-संगीत में विशभन्न धमों एिं विशभन्न रदिों के चुने हुए पद होते ेहैं। कलाए ेँमैत्री और समझदारी की भार्ा बोलती हैं।

यह बड़ेदुभासनय का विर्य है कक भार्ा-समस्या ने बहुत कटुता और वििाद को जन्म ददया है। भार्ाई राज्यों ने भार्ाई भेदों को कोमल नहीं, और कठोर ही ककया है। रादेशिक भार्ा के शसिा दूसूरी भार्ाए ेँभी विशभन्न राज्यों में फूलती-फलती रही हैं। त्यागराज ने भक्तत के गीत तेलुगु में शलखे ककन्तु िह विकशसत हुए तशमलनाडु में। एक भार्ाई क्षेत्र सेदूसूरे भार्ाई क्षेत्रों में बराबर लोग जाकर बसतेरहे हैं और इससे कोई दुभासिना नहींफैलती थी। हमारे समय तक भार्ाई ईष्या-सदर्ि कभी विकशसत नहींहुए थे।

समस्या तक हमारी पहुँच का ढंग िाई-अव्यािहाररक-नहींहोना चादहए; िह उपयोगी और व्यािहाररक होना चादहए। विधान कहता है कक दहन्दी भारत की राजभार्ा है, तयोंकक उसे ेबहुत ज़्यादा लोग बोलते ेहैं। परन्तु स्िातंत्र्योर युग में दहन्दी अन्तररान्तीय संचार की भार्ा नहींबनी। यह अदालतों और विश्िविद्यालयों में रयुतत नहींहोती। राज्य विधानसभाओं, अदालतों तथा विश्िविद्यालयों में अपनी रादेशिक भार्ाओंका रयोग करने को उत्सुक हैं।

श्री नेहरू ने कहा था कक जब तक आिश्यकता हो, अंग्रेजी का सह-राजभार्ा के रूप में उपयोग जारी रहना चादहए। हममें विदेशियों अथिा उनकी भार्ाओंके रतत विद्र्िभाि नहींथा। ज्योततर्-विज्ञान यूनातनयों द्िारा विकशसत हुआ और हमनेउनसे ेकुछ सीखा। गग सकहते ेहैं :

म्लेच्छा दह यिनास्तेषु सम्यक् शास्त्रसमदं ष्स्थतम्।्
ऋवषित् ्तेऽवप पूज्यन्जते ककं पुनदैविद् द्विजः।।

"यिन अिश्य म्लेच्छ हैं ककन्तु उनका विज्ञान उनमें सम्यक् रूप से क्स्थत हो गया है। इसशलए िे भी ऋवर्-समान पूज्य हैं।"

इस शसकुड़ते हुए संसार में, जहा ाँअन्तराष्सरीय संस्थाए ाँअगधकागधक अशभनय कर रही हैं, हमारे विश्िविद्यालयों के छात्रों के शलए अंग्रेज़ी में रशिक्षण आिश्यक है। विज्ञान एिं रौद्योगगकी में गम्भीर शिक्षण के रसार, जो हमारे विकास के शलए बहुत आिश्यक है, को सुरक्षक्षत रखा जाना चादहए और ितमसान क्स्थतत में कोई भी भारतीय भार्ा िैज्ञातनक, इंजीतनयररंगं या रौद्योगगकीय पाठ्यिम के शलए, शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी का स्थान लेनेयोनय नहींहै, यद्यवप कालान्तर में क्स्थत दूसूरी ही हो सकती है। विश्ि में छोटे दे है, आकार में संख्या में छोटे-यद्यवप महत्त्ि में छोटे नहीं, जैसे ेकनाडा, बेलक्जयम, कफनलैण्ड, क्स्िट्ज़रलैण्ड, युगोस्लाविया, दक्षक्षण अफ्रीका, जहा ाँदो या अगधक राज्य भार्ाए ाँहैं।

एक बहुभार्ी, बहुधमी समाज में हमें सब भार्ाओं का आदर करना चादहए, जैसाकक हमसे सब धमों का सम्मान करने के शलए कहा जाता है। हमें अपनी भार्ा के अतततररतत दूसूरी भार्ाओं के रतत समझदारी और सहानुभूतत का व्यिहार करना चादहए।

जैसे ेहम केन्द्र में दो सरकारी भार्ाओंके रखने ेका रस्ताि करते ेहैं, उसी तरह आिश्यक होनेपर कुछ राज्यों में भी दो सरकारी भार्ाएँहो सकती हैं। विधान की 347िीं ंधारा में ककसी भी राज्य के तनिाशसयों की एक श्रेणी द्िारा बोली जानेिाली भार्ा के बारे में वििेर् रािधान ककया गया है :

"उनकी ओर से मागाँ होनेपर, यदद राष्रपतत सन्तुष्ट हों कक ककसी राज्य की आबादी का एक बड़ा भाग अपनेद्िारा बोली जानेिाली ककसी भार्ा के रयोग और उसके राज्य द्िारा मान्यता ददए जानेकी आकांक्षा रखता है, तो िह ऐसा आदेि देंगे ेकक िह भार्ा भी सरकारी तौर पर राज्य-भर में या उसके ककसी भाग में, क्जस तात्पय सके शलए िह तनददसष्ट करेंगे, े मान्य की जाए।"

जहा ाँभी सम्भि हो, अणखल भारीतय सेिाओंकी स्थापना की जानी चादहए। केन्द्रीय लोक-सेिा-आयोग की परीक्षा के पररणामस्िरूप चुने गए उम्मीदिारों में लगभग 75 रततित उसी राजय में रखेजाए ाँक्जसके िे तनिासी हों और िेर् 25 रततित अन्य राज्यों में भेजे ेजाए।ाँ जो अपने राज्य के बाहर तनयुतत ककए जाएगेंाँ, िे अपेक्षाकृत रादेशिक दबाि से मुतत होंगे ेऔर राष्रीय सामञ्जस्य की भािना बढाएगेंाँ। यद्यवप नौकररयों के शलए उम्मीदिारों के चुनाि में कुिलता और योनयता ही मुख्य विचारणीय तत्त्ि होना चादहए, कफर भी उम्मीदिारों का चुनाि सभी राज्यों एिं समाजों से होना चादहए।

आज हम इततहास के एक बड़ेसंिाक्न्त-युग में जी रहे हैं, जबकक मानिीय समाज का महत् ्पुनगठसन हो रहा है और जो दीिारें मानिता को विक्च्छन्न करती थीं, िे टूट रही हैं। हम एक नूतन जीिन-माग सके तनमाणस का यत्न कर रहे हैं जो रंग, धम,स रजातत या राष्रीयता का विचार ककए बबना, सभी मानिों के साथ मयादसा एिं सम्मान से व्यिहार करेगा। एक नई दुतनया की स्थापना की समस्या िैक्षणणक समस्या है; यह एक धीमी रकिया है, कफर भी हमारे लक्ष्य के शलए िही एक रकिया है-एक अशभयान है।

यदद हम इस महत् ्रयास में अपनी देन देना चाहते हैं तो हमें स्र्यिं भी संयुतत और सुदृढ होना होगा।

केिल तभी हम समानता के स्तर पर दूसूरी महिाक्ततयों का सामना कर सकेंगे।

भूगोल, इततहास, एक सामान्य विरासत और आगथकस लक्ष्य राष्रीय ऐतय एिं संग्रथन की भािना बढाते े हैं। हमारे दिे की सुरक्षा न केिल हमारी औद्योगगक, कृवर्-सम्बन्धी और िैज्ञातनक िक्तत पर, िरन् ्हमारे सामाक्जक संग्रथन और ऐतय पर भी तनभरस है। व्यापक, रसरणिील मनोभािी रेरणाओं और िृवियों के विकशसत ककए जाने की आिश्यकता है। हमारे मनों एिं हृदयों को नया रूप ददया जाना चादहए। नूतन मागों एिं गचन्तना के रतत मानि का बहुुत बड़ा विरोध होता है। इसीशलए सभी संमिण दुुःखान्त-क्षेत्रीय होते ेहैं। क्स्थर समाज खतरनाक होता है। सच्ची आधुतनकतािादी बुद्गध की स्र्तंत्रता है, अतीत की दासता नहीं।ं यदद हम सदा ही पीछे की ओर देखते रहेंगे ेतो आगे नहींबढ सकते। इततहास क्स्थर नहींहै; काल एक महान रितकस है। जो सामाक्जक बुराइया ाँहमारे जीिन को पंगु कर रही हैं, उनसे ेहमें लड़ना ही होगा। आदतें, विर्देर्, स्थावपत स्िाथों को तोड़ना होगा। महत् ्काय सऔर क्षुद्र मन साथ नहींचल सकते। हमें पैनी अन्तःदृवष्ट रज्ञाओं, सजनसात्मक आदिों और रज्िशलत अन्तःकरण की आिश्यकता है। इततहास नेतृत्ि, संयोग एिं पररक्स्थतत की अन्योन्य रततकिया है। ककसी राष्र की िृद्ध के शलए लोगों में अतीत में शमल-जुलुकर काम करने की बात का ज्ञान तथा भविष्य में साथ-साथ काम करने का संकल्प होना चादहए। हमें इस बात का ज्ञान है कक अतीत काल में सहकारी रयत्न से हमने स्र्तंत्रता-राक्प्त सदहत बड़े-बड़ेकाम ककए हैं। इसमें अपने दिे के महिर भविष्य के शलए शमल-जुलकर काम करने का संकल्प भी है। आइए, हम साहस एिं वििेक, तनष्ठा एिं रेम के साथ अपनेको इस काय सके शलए समवपतस करें।

9. लोकतन्त्र एक धम सहै

भारत ने 1947 में राजनीततक स्तिन्त्रता राप्त की। स्च्छि, ालीन ढंग पर दि किाासन करने की तुलना में िह एक सरल काय सथा। यह कहीं ंर्विाल काय सददखाई पड़ता है। इसके शलए हमें आत्मत्यागी नेतृतिृ और ईमानदार तथा कुिल नागररक सेिा की आिश्यकता है। हमें अनुिाशसत सेिा तथा पुशलस दल की आिश्यकता है। हमें र्विेर्ज्ञ औद्योगगक रबन्धकों, कुिल श्रशमकों और बदढया कृवर्- ज्ञान रखने िाले ककसानों की आिश्यकता है। हमारे सामान्य नागररकों में नागररक िृवृ एिंराष्रीय भािना होनी चादहए। ये सब बातें एक ददन में नहींहो जातीं। अपनी ि्तत-भर जो कुछ कर रहे हैं, िह यह है कक तनदोर् रिासन, क्स्थर िासन और एक स्स्थ राष्र का विकास करने की ओर हमनेकुछ कदम उठाए हैं। हम यही नहींकह सकते कक हमनेजो कुछ ककया है, उससेहम सन्तुष्ट हैं। हमारे दि के विशभन्न भागों में ऐसी बातें हो रही हैं जो हमें दुखी, तनरिा और अपने रतत लक्ज्जत करने िाली हैं। जो बात ज़रूरी है, िह दि-भक्तत की िक्ततमती भािना है। यह सत्य है कक जब हम दि को विदेिी िासन से मुतत करने के शलए लड़ रहे थे ेतब हमनेएक नकारात्मक दिभक्तत का विकास ककया था। ककन्तु सकारात्मक दिभक्तत, एक ऊजक्स्िी भ्रातृतिृ-भािना, इस महान दि का होने की भािना और उसका होनेका अशभमान, ये बातें अभी आनेको हैं। हमें इनको मनुष्यों के मक्स्तष्कों एिंंहृदयों में तनशमतस करना होगा। बीच-बीच में अधोगततयों एिंअन्ध-गशलयों में गगरनेके बािजूद लगभग चालीस या पचास ितयों तक यह दि क्जन महती परम्पराओंके शलए खड़ा रहा है, उन्हें अपने अन्दर विकशसत करने की आिश्यकता है।

हमारी आकांक्षा अपनेसमाज में लोकतन्त्रात्मक व्यिस्था कायम करने की है। लोकसिा के विशभन्न पहलू होते ेहैं। यह राजनीततक व्यिस्था है; यह एक आगथकस रास्ता है; यह जीिन की एक नैततक रणाली है।

जहा ाँतक राजनीततक व्यिस्था का रश्न है, हमने ियस्क मतागधकार को ग्रहण ककया है। रत्येक व्यक्तत को, जो एक र्विेर् आयु का हो, कफर उसकी िैक्षणणक योनयताए, ाँ सुविधाए, ाँ सम्पवि कुछ भी तयों न हों, मतागधकार राप्त है। एक आदमी, एक िोट (मत); इस रकार हम सब मानिीय राणणयों की समानता पर बल देते े हैं। यह शसद्धान्त हमारी विरासत का एक अंग है। रत्येक व्यक्तत परमात्मा की एक गचनगारी है : देहो देिालयो नाम। यह देह भगिान का मक्न्दर है। हमनेइस पर ज़ोर तो ददया ककन्तु इस पर बराबर अमल नहींककया। यदद

हम पर ओिमण हुए और हमनेबड़ी कदठनाइयाँभोगींतो इसका कारण यही था कक यह धाशमकस रततस्थापना, क्जसके रतत हम तनष्ठा व्यतत करते ाेहैं, हमारे ददेिाशसयों के हृदयों में घर नहींकर पाई। आज राजनीततक लोकतन्त्र िाग,स रजातत एिंधम सके भेदभाि को लाघाँ जाता है। ये भेद चाहे जो हों, ये मनुष्य के रूप में मनुष्य की पवित्रता और मयादसा के शलए अरासंगगक हैं। हमें मानिीय व्यक्तत का सम्मान उसके मानिीय स्िभाि तथा उसकी सम्भािनाओं के शलए करना चादहए। रत्येक मानि-राणी सिोच्च जीिन के शलए िाक्ततमान उम्मीदिार है।

इससेयह तनष्कर् सतनकलता है कक हमें सब व्यक्ततयों को पूण,स स्ितन्त्र एिंसमृद्ध जीिन जीनेका अिसर देना चादहए। रत्येक व्यक्तत के अन्दर जो कोर् तछपा पड़ा है उसे ाेबबना तोड़ेऊपर लानेमें हमें सहायता करनी चादहए। इसके शलए कततपय तनम्नतम सांस्कृततक एिंआगथकस पररक्स्थततया ाँपैदा की जानी चादहए। इसीशलए तो हमारे विधान में सिादेसशिक शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है। हम रायः समाज के समाजिादी ढाचेंाँ की बात करते ाेहैं। इसका अशभराय व्यक्तत का व्यूह-बन्धन नहींहै। मानिीय उत्थान के नाटक में मुख्य अशभनेता रततभािान व्यक्तत ही होतेहैं। हमें विज्ञान एिंरौद्योगगकी के ओिमणों तथा जीिन के यन्त्रीकरण द्िारा मानिीय राणणयों के व्यक्ततत्ि को कुचले जाने या कम ककए जानेका भी मौका नहींदेना चादहए।

समाजिाद का अथ सभी व्यक्ततयों की योनयताओं का समानीकरण नहींहै। ऐसा होना असम्भि है। सब आदमी समान नहींहोते। समाजिाद का अथ सिकेल सबके शलए समान अिसर या सुविधाएँ देना है। हम यह नहीं कहते ाेकक सब आदमी समान हैं ककन्तु हम यह कहते ाेहैं कक जो भी सम्भािनाए ाँउनमें हैंउनको व्यतत करने के शलए सब आदशमयों को समान अिसर ददया जाना चादहए। जब हम कहते ाेहैंकक सब मनुष्यों को भोजन, िास्त्र एिं आश्रय (तनिास) की सुविधा शमलनी चादहए, तब हम लोकताक्न्त्रक आदि सके आगथकस पक्ष पर ज़ोर देते ाेहैं। हम सम्पवि एिंगरीबी के बीच के अन्तर को कम करना और सामान्य मानि के जीिन-मान को उठाना चाहते हैं। जब तक हमारे दिे में ऐसेलोग हैं जो ददन में एक बार भी भरपेट भोजन नहींपाते, क्जनके शसर पर कोई छत या छाया नहींहै, जो हमारे नगरों की पटररयों पर सोतेहैं, तब तक हमारे सामनेएक चुनौती है। कोई भी मनुष्य, जो अपने दिे के रतत भािना रखता है, तब तक सुखी या सन्तुष्ट नहींहो सकता जब तक िाह इस भयानक दुदुसिा और गरीबी को देख रहा है। ये बातें सबके शलए चुनौती हैं। यदद अपनेदिे को रजासिाक कहना है तो हमें उनका रततरोध करना होगा और उन्हें खत्म करना होगा।

अब भी लोकतन्त्र एक आदि सही बना हुआ है। हम उसमें कुछ सामाक्जक और आगथकस सामग्री डालनेकी चेष्टा कर रहे हैं, और क्जसे ाेसमाज का समाजिादी ढाचााँ कहा जाता है िाह हमारे सब अगधिाशसयों को िारीर एिं आत्मा की रक्षा करने योनय आलम्ब देने के तनरन्तर रयल के शसिा और कुछ नहीं है। यह है लोकतन्त्र का आगथकस पक्ष ।

आगथकस लोकतन्त्र की उपलक्धध के शलए हमें अपनी राष्ट्रीय सम्पवि, अपनी कृवर्-सम्बन्धी उपज और औद्योगगक उत्पादन बढाना चादहए। पंचिर्ीय योजनाए ाँइन्हीं ंलक्ष्यों की राक्प्त के शलए हैं। हमारे देहात बहुत

उपेक्षक्षत रहे हैं और इन्हें विकशसत करने की आिश्यकता है। सामूदहक विकास-कायिसम ग्राम्य पुनरसचना के उद्देश्य को लेकेर ही चल रहे हैं। दुभाुनसयिि हम अपनेदिािशसयों में उत्साह तथा उमंग भरने में समथ सनहींहुए हैं। रिासन यन्त्र भारी-भरकम है और इन योजनाओंमें हमारे दिािशसयों के भाग लेने को रोत्सादहत ककया जाना चादहए।

इससेभी अगधक मौशलक बात है-नैततक पकड़, नैततक ििृ। लोकतन्त्र एक धम सहै। लोकतन्त्र हमारी समस्याओं के समाधान में हमसे समझाने-बुझाने, संयम और सहमतत के तरीके अपनाने के शलए कहता है। तया हमनेइस शसद्धान्त का, कक 'स्ितन्त्रता का अथ संयम है', तनदहताथ समझ शलया है ? जहााँभी झगड़ेहोते ेहैं, हम सीधी कारसिाई, सीधी लड़ाई का तरीका ग्रहण करते ेहैं। हम िोध से भर जाते ेहैं; हममें दहंसा है। हम दुभािसनाओं को, िोध को रकट करतेहैंऔर मानि-राणणयों की तरह आचरण नहींकरते। जब हम लोकतन्त्र के नैततक पक्ष पर जोर देते ेहैं, तब हमारा अथ सयही होता है कक रत्येक मानि-राणी में वििेक का अंि है और हमारे शलए यह सम्भि है कक उसी वििेके की 'अपील' करें-रेररत करें। हमें यह विश्िास तो रखना ही होगा कक हम सदा ही ठीक नहींहो सकते; कभी हमारे विरोधी भी सही हो सकते ेहैं। हममें यह विश्िास करने की नम्रता होनी चादहए कक हमारे विरोगधयों में भी कुछ गुण हो सकते हैं। यही विनम्रता की भािना, यही संयम की भािना लोकतन्त्र हम पर लागू करता है। हमारा कतव्सय है कक हम उनकी बात समझें और उनके साथ उगचत समझौता करें। असहमतत वििेक नहींहै; विरोध विद्रोह नहीं ंहै। हमें अपनी समस्याए ाँवििेक के साथ, बबना कटुता के हल करने की चेष्टा करनी चादहए। लोकतन्त्र तथा दहंसंक कारसिाई एक-दूसूरे के रततकूल हैं। जब भी हममें संघर् सहोता है, झगड़ा होता है, तब हम भूल जाते ेहैं कक हमारे ित्रु ुभी उसी रतत-गांस के बनेहैं, उनमें भी िही रेरणाए ाँएिं िासनाए ाँहैं; िही आिाएाँ एिंउच्चाकांक्षाएाँहैं। िे मानिता की ककसी दूसूरी जातत के नहींहैं।

यह बड़ा दुभाुनसय है कक न केिल इस देि में बक्ल्क और भी बहुतेरे देिों में सम्य मूल्यों के विनाि की अपेक्षा तनजी अरततष्ठा को बड़ा खतरा समझा जाता है। ऐसे ककतने ही आदमी हैंजो उस समय, जब मानिता का जीिन संकट में होता है, अपनी मयादसा, अपनेसम्मान और ककसी तरह की अपनी इज़्ज़त के शलए तन जाते ेहैं। जब हम देखते हैं कक हम मानिता के भविष्य को रभावित करनेिाली वििाल समस्याओं के आमने-सामनेखड़े ेहैं, तब हमारे शलए इतना जानना-समझना ज़रूरी है कक काल सबसेबड़ा व्यागधहता सहै। माननीय रकृतत में लोच की, लचीलेपन की असाधारण िक्तत होती है। सामाक्जक एिंराजनीततक संस्ंथाए ाँभी पररितनस के उन्हींतनयमों से रभावित होती हैं क्जनसे दुतुनया की और सब चीजेंहोती ह।ैं यदद हमें माननीय स्िभाि की लोच में, समय की व्यागध िमन-कारी िक्तत में, सामाक्जक एिं राजनीततक संस्थाओं ंकी पररितनसीयता में, और सबके ऊपर सिसाधारण की सददच्छा में विश्िास हो तो जो समस्याए ाँआज हमको इतनी भयािह रीतत से विभाक्जत कर रही हैं, िे ही कुछ समय बाद वििुद्ध सैद्धाक्न्तक या िास्त्रीय रतीत होनेलगेंगी।

इसके पहले ेकक हम दुतुनया से िाक्न्तपूण ससह-अक्स्तत्ि में जीनेको कहें, हमें अपनेदेि की समस्याए,ाँ उसी भािना से हल करनी चादहए। आचरण उपदेि से ज़्यादा अच्छा होता है। िैसा ही करनेकी चेष्टा हमें करनी

चादहए। बहुुत-सी समस्याएँ समाधान के शलए हमारा मुहाँ देख रही हैं-भार्ाई झगड़े, रान्तीय ईष्र्याएँ, बरेलू लड़ाइया।ाँ इन्होंनेहमारे स्थातयत््किो, हमारी क्स्थरता को सददयों से झकझोर रखा है। लगता है, हमनेअपने अतीत इततहास से कुछ भी नहींसीखा है। इततहास ने हमें किेल इतनी शिक्षा दी है कक हम इततहास से कुछ भी

नहींसीखते। अपनी असंगततयों के कारण, अपनेविग्रहों एिं ईष्याओं के कारण, पड़ोशसयों से अपनेझगड़ेके कारण, बार-बार हमनेअपनी स्िाधीनता खोई है। लगता है, हम कफर विक्च्छन्न होकर गगर रहे हैं।

तया हम कफर उन्हीं विच्छेदकाररणी रिृवियों के शिकार होते ेहैं ? तया हम बड़े- बड़ेसिालों को, जो हमारे आगे ेहैं, हल करने के शलए ज़्यादा वििेक-सम्मत उपायों का सहारा नहींलेंगे े? बहुुत समय से हमारे दिे में यह कहा जा रहा है कक दहमालय के दक्षक्षण और सागर के उिर का सारा विस्तृत भूखण्ड भारत है-तिर् सभारतं ंनाम, भारती यत्र सन्तततः। िह दिे भारत कहा जाता है और िे सब लोग, जो इस भौगोशलक क्षेत्रे में रहते ेहैं, कफर चाहे उनकी जातत, पन्थ, रजातत, धम सकुछ भी हों, इस दिे के नागररक हैं। हमारा राष्र एक है और अखण्डनीय है-यही हमें शसखाया गया है। इसीशलए अपनेगौरि के ददनों में हम विशभन्न धमों के बीच सदहष्णुता और समझदारी से काम ले सके थे। यदद आज हम उन शिक्षाओंको भूल जाते ेहैं और अपनी िगीय तनष्ठाओं को बढाते ेचढाते ेहैंतो तनश्चय ही भविष्य अन्धकारमय है।

लोकतन्त्र एक राजनीततक व्यिस्था है जो लोगों को समान मानती है। यह एक आगथकस माग सहै जो इस दिे और इस दुतुनया के सिसामान्य लोगों की आगथकस दिा को ऊपर उठानेकी मागाँ हमसे करती है। यह जीिन की नैततक रणाली है, क्जसमें दूसूरे लोगों के रतत शमत्रित् ्व्यिहार करने की आिा हमसे की जाती है-कफर भले इस समय िे लोग हमारे ित्रु ही तयों न हों। पराक्जत ित्रु ित्रु ुबना रहता है और बदला लेने के शलए अिसर की रतीक्षा में रहता है। परन्तु एक कृत-सक्न्ध विरोधी शमत्र बन जाता है। घृणा सबसे बड़ा खतरा है। यह हमारा सबसेबड़ा ित्रु ु है। हमारा सारा रुख सुलह-समझौते ेका होना चादहए। अपनेदिे को सच्चा लोकतन्त्र बनाने के शलए कठोर काय-स कुिलता और संघटन की आिश्यकता है। जब एक अमरीकी को शमडडल िेस्ट में एक सुन्दर फाम सददखाया गया तो िह बोला, "देखो, यदद ईश्िर और मनुष्य सहयोग करें तो ककतना महान काय सहो सकता है।" फाम सके माशलक ने कहाः "आप तब फाम सको देखते, जब िह किेल ईश्िर द्िारा चलाया जा रहा था।" ईश्िर हमसे सच्चाई के साथ कठोर काम की आिा करता है। िह उन्हींकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता स्ियं करते ेहैं।

10. एक विभाक्जत उिरागधकार

इधर के िर्ों में विज्ञान और रौद्योगगकी में बड़ी रगतत हुई है और विश्िके ऐतय में, संयुततीकरण में बराबर िृद्गध होती गई है। राजनीततक एिं आगथकस कलागत तथा बौद्गधक विचार सारे संसार में फैल रहे हैं। इस पृथ्िी पर अपना घर ठीक करने के पहले ेहम अन्तग्रहीय अन्तररक्ष को विजय करने लगेहैं।

दुभुानसयिि, युद्ध की विभीवर्काएि ाँबढ गई हैं और तनदसयताओंका रयोग मानि- राणणयों पर होने लगा है। कफर अतीतकाल में हम एक ऐसी दुतुनया में रहते ेथे ेक्जसमें सभ्यता एक-दूसूरे से दूरू लगती थी। आज, हम सब घतनष्ठ पड़ोसी हैं। इन तीव्र पररितनसों के होनेसे, रेडिास सशमततयों की कतव्सय-सीमा केिल युद्ध की भीर्णताओंको कम करने तक सीशमत नहींरह गई है; अब तो स्ियं युद्ध का ही तनराकरण करने का रयत्न करना है-युद्ध को, जो इस युग में मानिता के विरुद्ध एक अपराध है।

अपनेतेरहिें शिलालेख में अिौक कहता है कक उसनेकशलंगं दि को (266 ईसा पिू)स विजय ककया था क्जसमें 'डेढ लाख आदमी बन्दी बनाए गए थे, एक लाख िध ककए गए थेऔर उससे कई गुना मर गए थे।' उसे े पश्चिााप हुआ कक यह विजय कोई विजय नहींहै; अविक्जतं ंदह विक्जतं ंमन्ये। 'उस युद्ध में, क्जसके कशलंगं पर अगधकार हुआ, क्जतने राणी मारे गए या मर गए या बन्दी बनाए गए उसके सिौं या हजारिें भाग के विनाि को भी सम्रा् िोचनीय मानता है।' िह घोवर्त करता है कक िह दण्ड पर क्षमा को िरेण्यता देता है। एकमात्र विजय धम सद्िारा विजय ही है: तम् ्एि च विजयं मन्यन्तां ंयो धमवसिजयः । यद्यवप अिौक ने यह भत्सनसा शिलाओं पर खुदिा दी थी ककन्तुहमने उस पर गम्भीरतापिूकस ध्यान नहींददया है। हमारी स्तिन्त्रता के रथम िर् समें ही मनुष्य की मनुष्य के रतत अमानिता खूनी दंगों के रूप में रकट आज भी हम उन संस्थाओं और रथाओं को पुनीत मानते ेजा रहे हैंजो सामाक्जक न्याय के नाम पर सामाक्जक अन्याय का रक्षण-पोर्ण कर रही हैं। हमारे आचरण हमारे िचनों से बहुत दूरू हैं।

हम सैतनक माग सके छोर पर पहुाँच गए हैं परन्तु, मुझे आिा है, मानिीय वििेके की सीमाओं तक नहीं ं पहुाँचे हैं। िाक्न्त की रक्षा केिल एक िाञ्छनीय आदि सही नहींहै; यह तीव्र आिश्यकता बन गई है। विश्िके सभी राष्रों ने िाक्न्त के रतत तनष्ठा की िपथ ली है ककन्तु िे उन ितों की पूतत सके शलए काम करनेको तैयार नहीं। हम तो एक ऐसे विश्ि-कल्याण-राज्य का तनमाणस करना चाहते हैं जहा ाँव्ियक्ततक स्तिन्त्रता एिं सामाक्जक न्याय सुरक्षक्षत रहेंगे ेऔर जहा ाँअन्याय, रजातीय भेदभाि और औपतनिेशिक रभुत्िका नाम नहींरहेगा। हम िाक्न्त का लक्ष्य धमकी देकर, सौदा करके और डरा-धमकाकर नहीं ंराप्त कर सकते।

आधुतनक मनोरोग विज्ञान बताता है कक जो लोग मूखतसापूण सया दुषु्टतापूिकस व्यिहार करते ेहैं उन पर िोधितुर होनेमें कोई लाभ नहींहै। उन पर क्षोम करने के स्थान पर हमें उनके आचरण के कारणों का अध्ययन करना चादहए। सम्भितः हमारे शलए ीत-युद्ध में भी ऐसा ही व्यिहार करना वििेकयुतत होगा। तनदसयता को दूरू करने के शलए भी तनदसय उपाय आिश्यक नहींहैं।

पहला पग तो हमें यह उठाना चादहए कक हम अपने ित्रुओंको अपने समान ऐसे लोगों के रूप में देखें जो िान्ति, सम्मानपूण सजीिन बबताने के शलए उत्सुक हैं। प्लेटो विदेशियों के बसाने या राकृतीकरण के विरुद्ध था और चाहता था, कक रत्येक विदेिी धम सऔर रथा राष्रमण्डल के बाहर ही रतखी जाए। यह दृक्ष्टकोण यूरोपीय विचारधारा पर सददयों तक छाया रहा। प्लेटो जो चाहता था, उसकी पूतत सकरने में इततहास असफल रहा है। क्जहाद की यह भिाना कक चाहे कुछ भी मूल्य देना पड़ेया चाहे जो भी पररणाम हों, हमें अपनी जीिन-रणाली का रसार करना ही चादहए, हमारी वििेर् सहायता नहींकरती। अतीत में जब रत्येक भागीदार अपने इस विश्िास में दृढ और सच्चा होता था कक अक्न्तम सत्य उसीके पास है और यदद लोग उससेशमन्न मत रखते ेहैं, तो यह दु:िीलिता के, बुरे धम सके कारण है, झगड़े दहंसा में बदल जाते ेथे। ऐसी िृवि के कारण ही सत्य के नाम पर सम्पीड़न िुरू हुआ। यूनानी और बबरस, यहूदी और जेण्ेटाइल (रततमा-पूजक), ग्रीक और ईसाई, ईसाई और मुसलमान, कैथोशलक और रोटेस्टेण्ट, शमत्र-राष्र एिं धुिीय िक्ततयााँ(जापान, इटली और जमनसी) -सभी अपने जीिन-माग सके अच्युत होनेके नाम पर, एक-दूसूरे से लड़ी हैं। नाटक चलता रहता है; किेल अशभनेता बदल जातेहैं। आज साम्यिाददयों और साम्यिाद- विरोगधयों के बीच संघर् सहै। इततहास नेरदशितस कर ददया है कक यूनानी और बबरस, यहूदी और जेण्टाइल, ईसाई और पैगन (काकफर), ईसाई और मुसलमान, रोटेस्टेण्ट और कैथोशलकों ने एक-दूसूरे को रभावित ककया है, एक-दूसूरे को मदद दी है और संसार को समृद्ध ककया है। काल का चि अपने आश्चय सभी लाता है। शमत्र एिं धुरी-राष्र, जो कुछ साल पहले ेइतनी भीर्णता के साथ एक-दूसूरे से लड़े, आज बड़े शमत्र हैं। विरोधी िक्ततयों के शलए यह आिश्यक नहीं है कक िान्तगचि होनेऔर एक-दूसूरे को समझनेके पहलेखून में नहाए।ााँ इततहस रदशितस करता है कक काल अनेक दूरू्णों को ठीक कर देता है और ऐसा मेल-जोल ला देता है जो पहले ेअसम्भि लगता था। काल की व्यागधहाररणी िक्तत, मानि-रकृतत का लचीलापन और सामाक्जक तथा राजनीततक संस्थाओं ंकी पररितनसिीलता ितमसान संघर्ों को दूरू करनेमें हमारी सहायता कर सकती है, पर यह तभी सम्भि है जब हम शसद्धान्त और आचरण में तनरंकुिता को दूरू रखें और सदहष्णु ुतथा लम्बेसमय तक कष्ट-सहन का साहस अपने में पैदा करें।

अब भी हम मनुष्य इततहास के रभात के रारक्म्भक काल में हैं। उस (मनुष्य) का सभ्य जीिन कदठनाई से दस हज़ार िर् सपुराना है और इस कालािगध में भी अनेक साम्राज्य और सभ्यताएाँ उददत और लुप्त हो गई हैं और हमें यह नहींसोचना चादहए कक हमारी सभ्यता मानिीय रज्ञा की अक्न्तम अशभव्यक्तत है। यदद यह विश्ि के नैततक िासन में विश्िास रखतेहैं, तो यह सभ्यता जीवित रहेगी, परन्तु तभी जब िह रेम और भ्रातृत्ि के शसद्धान्तों का पालन करे। यदद िह उनका पालन नहींकरती है तो नष्ट हो जाएगी। जब दारूबन्दी सशमतत के एक सदस्य ने अपनेअखबार में मद्य-सम्बन्धी विज्ञापन छापा तो गांधीजी ने पूछा- "आप यह तया कर रहे हैं?"

उसनेउिर ददया- "मुझे ेजीना भी है।" गांधीजी ने उिर ददया- "म ैंइसकी तो कोई आिश्यकता नहींदेखता।" इतने पर भी ककसी सभ्यता का जीवित रहना अतनिाय सनहीं है। मानि जातत के सदस्यों की हैशसयत से हमारा एक सितसनष्ठ उद्गम है और सितसनष्ठ ही लक्ष्य भी है। रत्येक राष्र विश्िका अंग है। गांधीजी ने कहा था- "इसशलए राष्रिाद के शलए मेरा रेम अथिा राष्रिाद की मेरी धारणा यह है कक मेरा दिे स्ितन्त्र हो ककन्तु यदद आिश्यकता पड़ेतो मानिता के जीती रहने के शलए सारा दिे मर जाए ।'' िास भौततक िेदना और मृतूयुतथा आध्याक्त्मक विजय का रतीक है। 'जो अपना जीिन खो देगा िही उसेपाएगा। िारीररक या भौततक जीिन जीनेके शलए हमें अपनेआध्याक्त्मक आदिों का वितनमय नहींकरना चादहए। कोदट-कोदट तनदोर् मानिों में मृतूयु एिं रोग का रसार करने की अपेक्षा मर जाना कहीं ंअगधक भव्य काय सहोगा। ककन्तु इसके विपरीत हम महत् ्धमों की शिक्षाओं को, जो हमसे अपनेित्रुओं के शलए क्षमादान, रेम और राथनसा की आिा करती हैं, ग्रहण कर लें तो हम एक ज़्यादा अच्छे विश्िकी नींि डालने में समथ सहोंगे।

िाक्न्त की स्थापना केिल बौद्गधक उपलक्धध नहीं है; यह नैततक एिं आध्याक्त्मक है। ितमसान समय में हमारे सामने, एक ओर रेडियो का काय सहै और दूसूरी ओर आणविक परीक्षण हैं। हम अपने िेिाशसयों को रेम-अदहंसा का सन्दिे देते ेहैं और उसी समय ऐसेभीर्ण औज़ार तैयार कर रहे होते ेहैं जो मृतूयु और विनाि ले आते े हैं। हम लोगों को विभाक्जत उिरागधकार रदान करते ेहैं। हम युद्ध जारी कर सकतेह।ैं तया हम िाक्न्त भी स्थावपत कर सकते हैं ? हााँ, यदद हम अपनेहृदयों के विभाजन पर तनयन्त्रण स्थावपत कर लें। हम भ्रशमत मनों, अिान्त हृदयों और रुग्ण आत्माओं के कारण कष्ट भोगते ेह।ैं जब तक हम इस बन्धन से, इस भ्रष्टता से, हमारी आत्मा के इस विभाजन से मुतत नहींहो जाते,े हमें कराहना और तड़पना पड़ेगा।

रथम विश्ियुद्ध के समय, जब चच सके नेतागण तरुणों को सेना में भिरि करने के शलए समझा रहे थे, दरतनटी कॉलेजे, कैक्म्ब्रज के रोफेसर और आंग्ल दाितसनकों में श्रेष्ठ जी० ई० मूर ने सुझाि ददया कक 'दरतनटी में गगरजाघर की राथनसाए,ाँ िन्द कर दी जाए ाँतयोंकक 'अपने ित्रुओंको प्यार करो' िाला शसद्धान्त विध्िसंकारी है।' प्लेटों के िाटो के अनुसार सुकरात कहता है : "हमें अन्याय हगगज़स नहींकरना चादहए, न ककसी के साथ हमें बुराई ही करनी चादहए, भलेही उसकी बुराई के कारण हम पीडड़त हुए हों।" दहन्दू ूएिं बौद्ध, यहूदी और जरथुस्त्री, ईसाई और मुसलमान, अपनेसिोिम रूप में, करुणा की शिक्षा देते ेहैं और यह शिक्षा हमारी उस समाज-व्यिस्था के विरुद्ध है क्जसका विश्िास है कक राष्रीय सुरक्षा के शलए सैन्यबल का विपुल संग्रह ककया जाना चादहए। इस दुतुनया में जो कुछ होता है िह हमारी आत्माओं में जो कुछ होता है, उसका रततबबम्ब है। हममें से रत्येक के शलए दो सम्भािनाए ाँहैं-एक कल्याण की, िुभ की; दूसूरी बुराई की, अिुभ की। हमें रचनात्मक पक्ष का विकास करना चादहए। मनुष्य का जन्म इसशलए नहीं ंहुआ कक अपना और दूसूरों का विनाि करे। जीिन की रक्षा करना उसे े विनष्ट करने से अगधक रोमांचकारी है। िताक्धदयों से ऋवर्गण हमसे रेम करने की आिश्यकता के विर्य में कहते ेरहे हैं। रेम आत्मा का स्िास्थ्य है, उसका सौंदय सऔर ऐश्िय सहै। घृणाा आत्मा की व्यागध, उसकी विकृतत तथा दुिलसता है। हम घृणाा और ईष्या सके बबना, झूठी अशभलार्ाओंके बबना, उच्च िेदापूण सरततयोगगताओंके बबना और सिा के रलोभनों का दास िने विना जी सकतेहैं। इसके शलए एक नूतन जीिन-रणाली की आिश्यकता

 है-रणाली, जो विश्[की जाततयों को शमलाएगी, विभाक्जत नहींकरेगी। सभी दिेों में

ऐसे स्त्री-पुरुर् हैं, जो उच्च
अशभराय के इस दुस्ुसाहशसक रयास में भाग लेनेके शलए तैयैार हैं।

तिमसान समय मानि जातत के इततहास में तनणायसक महत्त्[का है। हम एक नूतन युग के आरम्भ में हैं।
तनरािा की आिश्यकता नहीं है। यह िाि और कदठन काय सका समय है। हममें से रत्येक को देखना चादहए कक
उसका रभाि भले के शलए पड़ता है। यह तभी सम्भि है, जब हम अपनी पुनरसचना करें। हमनेपंचिील के विर्य में
बहुुत कुछ सुना है। मूल पंचिीलि आत्म-पररष्कार एिंआत्म-परिितनस का उल्लेखे करता है :

1. रथम है-अदहंसां अथिा जिीन के रतत श्रद्धा और साथी मानिों के रतत सम्मान। हमें जान-बूझकर िोक और
देिना नहीं ंलादनी चादहए। हमें अनािश्यक रूप से ककसी जीवित राणी के राण नहींलेने चादहए।

2. दूसूरा है-अलोभ। हमें दूसूरों की सम्पवि के रतत लोभी नहींहोना चादहए। हमें सिा के रेम की ओर नहीं ं
आकविर्तस होना चादहए। इंजील-लेखक हमें बताता है कक ककस रकार िैतान उसे ेएक बहुुत ही ऊँचे पितस-श्रृंग पर ले
जाता है और विश्[के सभी राज्य ददखाता तथा उनकी समृद्ध्गध और मदहमा पर रकाि डालता है। इसके बाद
उससेकहता है : "ये सब िस्तुएँ म ैंतुझे ेदूँगा, यदद तू झुकुकर मेरी पूजा करेगा।" तब जीसस उससेकहता है : "यहा ाँ
से भाग जा ओ िैतान ! तयोंकक हमारे यहा ाँशलखा है-'तू अपने ईश्[र रभु की उपासना करेगा और केिल उसी की
सेिा करेगा।'"

3. तीसरा-ब्रह्मचय सया आत्म-तनयन्त्रण है। हम दूसूरों पर तब तक िासन नहींकर सकते, जब तक हम अपनेपर
िासन करना न सीख लें। ब्रह्मचय सन्तुशलत दृक्ष्ट राप्त करना है। इस संकट जाल में एक खतरा है-न जानेतया
हो, इसके िातोन्मादक भय से आच्छाददत हो जाना, उसकी पकड़ में आ जाना। पुरातन सम्मतत है: "देख, कक तू
परेिान न हो, अनािश्यक रूप से उिेक्जत न हो।" हमें िाक्न्त का उपाजनस करने को कहा जाता है-सौम्य, िान्त
और सन्तुशलत मानस िालेमानि की िाक्न्त ।

4. चौथा है-सत्य िचन। हमें सिाधाररयों को खुि करनेके शलए भी सत्य से नहीं ंहटना चादहए। हमें भय-रदहत
होकर, दिेर्हीन होकर सत्य बोलना चादहए और उन लोगों के सामनेभी कहना चादहए जो उसे ेसुनना नहींचाहते।
यदद हमारी सरकार कुछ गलती करती है, तो हमें उसे ेस्[ीकार करने को तैयार रहना चादहए। विज्ञान सत्य का
अनासतत अन्िेर्ण है। दुभााग्यिि की बात है कक विज्ञान का अन्िेर्ण, आज क्जस दुतुनया में हम रहते ेहैं उसके ढाचोँ े
के विर्य में ज्यादा जानने की आकांक्षा का पररणाम नहीं है बक्ल्क इस भय की उपज है कक अन्य देि हमसे आगे े
बढ जाएगोँ। िैज्ञातनक आविष्कारों को सैतैनक महत्त्[की सामग्री के रूप में देखा जाता है और विश्[-व्यापकता की
िैज्ञातनक परम्परा राष्रीय सुरक्षा के दहत के नीचे डाल दी जाती है। थूसीडाइड्स के अनुसार, पेरीतलीज ने मृतूयु-
समय की िततृता में कहा था: "हम अपना नगर संसार के शलए खोलते ेहैं, और ककसी विदेिी काय सके कारण
विदेशियों को शिक्षण एिं तनरीक्षण की सुविधा से िंचत नहींककया जाएगा: यद्यवप हमारे नागररकों की स्[देिी
भािना की अपेक्षो हमारी रणाली एिंनीतत में कम विश्[ास होनेके कारण, ककसी ित्रु ुकी आखेंाँ हमारी उदारता से

जब-तब लाभाक्न्ति होती रहेंगी।" इसी राण-भिाना से एक महान अमरीकी राष्रपतत ने घोवर्त ककया था कक तब तक भूल का दलन करने की आिश्यकता नहींहै जब तक सत्य उसका रततरोध करने के शलए स्तिन्त्र है।

5. अक्न्तम है-सुरा-पान तनर्ेध। इस सलाह में मतिादों और शसद्धान्तों से, जो भीर्ण विर् हैं, मुक्तत की बात भी तनदहत है। ि हमारे मानस को श्रृंखलाबद्ध करते ेहैं और हमें अस्स्थि तथा असन्तुशलत कर देते ेहैं। जैसे ेहम बच्चों को अफीम और मद्यसार नहींदेते,े उसी रकार हमें तरुणों को पक्षपातपूण,स संकीण सऔर रान्तीय पन्यों में शिक्षक्षत नहींकरना चादहए।

ये पंच शसद्धान्त हममें वििेके, विनम्रता और आत्मोसग सकी भिाना विकशसत करने के उद्देश्य से रखे े गए हैं। जीिन ििािादस बनेगा या अशभिप्त ? िह तया बनेगा, यह हम पर तनभरस करता है।

11. सह-अक्स्तत्ि

भारत एक भौगोशलक अशभव्यक्तत उतनी अगधक नहींहै क्जतनी कक िह मन की एक िृवि, एक ददिामान, एक विशिष्ट दृक्ष्टकोण है। लन्दन विश्िविद्यालय के रोफेसर चाइल्ड ने राचीन भारत के विर्य में शलखते ेहुए कहा है कक 3250 ईसापूि समें भारत ने एक ऐसी विशिष्ट सभ्यता, जीिन की ऐसी तनक्श्चत बुनािट के साथ शमस्र, बैबैबलोन का सामना ककया था जो आज तक जीवित है। उन्होंने कहा कक यही आधुतनक भारतीय सभ्यता का आधार है। आधुतनक यूनान राचीन यूनान से शभन्न है, आधुतनक शमस्र राचीन शमन्र से शभन्न है, ककन्तु आधुतुनक भारत, जहााँ तक दृक्ष्टकोण का सम्बन्ध है, मूल रूप से राचीन भारत से शभन्न नहींहै।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाइयों से जो ििेर् शमले ेहैं, उनमें शिि के आदद रूप की एक रततमा है, जो कमलासन पर, आखोँ बन्द ककए, ध्यान की मुद्रा में बैठी हुई है और उसके चतुददसक राणणज सृकूष्ट है। इसमें आपको िह आधारभूत दृक्ष्टकोण शमलता है क्जसने दिे के आध्याक्त्मक भू-दृश्य को आच्छन्न कर रतखा है।

आरम्भ से ही यह बात अनुभि की गई है कक जो ध्यान–क्तत से अपनी िासनाओं एिं मनिोगों पर रभुत् स्थावपत कर लेता है िह उस आदमी से बड़ा है जो संसार के युद्धों में विजय राप्त करने में समथ सहोता है। दूसूरे धिदों में, आत्म-विजय दिों पर विजय राप्त करने से अगधक महत्त्िपूण सहै। हमारा विश्िासि है कक सबसे बड़े विजयी िे हैं जो िारीररक बल का उपयोग ककए बबना ही अपनेित्रुओंको िीभूत कर लेते हैं।

राचीन काल से अपने समय तक हमें ध्यानमनन की यह रततमा बराबर शमलती है। आप इसे उपतनर्द् में पाएगें; आप इसे बुद्ध में पाएगें। बुद्ध की रततमाए ंहमें इस बात का संकेत करती हैंकक िह ककस रकार दुभािसना और धमान्सधता पर विजय राप्त कर सके थे। रत्येक पीढी और दि के रत्येक भाग ने ऐसे व्यक्तत पैदा ककए हैं क्जनमें इस आदि सने अितार शलया था।

हमारे शलए धम ससाम्रदातयक अनुरूपता या रीततगत पवित्रता उतना नहींहै, क्जतना िह हमारे स्िभाि का पुनपरसरितनस, हमारे व्यक्ततत्िका तनखार है जो हम हैं उसे कुछ और बनना है। यह जगत् के अक्न्तम रहस्य में भाग लेना है।

जब हम धम सको इस रकार के दृक्ष्टकोण से शमला देते हैं तो पाक्न्धक रततद्ंिद्विताए ंऔर मतिादी संघर् सहमारे शलए असम्बद्ध हो जाते हैं। तब से आज तक उस धाशमकस लक्ष्य की शसद्गध के शलए विशभन्न माग स स्िीकार ककए गए हैं जो हमारी िास्तविक रकृतत की पूतत सया तनष्पवि है। इसशलए एक िाक्न्तपूण,स सकिय, परस्पर-शिक्षारद सहअक्स्तत्ि तो हमारे साथ युगों सेलगा रहा है। जब यह कहा जाता है कक भारत एक धमतसनरपेक्ष राज्य है, तब इसका अथ सयह नहींहोता कक भारत भौततक युद्धों और विलाशसताओं की पूजा करता है या यह कक िह इस बात को मानने सेइन्कार करता है कक जो तनयम अिकाि एिं काल के भौततक जगत् को िाशसत करते हैं उनसे कहीं ऊाँचे विश्ि-तनयम भी हैं। इसका इतना ही अथ सहोता है कक िह ककसी विशिष्ट धम सके नाम पर नहींबोलता िरन् सब धमों के साथ तनष्पक्ष व्यिहार करता है तथा यह विश्िके धमों के सकिय सह-अक्स्तत्िके दिनस को ग्रहण करता है। धमतसनरपेक्ष राज्य का यही अथ सहै।

जब तक हम साम्रदातयक शसद्धान्तों को, सत्य के अक्न्तम िततव्य नहीं, परमात्मा की उपलक्धध के माग सके रूप में स्िीकार करेंगे, तब तक कोई संघर्,स झगड़ा या वििाद नहींहोगा। धाशमकस युद्ध तब खड़े होते हैं, जब हम मतग्रादहता की रिंसा करते और उसे अच्युत बताने लगतेहैं। आय सऔर द्रविड़ दहन्दू ूऔर बौद्ध क्जतनी भी रजाततया ंहमारे दि में आई हैं, िे सब सापेक्षक्षक दृक्ष्ट से कहें तो, एक सामूदहक ऐतय में संग्रगथत होती गई हैं।

और भी दृक्ष्टकोण हैं, जो हम तक चले आए हैं। यदद हम पक्श्चम की ओर रुख करते हैं तो हमें यूनानी और बबर के बीच का िह भेदे ददखाई पड़ता है क्जससे यूरोपीय इततहास का आरम्भ हुआ। िस्तुक्स्थतत यह थी कक यूनान ने बहुत कुछ शमन्न, बैबबलोन एिं ईरान के बबरस दिों से शलया। यदद हम एक कदम और आगे बढे तो देखेंगे कक जस्टीतनयन ने यह सोचकर एथेंस के विद्यालयों को बन्द कर ददया था कक यूनान और गैशलली एक साथ नहीं जी सकते; ककन्तु हम जानते हैं कक यूनान ने ख्रीष्टीय धम सके इततहास में रिेि पाया है। आगस्टाइन प्लेटो और

प्लादटनस से पररपूण सहै; एक्तिनास अरस्तू से भरा हुआ है। कफर जब हम ि्रूसेड्स (खीष्टीय क्जहादी युद्ध) तक पहुुँचते हैं तो हमें यह या िह दिनस शमलता है; या तो िास (ख्रीष्टीय धमगसचह्न) या िीसेण्ेट िा बालेन्दु ु(इस्लाम का धमगसचह्न)। हमनेआविष्कार ककया है कक िास या ि्रूस और िीसेण्ट एक-दूसूरे को शिक्षा देते ेहुए साथ-साथ रह सकते हैं। आधुतनक यूरोपीय ररनेसां ंउस रकिा-ज्ञान का फल है जो महत् ्यूनानी ग्रन्थों के अरब अनिुादकों द्िारा यूरोप पहुुँचा और इन एिरोज़ तथा एबबसेन्ना नामक धमिसाक्स्त्रयों की खीष्टीय गचन्तन के विकास में बड़ी देन है। हमनेकैथोशलक और रोटेस्टेण्ट सम्प्रदायों में िताक्धदयों तक संघर् सचलते ेदेखे। कफर कभी एक, कभी दूसूरा विचार बना रहा। हम अब देखते हैं कक कैथोशलक और रोटेस्टेण्ट साथ-साथ रह सकते हैं; एक-दूसूरे के सहायक हो सकते हैं और एक-दूसूरे को शिक्षा दे सकते हैं। आज दो समूहों में, दो दलों में संघर् सहै परन्तु अब हम सकिय सह-अक्स्तत् की नीतत अपनानेकी सोच रहे हैं। जब इस या उस-यह रहे या िह रहे-की परम्परा ने संसार में लड़ाई-झगड़ों को जन्म ददया है तब यह और िह की परम्परा संसार के राष्रों के ज़ख्मों को भरने का काम करेगी। 'यह या िह' की परम्परा साम्प्रदातयक अपिजकसता की स्िीकृतत के फलस्िरूप तनकली है-इस गि ससे कक हम सत्य तक पहुुँच गए हैं और हमनेउसे ेपा शलया है तथा हमारे शलए यह ज़रूरी है कक क्जन्होंने उस सत्य को नहीं ं पाया है, उनके बीच के अन्धकार को दूरू करें।

इस और उसका दिनस कहता है कक ककसी भी दिे या जातत में ईश्िर ने अपने को, साक्ष्य के बबना नहीं ं रहने ददया है। िे सब ईश्िर के रेम की कियािीलता के साक्ष्य के साथ खड़े ेहोंगे। ऐसी कोई जातत नहींहै, जो इस जगत् ्में अनाथ या तनरिलम्ब छोड़ दी गई हो। कुरान कहता है 'हर जातत में हमनेउन्हें ईश्िरोपासना शसखाने के शलए एक सन्दिेिाहक भेजा है।' इसशलए यदद हम परमात्मा की सिव्सयापकता की नीतत को अपनाते ेहैं तो उससे सकिय सहअक्स्तत् का तत्त्िज्ञान अपने-आप तनकल आता है।

आज हम इस अथिा उसकी नीतत के अवििेक का अनुभि कर रहे हैं। कभी ऐसा समय था कक हम अपने विचारों को सैतनक उपायों सेसफल कर लेते थे। िे ददन समाप्त हो गए हैं। आज हिाई बमिारी सैतनक और असैतनक में कोई भेद नहीं करती। एक ताप-नाशभकीय (आणविक) बमबारी राष्रों के बीच कोई भेदभाि नहीं ं करेगी। इसशलए हम ऐसी अिस्था में आ पहुुँचे हैं कक हमारे शलए एक बटन दबाकर सम्पूण समहाद्िीप को विनष्ट कर देना सम्भि हो गया है। इन विनािक अस्त्रों के विकास का नेतृत्ि जीतनेका रयत्न करके हम अपनेविचारों की कोई सहायता न कर पाएगेँ।े हमनेइसे ेखूब समझ शलया है कक हमें साथ जीना या साथ मरना है। और यदद हमें साथ-साथ जीना है तो हममें दूसूरों के विचारों के रतत सदहष्णुता होनी चादहए : धाशमकस सदहष्णुता, सैद्धाक्न्तक सदहष्णुता। ये चीजेंआत्म-रक्षण के शलए अतनिाय सहो उठी हैं। क्षमा ही अपनेसोच्च िक्तत-रूप में रेम है।

इसशलए यदद हम सकिय सह-अक्स्तत् के तत्त्िज्ञान को अपनाना चाहते हैं तो हमें अपनी यह आधारभूत िृवि, कक केिल हमीं ंरकिा के अगधपतत हैं और दूसूरे अंधंकार में भटक रहे हैं, त्यागनी होगी। भारत ने सह-अक्स्तत् की इस नीतत के कारण कष्ट झेला है ककन्तु उसकी परिाह नहींकरनी होगी।

ख्रीष्टीय धम सका महान् ्रतीक िूस (िास) है क्जस पर ईसा ने आध्याक्त्मक विजय के शलए भौततक पराजय भोगी। यदद हम अनुभि करते ेहैं कक हम ठीक रास्ते पर हैं तो हमारे शलए यह िृवृि धारण करना आिश्यक है कक हम सफलता की आिा से नहीं, बक्ल्क इसशलए िैसा कर रहे हैं कक िही ठीक है।

मुझेइसमें सन्देह नहींहै कक क्जस तत्त्िज्ञान-दिनस-का इस दे पर रभुत्ि है, िह ऐसा दिनस है जो उन्मूलन अथिा पाथतसय या आत्मसाक्षात्करण में से ककसी एक में विश्िास नहींकरता ककन्तु िह रजाततगत सामञ्जस्य में विश्िास रखता है और यदद रजाततगत सामञ्जस्य की रततष्ठा करनी है तो जीिन के सम्बन्ध में हमारा दृक्ष्टकोण दूसूरा होना चादहए। हमें रत्येक व्यक्तत का सम्मान करना चादहए। सम्भि है, िह उतना बड़ा न हो क्जतने हम हैं; हो सकता है कक उसके पास बौद्धधक उपलक्धधयाँ या िैक्षणणक रततभा या विविाल अनुभि न हो, जो हममें से कुछ रखने ेका दािा करते ेहैंककन्तु इसका यह अथ सतो नहीं ंहै कक सामान्य जनता की अककक्ल्पत सम्भािनाओंएिं सामयों की पूरी खोज की जा चुकी है। ऐसा बहुुत कुछ है जो हमारे शलए अज्ञात है और आगे ेबाहर आ सकता है।

म ैंआिा करता हूूँ कक भारत ऐसे ेदिनस को अंगीकार करेगा जो कहता है : 'परमात्मा पूणतसम ऊँचाई तक विकशसत करने में हर एक ही सहायता कर रहा है और यह हमारा कतव्सय है कक हम ऐसा िातािरण और पररक्स्थततयाँतैयार कर दें कक रत्येक व्यक्तत को अगधकतम ऊँचाई तक उगनेमें सहायता शमले।' सब शमलाकर संसार सह-अक्स्तत्ि के दिनस की मागँ कर रहा है-सह-अक्स्तत्ि जो केिल तनक्ष्रिय, तनरपेक्ष अक्स्तत्ि न हो िरन् ् सकिय, पारस्पररक, शिक्षारद, सहअक्स्तत्ि हो।

राजनीततक समस्याओं के सैतनक समाधान ककसी भी काम के नहींहैं-तनरथकस हैं। अन्त में िे पीछे कटुता ही छोड़ जाएगेँ। राजनीततक समस्याओंके शलए राजनीततक समाधान ही ढूूँढनेहोंगे,े और म ैंआिा करता हूूँ कक जो इस दे में सिा- धारी हैं िे रजाततगत सामञ्जस्य के शलए काम करेंगे।

000

डॉ.एस. राधाकृष्णन

डॉ. राधाकृष्णन एक महान दिातसनक और विचारक थे। भारतीय संस्कृतत के ि मूधन्सय व्याख्याता तथा उसके समथकस थे। भारतीय संस्कृतत का िास्तविक स्रूप उन्होंनेविश्िके सामने रस्तुत करने का रयत्न ककया। भारतीय संस्कृतत की रमुख विेर्ता यह है कक िह मानि के उद्बोधन का माग सरिस्त करती है।

भारतीय संस्कृतत धम सको जिीन से अलग करनेकी बात नहींमानती, अवपतु िह मानती है कक धम सही जिीन की ओर लेजानेिाला माग सहै और उसे बताती है कक उससे ककसी को भयभीत होनेकी आिश्यकता नहीं ं तयोंकक मानि क्जन विचारों सेभयभीत होता है, ि तो स्ियं उसके अन्तर में तछपे हुए हैं। मानि को उन्हींपर विजय राप्त करनी है।

भारतीय संस्कृतत यह भी नहींकहती कक मानि की महिा कभी न गगरने में है, िरन् ्मानि की महिा इस बात में है कक िह गगरनेपर भी उठकर खड़ा होनेमें समथ सहै। उसकी महानता इस बात से आकी जाती है कक िह अपनी दुबुलसताओं पर रभुत् पाने में कहां ंतक समथ सहै।